ॐ श्री गणेशाय नमः

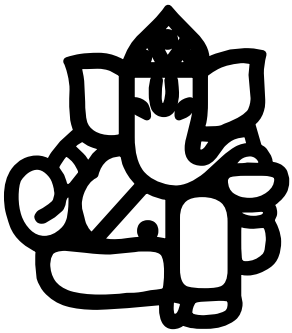

Horoscope of **Hindi Sample**
Prepared using **Astro-Vision LifeSign** Software.
Licensee: Dr. Ramesh Thangavel, PhD

~~~
~~~

नाम : Hindi Sample [पुरुष]

सप्ताह के दिन में। : शुक्रवार (आपका जन्म शनिवार को सूर्योदय के पहले हुआ था. ज्योतिष शास्त् के अनुसार दिन की शुरुवात सूर्योदय के बाद ही होती है. इसलिए आपकी जन्म तिथि शुक्रवार को माना जायेगा.)

शुक्रवार में जन्म लेने के कारण आपको सफेद और ललति रंग के वस्त्रों और चीजों से अभिरुचि होगा । भूसंम्पति और खेंती से आपको प्राकृतिक आकषर्ण होगा । दुसरों के दुःख को समझकर उसमें शमिल होने के लिए आप तैयार होगों ।

जन्म नक्षत्र : मघा

जन्म नक्षत्र मघा है। आपके जीवन में सामान्य प्रगति होती रहेगी। आप स्वस्थ और शान्त हैं। विज्ञान तथा तकनीकी किसी भी विषय में विज्ञ तथा सामाजिक कार्यों में कुशल होंगे। आप परंपरा पर विश्वास करनेवाले, सच्चे तथा भविष्य दृष्टा बनेंगे। आप दृढ़ एवं आदर्शवान होंगे। सच्चाई और शील आपके आभूषण हैं। आप दूसरों के लिए सब कुछ करने को तैयार रहेंगे। यह आश्चर्य की बात होगी कि आपके कई शत्रु भी हो सकते हैं। आप अपनी इच्छा के अनुसार सभी कार्य करने की शक्ति रखनेवाले हैं। इससे दूसरों की सहायता की बड़ी आवश्यकता नहीं होगी। आप अपने संबन्धियों तथा मित्रों से विशेष प्यार रखते हैं। आपके असाधारण योग्यता के कारण अधिकार शक्ति प्राप्त करेंगे। एक पिता के तौर पर सन्तानों के प्रश्नों का सामना करना पड़ेगा। हर समस्या के प्रति धीरज और स्वस्थता से निराकरण करने में समर्थ है। आप शालीनता और धार्मिक जागृति धारण करने वाले हैं। आप किसी पर उपकार करेंगे तो बदले में अपकार ही प्राप्त होगा। उच्च स्थान प्राप्त होने पर अपनी कार्यशक्ति के माध्यम से श्रेष्ठ तरीके से कार्य सुशोभित करने वाले हैं। आप सौन्दर्य और कला के उपासक हैं। आपका प्रगति दूसरों में ईर्ष्या जागृत करेगा। आपकी सभी इच्छायें फलित न हो पायेंगा। इसलिए दुःखी होना भी व्यर्थ होगा।

नेत्र या चर्मरोग से सतर्क रहना लाभप्रद होगा। अर्धांगिनी (पत्नी) पर हुकूमत करने की आदत पर अंकुश लगायें, तब ही घर में स्वर्ग सा सुख भोग पायेंगे। शरीर अधिक स्थूल न हो, इस बात को सदा याद रखें। घर-बाहर चोरी से होने वाली हानि से सावधान रहें। गुरुजनों का आशीर्वाद सदा प्राप्त होगा। मघा गंडमूल संज्ञक नक्षत्र है। अशुभ फलों से बचने के लिए इसकी शान्ति करने की परम्परा है।

तिथि : दसमि

दशमी तिथि में जन्म होने से आप की विशाल मानसिकता प्रशंसनीय होगी। बहुत छोटी आयु से इस कला को हस्तगत करने में बड़ी कीर्ति प्राप्त होगी। आप शान्त भाव धारण करने वाले हैं। आप गंभीर मुखभाव धारण करने वाले हैं। आप अपनी संपन्नता दूसरों को दिखाने में रुचि नहीं रखते। आप स्वगृह और स्वसमुदाय के बीच स्नेह संपन्नता प्राप्त करेंगे। आप आमोद प्रमोद के बड़े पुजारी हैं। आप उदार हृदय, अत्यन्त नम्र व्यवहार वाले और कामी होंगे।

करण : हाथी

क्योंकि आपने गरा करना में जन्म लिया है आपको अच्छे भोजनों से रुचि होगो । जो भोजन आपके स्वास्थ के लिए आच्छा और मजबूत हो उस भोजन को आप पसन्द करते है । अपने दोस्तों के मुसीबतों की चर्चा करना आप पसन्द करते है । आपके विचारों को हमेशा फल प्राप्ति होगा ।

नित्ययोग : वृध्धि

आप का जन्म वृद्धि नित्ययोग में हुआ है। आपकी बुद्धि तेज़ है और सभी कार्यों को सूक्ष्मरूप से समझने की शक्ति उपलब्ध है। बचपन में आपको जो अवसर प्राप्त हुए और जो परिस्थिति प्राप्त हुई उसके अनुसार आपका भविष्य निर्माण होगा। अपना परिवार ही आपकी संपत्ति

होगी। इस कारण सुरक्षित और सुखमय भविष्य के निर्माण के लिए बचपन से ही परिश्रम करना लाभदायी हो सकता है। अतः व्यापार से ही धनी बनने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

नाम	: Hindi Sample
लिंग	: पुरुष
जन्म तिथि	: 24 अप्रेल, 2010 शनिवार
जन्म समय (Hr.Min.Sec)	: 05:10:00 AM Standard Time
समय मेखल (Hrs.Mins)	: 05:30 ग्रीनवीच रेखा के पूर्व
जन्म स्थल	: Mumbai
रेखांश & अक्षांश (Deg.Mins)	: 72.51 पूरब , 19.1 उत्तर दिशा
अयनांश	: चित्रपक्ष = 24 डिग्रि. 0 मिनिट. 19 सेकेन्ड.
जन्म नक्षत्र - नक्षत्र पद	: **मघा** - 3
जन्म राशी - राशी का देव	: **सिंह** - रवि
लग्न - लग्न का देव	: मीन - गुरु
तिथि	: दसमि, शुक्लपक्ष
सूर्योदय	: 06:15 AM Standard Time
सूर्योस्त	: 06:58 PM " "
दिनामान (Hrs. Mins)	: 12.43
दिनामान (Nazhika.Vinazhika)	: 31.48
प्रादेशिक समय	: Standard Time - 39 Min.
ज्योतिष शास्त्र के अनुसार जन्म तिथि	: शुक्रवार
कलिदिना	: 1866844
दशा पद्धति	: विमशोत्तरी पद्धति, साल = 365.25 दिन
नक्षत्र का देव	: केतु
गणम्, योनी, जानवर	: असुर, पुरुष, चूहा
पक्षी, पेड	: महोक, वट वृक्ष
चन्द्र अवस्था	: 9 / 12
चन्द्र वेला	: 25 / 36
चन्द्र क्रिया	: 42 / 60
ठगड़ा राशी	: सिंह,वृशचिक
करण	: हाथी
नित्ययोग	: वृध्धि
सूर्य का राशी - नक्षत्र का स्थान	: मेष - अशविनि
अनगदित्य का स्था	: पेट
Zodiac sign (Western System)	: Taurus
योगी पोयन्ट - योगी नक्षत्र	: 232:10:50 - ज्येष्ठ
योगी गृह	: बुध
द्वगुणति योगी	: मंगल
अवयोगी नक्षत्र - गृह	: धनिष्ठ - मंगल
आत्म करक - करकांसा	: गुरु - मिथुन
अमत्य करक (मन / ज्ञानशक्ति)	: बुध
लग्न अरुढ़ा (पाठा) तनु	: मकर
धन अरुढ़ा	: तुला

गृहों का रेखांश

गृहों का रेखांश पश्चमी पद्धती के प्रकार दिया गया है। जिसमें युरानस, नेपट्यून और प्लूटो भी शामील किया गया है।

पाश्चात्य पद्धति के अनुसार राशिचक्र में आप का राशी - वृषभ

गृह	रेखांश डि : मि :से	गृह	रेखांश डि : मि :से
लग्न	12:27:22	गुरु	352:20:27
चन्द्र	153:9:7	शनि	178:56:7 रितु
रवि	33:42:20	युरेनस	358:37:32
बुध	41:5:51 रितु	नेप्टयून	328:19:7
शुक्र	58:30:25	प्लूटो	275:20:47 रितु
मंगल	129:46:22	नोड	285:39:7

गृहों का निरायन रेखांश भारतीय ज्योतिष शास्त्र के आधार पर किया गया है। यह ऊपर बताई गई 'शयन मूल्यों' के आधार पर की गई है।

गृहों का निरायन रेखांश

गृहों के निरायन रेखांश पर भारत के ज्यातिष शास्त्र की नीव डाली गई है। यह शयन रेखांश के मूल्य से (गुणांक से) अयनांश मूल्य को कम करने से प्राप्त होता है।

अयनांश की गणना अलग - अलग पद्धती से की जाती है। उनके प्रकार और आधार नीचे बताये गये है:
चित्रपक्ष = 24डिग्रि.0 मिनिट.18 सेकेन्ड.

गृह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
लग्न	348:27:3	मीन	18:27:3	रेवत्ति	1
चन्द्र	129:8:48	सिंह	9:8:48	मघा	3
रवि	9:42:1	मेष	9:42:1	अशविनि	3
बुध	17:5:32	मेष	17:5:32रितु	भरणी	2
शुक्र	34:30:6	वृषभ	4:30:6	कृत्तिका	3
मंगल	105:46:3	कर्क	15:46:3	पुष्य	4
गुरु	328:20:8	कुंम्भ	28:20:8	पूर्व भद्रपाढा	3
शनि	154:55:48	कन्या	4:55:48रितु	उत्तर फालगुनी	3
राहु	261:38:49	धनु	21:38:49	पूर्वषाढा	3
केतु	81:38:49	मिथुन	21:38:49	पुर्नवासु	1
गुलिक	285:20:14	मकर	15:20:14	श्रावण	2

नक्षत्र का स्वामी / उप स्वामी / उप उप स्वामी

गृह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
लग्न	रेवत्ति	बुध	बुध	शनि
चन्द्र	मघा	केतु	गुरु	राहु
रवि	अशविनि	केतु	शनि	बुध
बुध	भरणी	शुक्र	चन्द्र	केतु
शुक्र	कृत्तिका	रवि	शनि	मंगल
मंगल	पुष्य	शनि	गुरु	शुक्र
गुरु	पूर्व भद्रपाढा	गुरु	शुक्र	बुध
शनि	उत्तर फालगुनी	रवि	शनि	गुरु
राहु	पूर्वषाढा	शुक्र	गुरु	राहु
केतु	पुर्नवासु	गुरु	गुरु	राहु
गुलिक	श्रावण	चन्द्र	गुरु	मंगल

निरायन संक्षिप्त (डिग्रि. मिनिट. सेकेन्ड.)

गृह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद	गृह	राशी	रेखांश	नक्षत्र/पद
लग्न	मीन	18:27:3	रेवत्ति / 1	गुरु	कुंम्भ	28:20:8	पूर्व भद्रपाढा / 3
चन्द्र	सिंह	9:8:48	मघा / 3	शनि	कन्या	4:55:48R	उत्तर फालगुनी / 3
रवि	मेष	9:42:1	अशविनि / 3	राहु	धनु	21:38:49	पूर्वषाढा / 3
बुध	मेष	17:5:32R	भरणी / 2	केतु	मिथुन	21:38:49	पुर्नवासु / 1
शुक्र	वृषभ	4:30:6	कृत्तिका / 3	गुलिक	मकर	15:20:14	श्रावण / 2
मंगल	कर्क	15:46:3	पुष्य / 4				

राशी

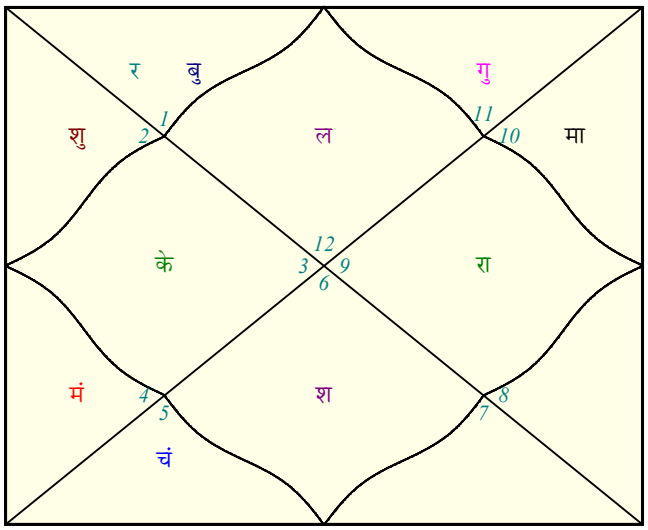

नवांश

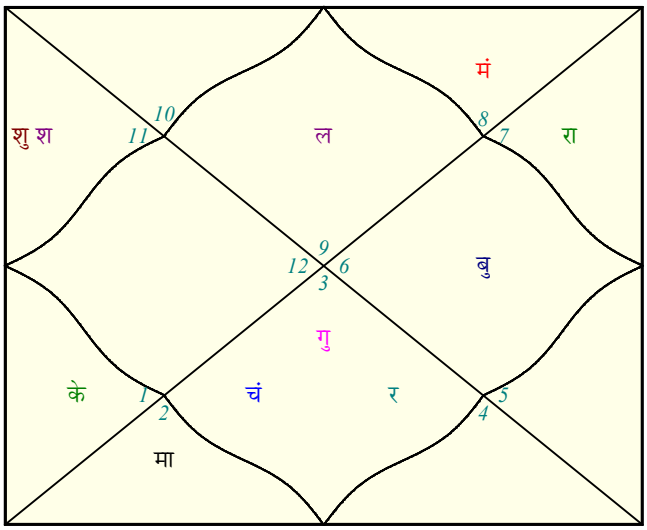

जन्म के समय दशा की समतुलना = केतु 2 साल, 2 महीने, 11 दिन

विशिष्ट राशी चक्र

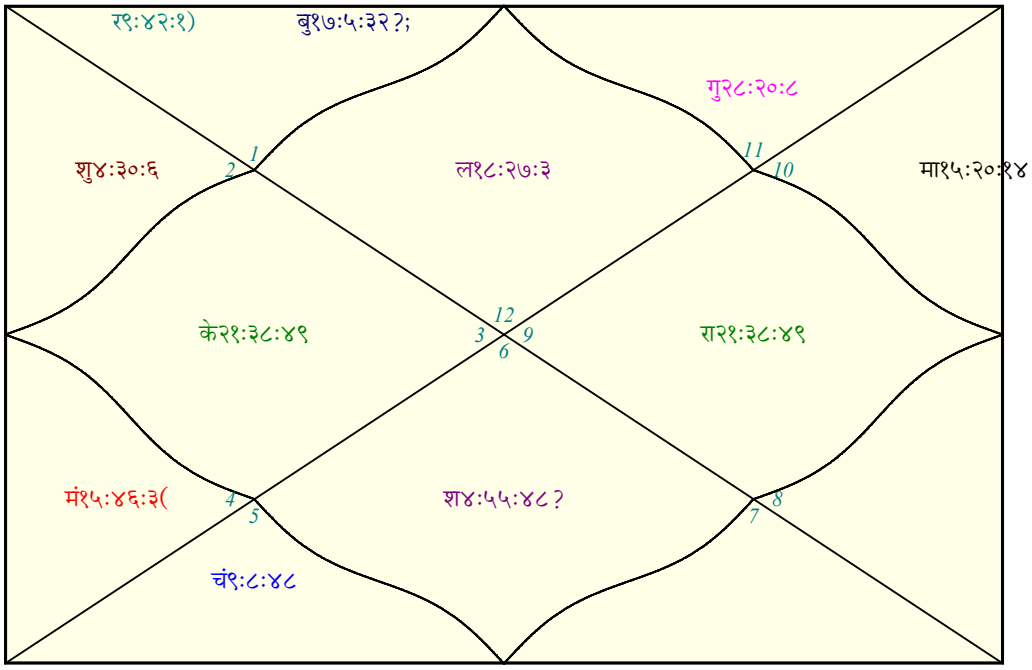

? विपरीत परिस्थिती) श्रेष्ट समय (क्षीण परिस्थिती ; सयहोग

नवांश: चं::मिथुन र::मिथुन बु::कन्या शु::कुंम्भ मं::वृशचिक
गु::मिथुन श::कुंम्भ रा::तुला के::मेष ल::धनु मा::वृषभ

भाव कुंडली

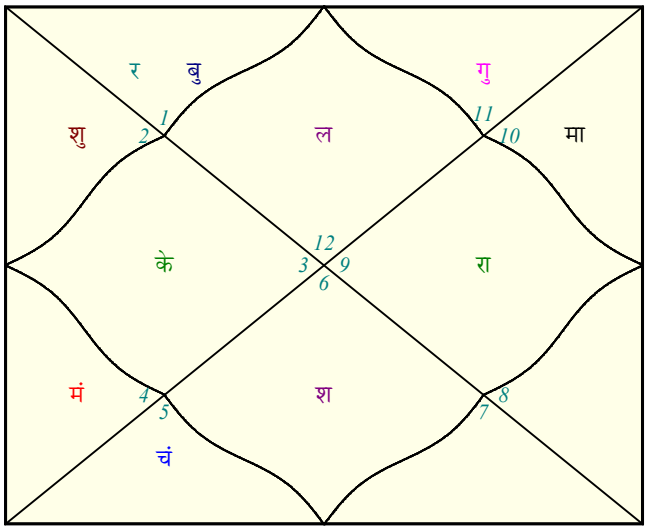

भाव टेबुल

भाव	आरंभ (प्रारंभ) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	मध्य (मध्य) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	अन्तिम (अंत) डिग्रि:मिनिट:सेकेन्ड	ग्रहों भाव में उपस्थित है
1	332:52:6	348:27:3	2:52:6	
2	2:52:6	17:17:9	31:42:12	र,बु
3	31:42:12	46:7:15	60:32:18	शु
4	60:32:18	74:57:21	90:32:18	के
5	90:32:18	106:7:15	121:42:12	मं
6	121:42:12	137:17:9	152:52:6	चं
7	152:52:6	168:27:3	182:52:6	श
8	182:52:6	197:17:9	211:42:12	
9	211:42:12	226:7:15	240:32:18	
10	240:32:18	254:57:21	270:32:18	रा
11	270:32:18	286:7:15	301:42:12	मा
12	301:42:12	317:17:9	332:52:6	गु

सुदर्शन चक्र

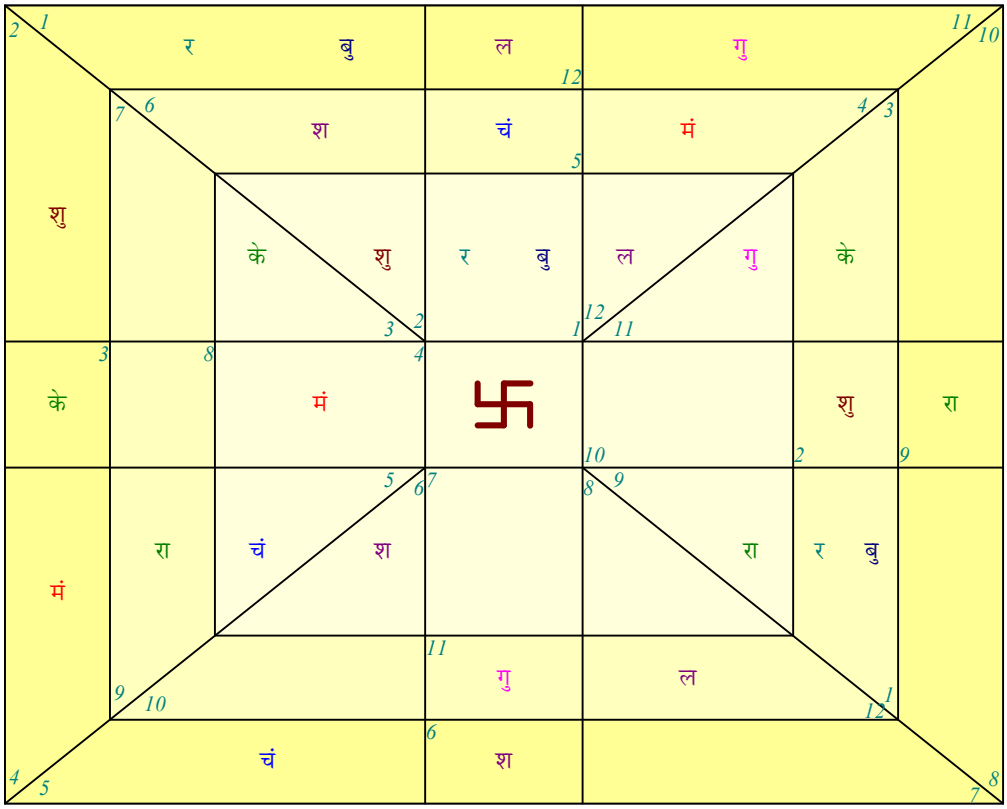

चं	=	चन्द्र	र	=	रवि	बु	=	बुध
शु	=	शुक्र	मं	=	मंगल	गु	=	गुरु
श	=	शनि	रा	=	राहु	के	=	केतु

उपग्रह

हर गृह की अपेक्षा उपगृह की भी गुणना की जाती है। चन्द्र, शुक्र, मंगल, राहु और केतु के उपगृह की गुणना सूर्य के रेखांश के आधार की जाती है। यह इस प्रकार है।

धुमीदी संग के उपग्रह

गृह	उपग्रह	गुणने की प्रक्रीया या पध्धती
मंगल	धूम	सूर्य का रेखांश + 133 डिग्रि. 20 मिनिट.
राहु	व्यथिपात	360 - धूम
चन्द्र	परिवेष	180 + व्यथिपात
शुक्र	इंद्रचाप	360 - परिवेष
केतु	उपकेतु	इंद्रचाप + 16 डिग्रि. 40 मिनिट.

सूर्य, बुध, गुरु, शनी के उपगृहों का तथा अन्य मंगल के उपग्रहों के गुणन का आधार रात और दिन के आठ समान काल में बाँटे गये विभाजन पर आधारीत रहा है।

प्रारंभ विभाग दिन के स्वामित्व के लिये रखा गया है जब की शेष भाग हप्ते के दिल के स्वामित्व के लिये उपयोग में लिया गया है। आठ विभाजन के अधिपती नहि रहे हैं।जन्म रात को हुवा हो तो आठ समभाग से सात विभाजीत भागों को गृहों का स्वामी स्थान दिया गया है। यह सप्ताह के पाँचवे दिनसे गिना जाता है।

रेखांश की गिनती केलिये दो अलग-अलग पध्धतियों का आविश्कार किया गया है।प्रथम पध्धति के अनुसार, प्रारंभ समय काल (गृहों के स्वामी) गृहाधीपती के अधिन रहता है। दूसरी पध्धति के अनुसार काल के अंतिम चरण गृहाधीपती के आधिन रहता है।

जब गुलीक के हिसाव से देखों तो शनी के उपग्रह से एक तीसरी पध्धती का भी अनुसंधान किया गया जिससे रेखांश की गिनती की जाती है। यह नीचे दिये गये स्थाई उदयकाल पर निर्भर है।इस प्रकार गुणनफल जो भी प्राप्त हुआ है इसे 'एस्ट्रो विज़न' के पध्धती के अनुसार 'मांदी' कहा जाता है। जन्मपत्रिका मे मुख्य गृह और राशी चक्र के साथ दिया गया है।

दिन	दिन के समय जन्म	रात के वक्त जन्म
रविवार	26 गटि	10 गटि
सोमवार	22	6
मंगलवार	18	2
वुधवार	14	26
गुरुवार	10	22
शुक्रवार	6	18
शनिवार	2	14

गुलिकादी का समूह।

स्वीकार्य पध्धती : लग्न के प्रारंभकाल

गृह	उपग्रह	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय
रवि	काल	2:1:11	3:25:48
बुध	अर्धप्रहर	20:22:41	21:47:18
मंगल	मृत्यु	18:58:3	20:22:41
गुरु	यमकंठक	21:47:18	23:11:56
शनि	गुलिक	0:36:33	2:1:11

रेखांश उपगृह

उपग्रह	रेखांश डि : मि :से	राशी	राशी के रेखांश प्रकार डि : मि :से	नक्षत्र	पद
काल	290:2:48	मकर	20:2:48	श्रावण	4
अर्धप्रहर	209:17:21	तुला	29:17:21	विशखा	3
मृत्यु	190:4:29	तुला	10:4:29	स्वाति	2
यमकंठक	228:9:21	वृशचिक	18:9:21	ज्येष्ठ	1
गुलिक	267:34:22	धनु	27:34:22	उत्तरषाढा	1
परिवेष	36:57:58	वृषभ	6:57:58	कृत्तिका	4
इंद्रचाप	323:2:1	कुंम्भ	23:2:1	पूर्व भद्रपाढा	1
व्यथिपात	216:57:58	वृशचिक	6:57:58	अनुराधा	2
उपकेतु	339:42:1	मीन	9:42:1	उत्तर भद्रपाढा	2
धूम	143:2:1	सिंह	23:2:1	पूर्व फालगुनी	3

नक्षत्राधीपती / नक्षत्राधी सहपती / नक्षत्राधी अनुसहपती तथां उपग्रहों की नामावली।

उपग्रह	नक्षत्र	नक्षत्र का देव	उप स्वामी	उप उप स्वामी
काल	श्रावण	चन्द्र	केतु	राहु
अर्धप्रहर	विशखा	गुरु	रवि	बुध
मृत्यु	स्वाति	राहु	गुरु	मंगल
यमकंठक	ज्येष्ठ	बुध	बुध	गुरु
गुलिक	उत्तरषाढा	रवि	चन्द्र	राहु
परिवेष	कृत्तिका	रवि	बुध	शनि
इंद्रचाप	पूर्व भद्रपाढा	गुरु	शनि	चन्द्र
व्यथिपात	अनुराधा	शनि	बुध	गुरु
उपकेतु	उत्तर भद्रपाढा	शनि	शुक्र	शनि
धूम	पूर्व फालगुनी	शुक्र	शनि	रवि

उपग्रह राशी

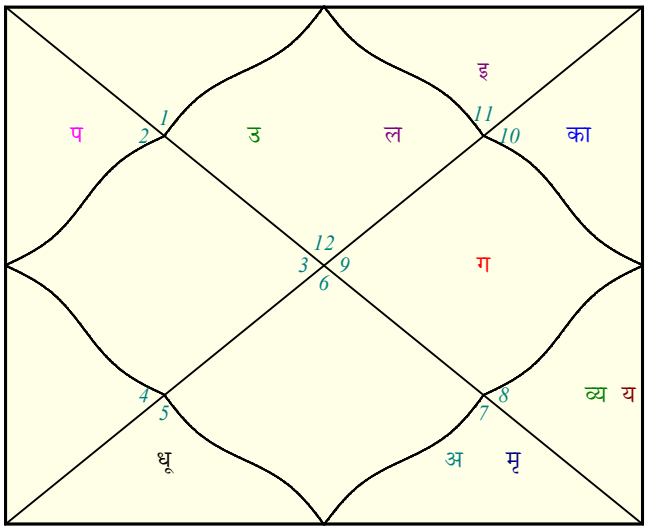

का	=	काल	अ	=	अर्धप्रहर
मृ	=	मृत्यु	य	=	यमकंठक
ग	=	गुलिक	प	=	परिवेष
इ	=	इंद्रचाप	व्य	=	व्यथिपात
उ	=	उपकेतु	धू	=	धूम

कराकास (जयमिनी सिस्टेम्म)

	कारक	गृह	
१	आत्म करक	गुरु	करकांसाः मिथुन
२	अमत्य करक (मन / ज्ञानशक्ति)	बुध	
३	भ्रात्रि (बाई / बहन)	मंगल	
४	मात्रि (माता)	रवि	
५	पुत्र (बच्चे)	चन्द्र	
६	ज्ञाति (रिशतेदार)	शनि	
७	दारा (पति या पत्नी)	शुक्र	

अरुढ़ /पाढ़ा

कोड	अरुढ़/पाढ़ा	राशी
P 1	लग्न अरुढ़ा (पाठा) तनु	मकर
P 2	धन अरुढ़ा	तुला
P 3	विक्रम /मात्रु पाढ़ा	वृषभ
P 4	मात्रु/सुख पाढ़ा	कुंम्भ
P 5	मंत्र/पुत्र पाढ़ा	कन्या
P 6	रोग/सात्रु पाढ़ा	धनु
P 7	धर/कलत्रा/स्त्री पाढ़ा	वृशचिक
P 8	मृत्यु/मरण/आयु पाढ़ा	धनु
P 9	पित्रु/भाग्य/धर्म पाढ़ा	मीन
P 10	कर्म/राज्य पाढ़ा	मेष
P 11	लाभ/आय पाढ़ा	वृषभ
P 12	व्याय/उपा पाढ़ा	मेष

अरुढ़ चक्र

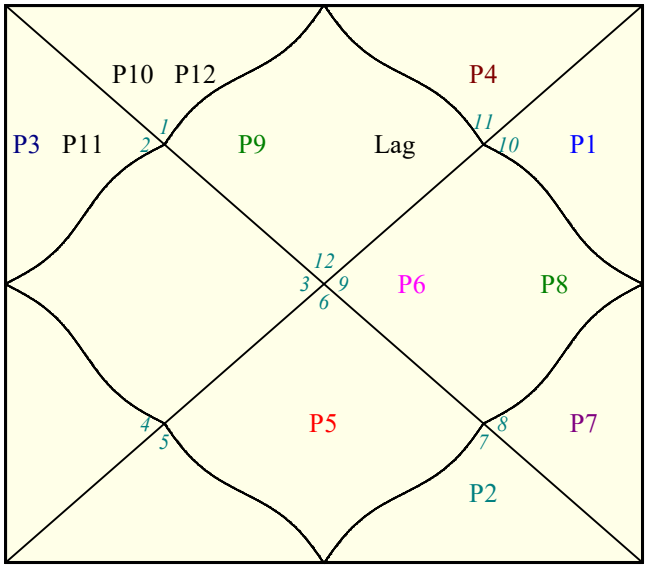

षोढसवर्गा टेबुल

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	12:	5	1	1	2:	4:	11	6:	9	3	10:
औरा	5	5	5	4:	4:	5	4:	4:	4:	4:	5
द्रिख्खन	4:	5	1	5	2:	8:	7	6:	5	11	2:
चतूथांश	6:	8:	4:	7	2:	10:	8:	6:	3	9	4:
सप्तांश	10:	7	3	4:	9	1	5	1	2:	8:	7
नवांश	9	3	3	6:	11	8:	3	11	7	1	2:
दशांश	2:	8:	4:	6:	11	5	8:	3	4:	10:	11
व्दादशांश	7	8:	4:	7	3	10:	10:	7	5	11	4:
सोडांश	6:	9	6:	10:	7	9	8:	11	8:	8:	9
विंशाम्स	5	3	7	12:	12:	11	3	8:	7	7	11
चतुर्विंशाम्स	6:	12:	12:	6:	7	4:	3	7	10:	10:	4:
भम्श	2:	9	9	4:	8:	12:	8:	8:	8:	2:	5
त्रिंमशांश	12:	11	11	9	2:	12:	7	2:	3	3	12:
खवेदांश	7	1	1	11	1	4:	2:	1	5	5	3
	12:	6:	3	2:	11	12:	11	4:	5	5	12:
शष्टियांश	12:	11	8:	11	11	11	7	3	4:	10:	4:
ओजराशी गणन	5	11	10	7	9	6	9	8	9	9	7

1-मेष 2-वृषभ 3-मिथुन 4-कर्क 5-सिंह 6-कन्या
7-तुला 8-वृशचिक 9-धनु 10-मकर 11-कुंम्भ 12-मीन

षोढसवर्गा अधिपति

	ल	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	रा	के	मा
राशी	गु	+र	+मं	=मं	^शु	+चं	=श	+बु	~गु	~बु	श
औरा	र	+र	^र	~चं	~चं	+र	+चं	~चं	=चं	=चं	र
द्रिख्खन	चं	+र	+मं	+र	^शु	^मं	~शु	+बु	~र	~श	शु
चतूथांश	बु	=मं	+चं	+शु	^शु	=श	+मं	+बु	+बु	+गु	चं
सप्तांश	श	=शु	=बु	~चं	=गु	^मं	+र	~मं	+शु	+मं	शु
नवांश	गु	+बु	=बु	^बु	+श	^मं	~बु	^श	+शु	+मं	शु
दशांश	शु	=मं	+चं	^बु	+श	+र	+मं	+बु	=चं	~श	श
व्दादशांश	शु	=मं	+चं	+शु	+बु	=श	=श	+शु	~र	~श	चं
सोडांश	बु	=गु	=बु	=श	^शु	+गु	+मं	^श	=मं	+मं	गु
विंशाम्स	र	+बु	~शु	=गु	=गु	=श	~बु	~मं	+शु	=शु	श
चतुर्विंशाम्स	बु	=गु	+गु	^बु	^शु	+चं	~बु	+शु	+श	~श	चं
भम्श	शु	=गु	+गु	~चं	=मं	+गु	+मं	~मं	=मं	=शु	र
त्रिंमशांश	गु	=श	~श	=गु	^शु	+गु	~शु	+शु	+बु	~बु	गु
खवेदांश	शु	=मं	+मं	=श	=मं	+चं	~शु	~मं	~र	+र	बु
	गु	+बु	=बु	+शु	+श	+गु	=श	~चं	~र	+र	गु
शष्टियांश	गु	=श	+मं	=श	+श	=श	~शु	+बु	=चं	~श	चं

^ अपना वर्ग + क्रद्धत्ङ्दड्डुथ्ऱ = निश्पक्षीय ~ शत्रु

वर्गा भेढ

स्वावर्ग और उच्च वर्ग के लिए पोयन्ट्ट दिया जाता है ।

गृहों	षढ़वर्ग	सप्तवर्गा	दाशवर्ग	षोढ़सवर्ग
चन्द्र	0-	0-	0-	0-
रवि	3-व्यजनांमस	3-व्यजनांमस	3-उत्तमामस	4-नागपुष्पाम्स
बुध	1-...	1-...	2-पारिजातांस	3-कुसुमाम्स
शुक्र	3-व्यजनांमस	3-व्यजनांमस	4-गेपुराम्स	7-कल्पकवृक्षकाम्स
मंगल	3-व्यजनांमस	4-चामरांस	4-गेपुराम्स	5-कणठुकाम्स
गुरु	1-...	1-...	1-...	1-...
शनि	2-किम्सुकम्स	2-किम्सुकम्स	3-उत्तमामस	4-नागपुष्पाम्स

षोढ़सवर्ग चार्ट

राशी[D1]

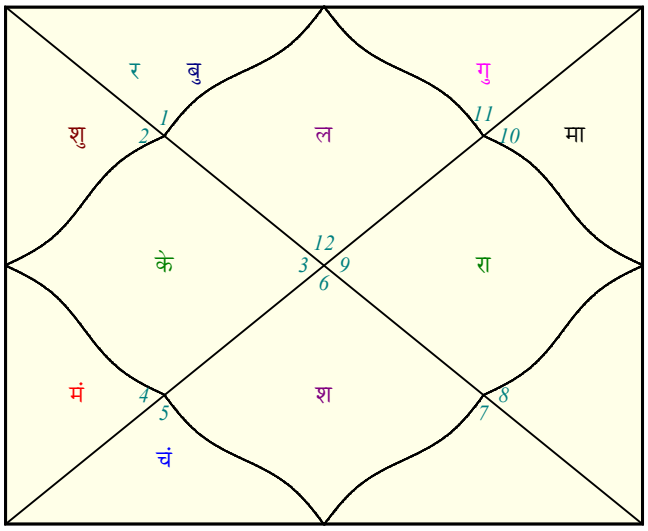

औरा[D2]

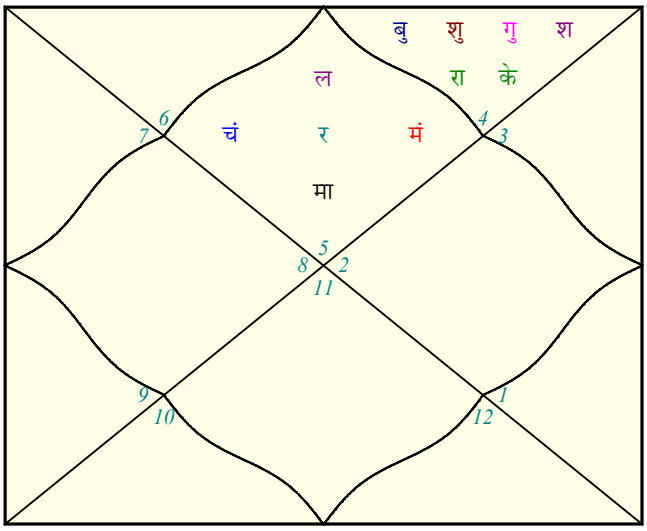

द्रिख्खन[D3]

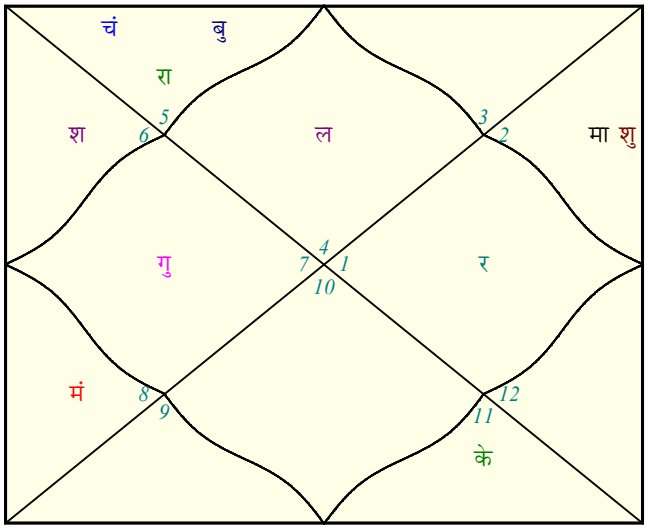

चतूथांश[D4]

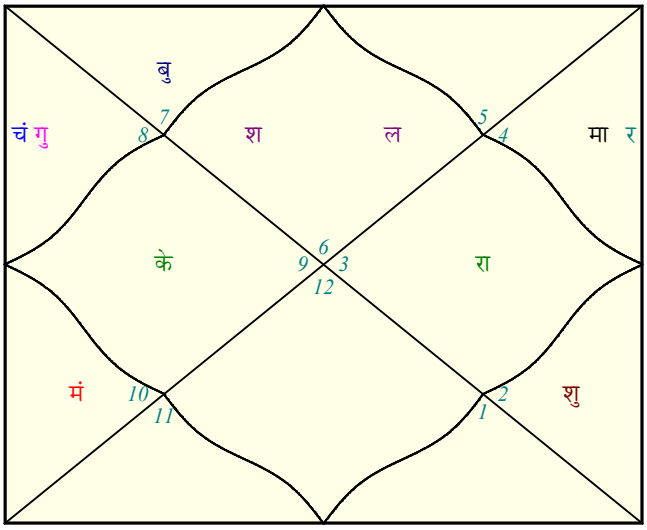

सप्तांश[D7]

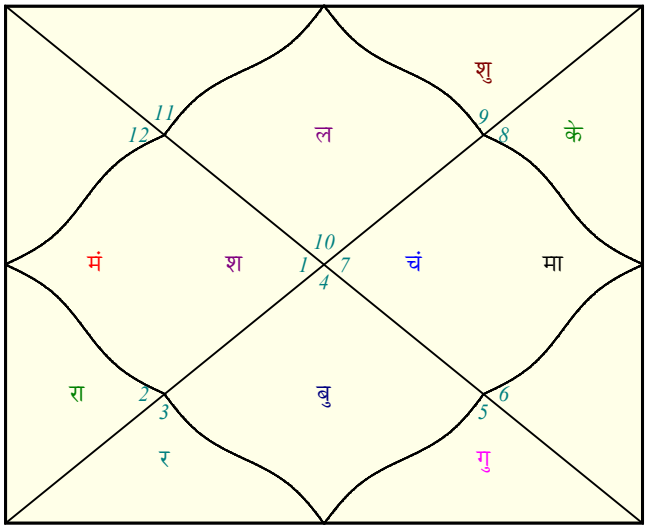

नवांश[D9]

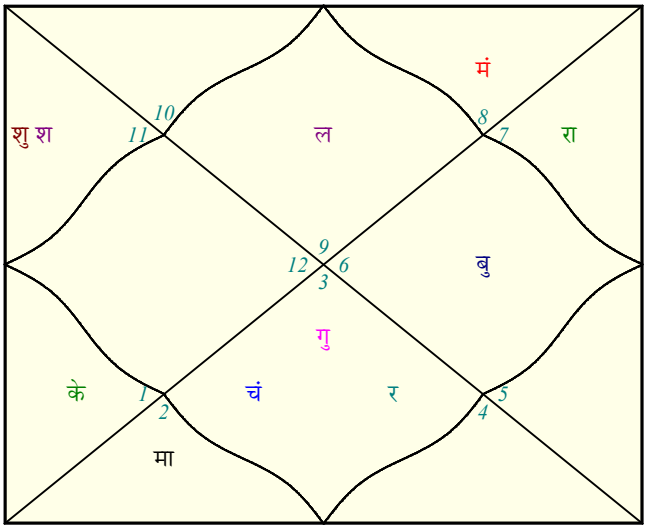

दशांश[D10]

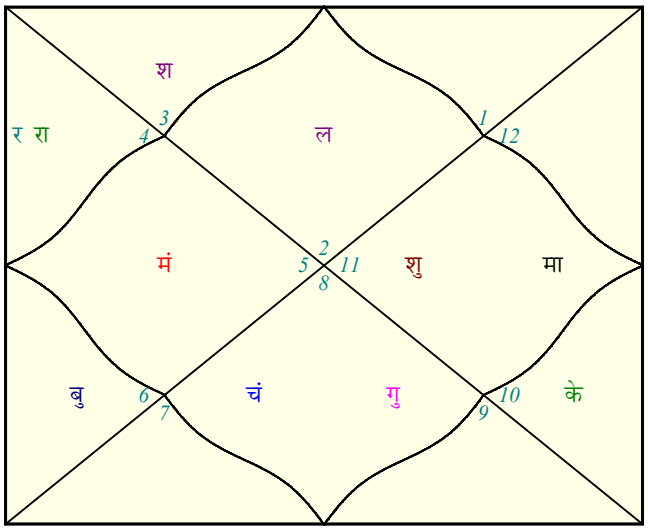

व्दादशांश[D12]

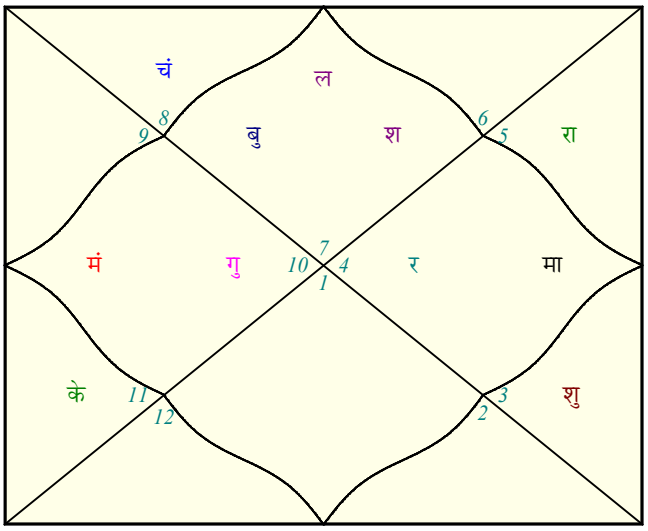

सोडांश[D16]

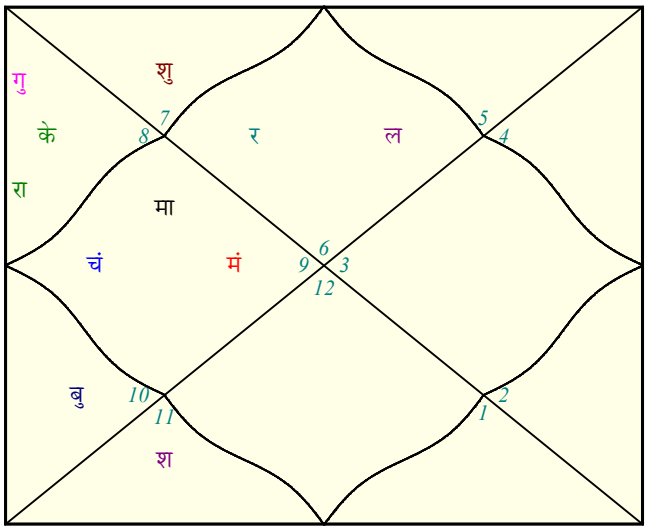

विंशाम्स[D20]

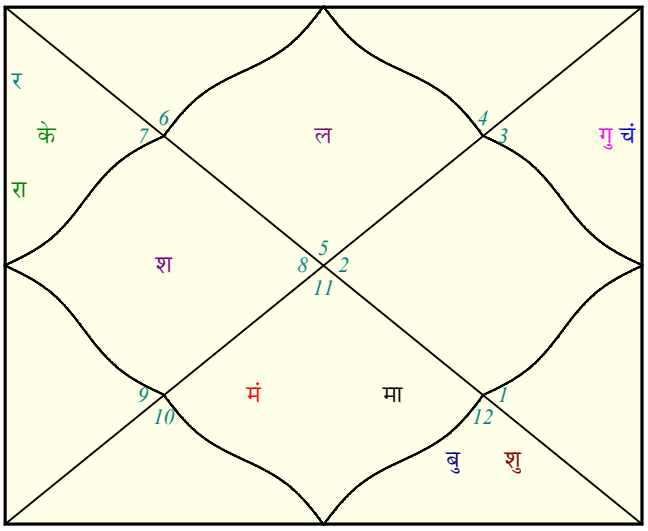

चतुर्विंशाम्स[D24]

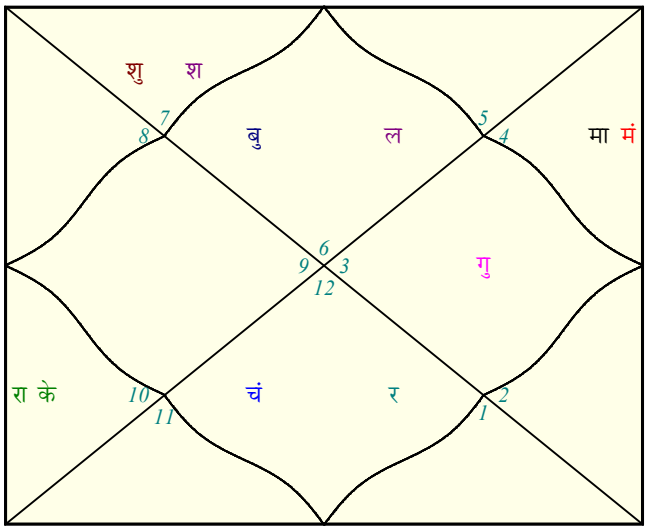

भम्श[D27]

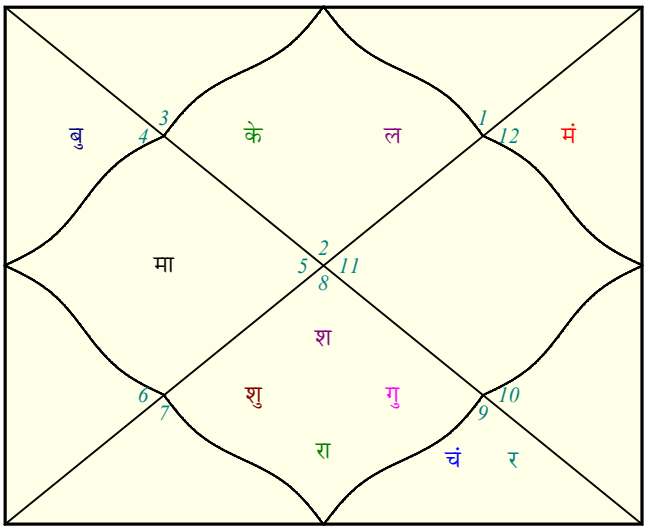

त्रिंमशांश[D30]

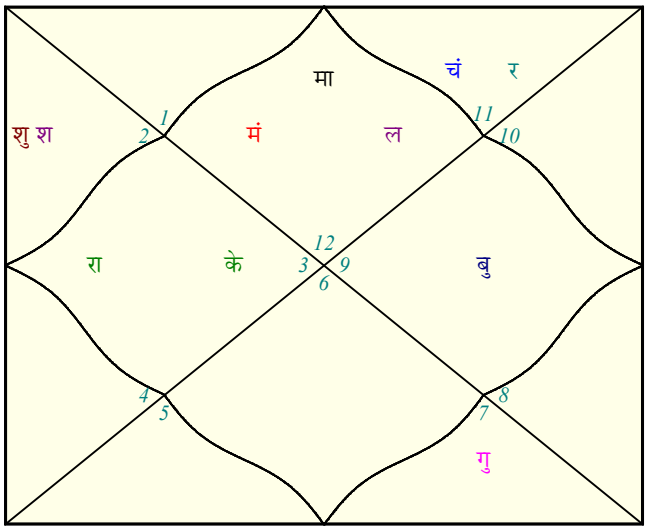

खवेदांश[D40]

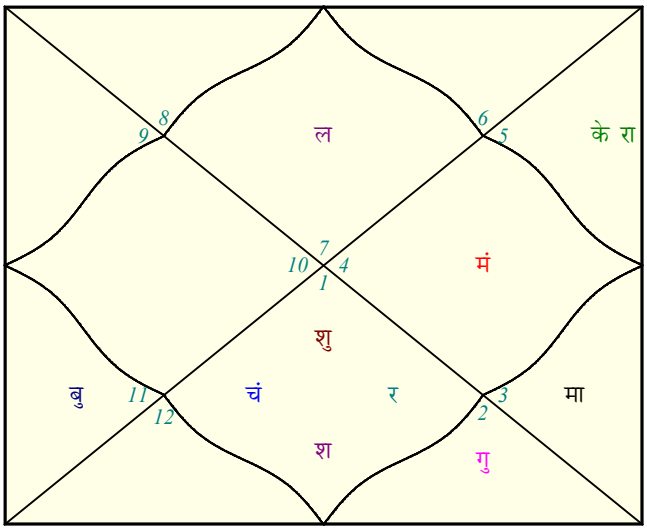

[D45]

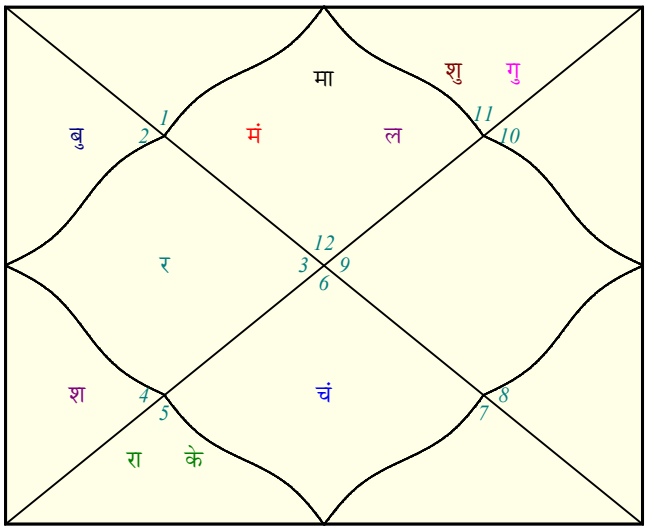

शष्टियांश[D60]

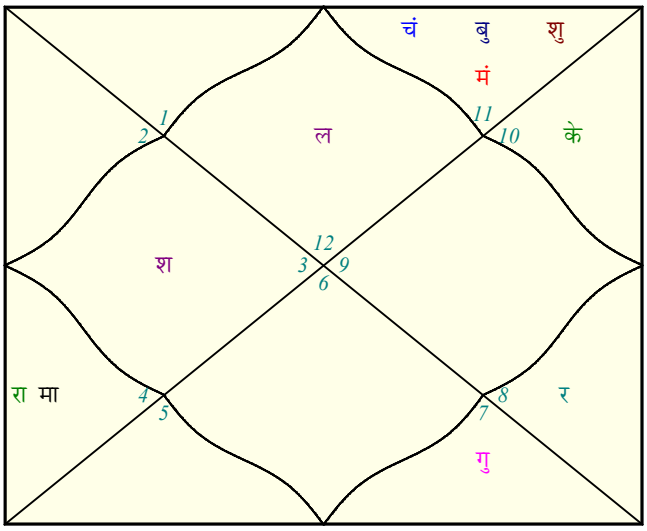

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - चन्द्र

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष			1		1				2
वृषभ	1				1	1		1	4
मिथुन	1	1	1						3
कर्क			1	1			1		3
सिंह	1		1	1	1	1		1	6
कन्या		1		1	1	1			4
तुला	1	1	1						3
वृशचिक		1	1	1	1	1	1		6
धनु					1	1		1	3
मकर	1	1	1	1		1	1	1	7
कुंम्भ	1	1	1	1		1	1		6
मीन				1	1				2
सभी मिलाकार	6	6	8	7	7	7	4	4	49

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - रवि

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष		1		1	1		1		4
वृषभ	1	1			1		1	1	5
मिथुन	1		1			1	1	1	5
कर्क		1			1	1	1		4
सिंह			1		1			1	3
कन्या			1				1		2
तुला	1	1		1	1	1	1		6
वृशचिक		1		1					2
धनु		1	1			1	1	1	5
मकर	1	1	1		1			1	5
कुंम्भ		1	1		1			1	4
मीन			1		1		1		3
सभी मिलाकार	4	8	7	3	8	4	8	6	48

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - बुध

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष			1		1		1	1	4
वृषभ	1			1	1		1		4
मिथुन	1		1	1			1	1	5
कर्क				1	1	1	1		4
सिंह		1	1	1	1			1	5
कन्या	1	1	1	1		1	1		6
तुला					1		1	1	3
वृशचिक	1								1
धनु		1	1	1		1	1	1	6
मकर	1		1	1	1	1		1	6
कुंम्भ		1	1		1				3
मीन	1	1	1	1	1		1	1	7
सभी मिलाकार	6	5	8	8	8	4	8	7	54

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - शुक्र

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष	1						1	1	3
वृषभ				1	1		1	1	4
मिथुन	1		1	1	1	1	1	1	7
कर्क	1			1			1	1	4
सिंह	1		1	1					3
कन्या	1		1	1	1	1			5
तुला	1					1		1	3
वृशचिक	1	1			1	1	1	1	6
धनु	1		1	1	1	1	1		6
मकर				1			1	1	3
कुंम्भ		1	1	1					3
मीन	1	1		1	1			1	5
सभी मिलाकार	9	3	5	9	6	5	7	8	52

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - मंगल

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष				1	1		1		3
वृषभ					1		1	1	3
मिथुन	1	1	1				1		4
कर्क					1	1	1		3
सिंह		1	1		1			1	4
कन्या		1	1				1		3
तुला	1			1	1				3
वृशचिक						1			1
धनु				1		1	1	1	4
मकर	1	1			1	1		1	5
कुंम्भ		1	1		1				3
मीन				1			1	1	3
सभी मिलाकार	3	5	4	4	7	4	7	5	39

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - गुरु

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष	1	1	1		1	1		1	6
वृषभ		1	1		1	1			4
मिथुन	1	1		1				1	4
कर्क		1	1		1			1	4
सिंह			1		1	1	1	1	5
कन्या	1		1	1		1		1	5
तुला		1		1	1				3
वृशचिक		1				1	1	1	4
धनु	1	1	1			1		1	5
मकर		1	1	1	1		1	1	6
कुंम्भ	1	1	1	1	1	1	1		7
मीन				1		1		1	3
सभी मिलाकार	5	9	8	6	7	8	4	9	56

प्रस्तारा अष्टकवर्गा - शनि

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	ल	सभी मिलाकार
मेष		1		1	1				3
वृषभ		1			1			1	3
मिथुन	1				1	1		1	4
कर्क		1				1	1		3
सिंह								1	1
कन्या			1		1				2
तुला	1	1		1					3
वृशचिक		1	1		1		1		4
धनु			1		1	1		1	4
मकर	1	1	1			1	1	1	6
कुंम्भ		1	1				1		3
मीन			1	1				1	3
सभी मिलाकार	3	7	6	3	6	4	4	6	39

अष्टकवर्ग

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	सभी मिलाकार
मेष	2	4	4	3	3	6	3	25
वृषभ	4	5	4	4	3	4	3	27
मिथुन	3	5	5	7	4	4	4	32
कर्क	3	4	4	4	3	4	3	25
सिंह	6	3	5	3	4	5	1	27
कन्या	4	2	6	5	3	5	2	27
तुला	3	6	3	3	3	3	3	24
वृशचिक	6	2	1	6	1	4	4	24
धनु	3	5	6	6	4	5	4	33
मकर	7	5	6	3	5	6	6	38
कुंम्भ	6	4	3	3	3	7	3	29
मीन	2	3	7	5	3	3	3	26
	49	48	54	52	39	56	39	337

अष्टकवर्ग कुंडलियाँ

चन्द्र अष्टकवर्ग 49

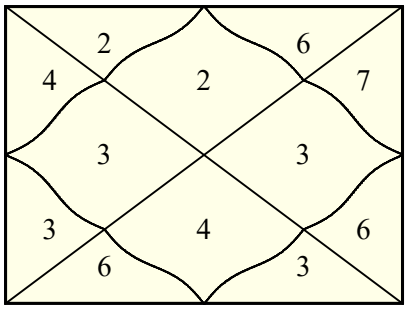

रवि अष्टकवर्ग 48

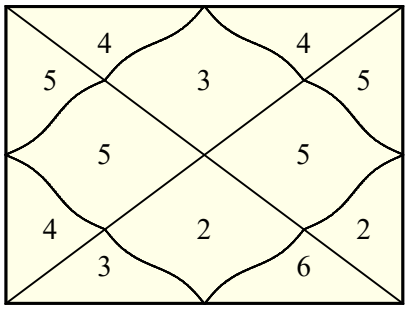

बुध अष्टकवर्ग 54

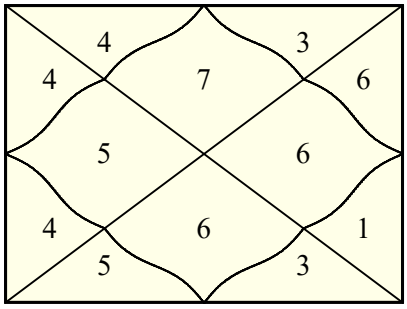

शुक्र अष्टकवर्ग 52

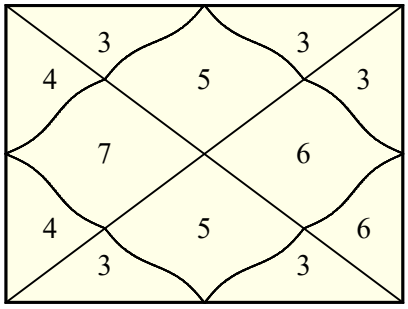

मंगल अष्टकवर्ग 39

गुरु अष्टकवर्ग 56

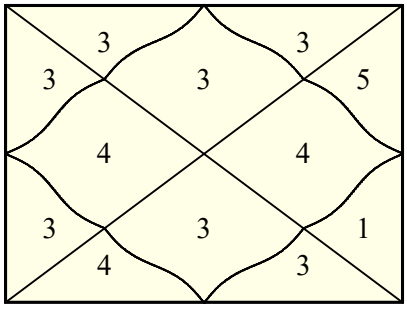

शनि अष्टकवर्ग 39

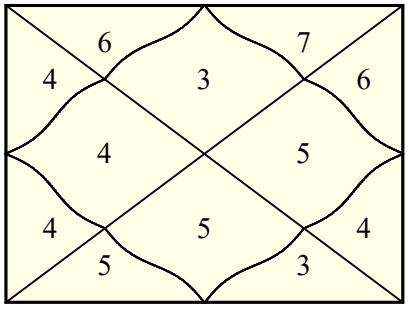

सर्व अष्टकवर्ग 337

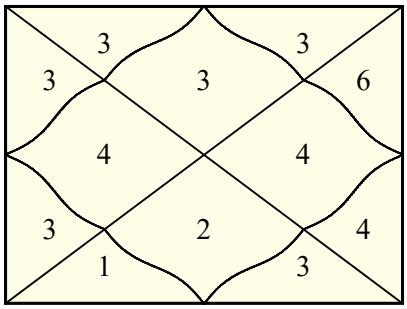

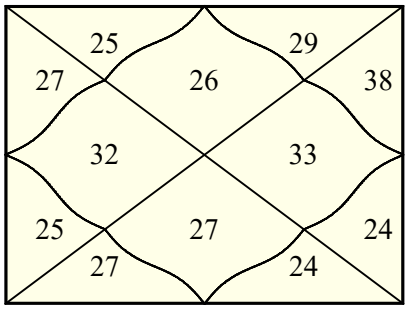

अष्टकवर्ग - त्रिकोण कम होना

चन्द्र अष्टकवर्ग 16

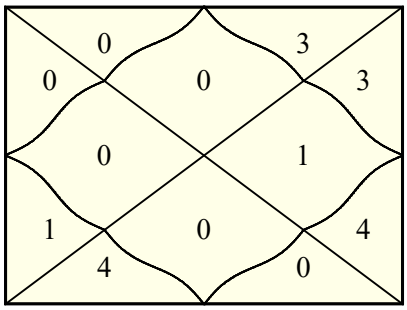

बुध अष्टकवर्ग 18

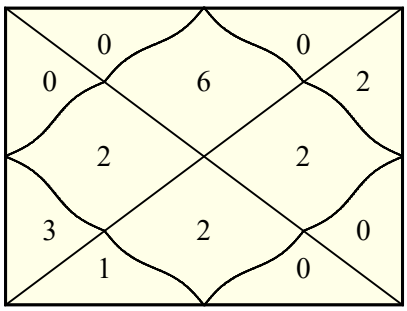

मंगल अष्टकवर्ग 9

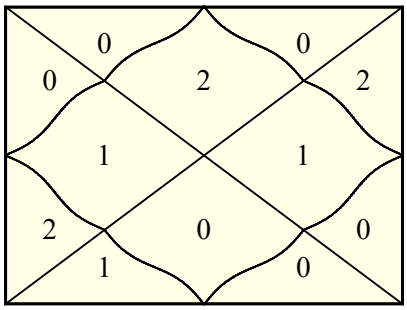

शनि अष्टकवर्ग 12

रवि अष्टकवर्ग 15

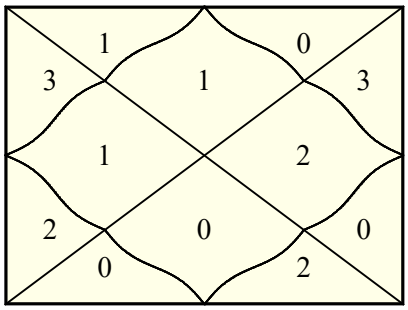

शुक्र अष्टकवर्ग 13

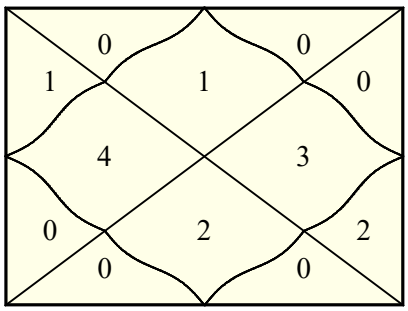

गुरु अष्टकवर्ग 11

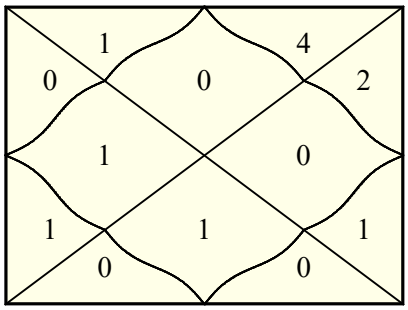

सर्व अष्टकवर्ग 94

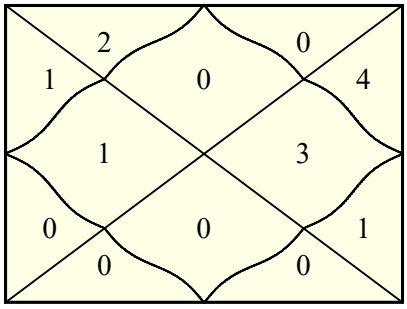

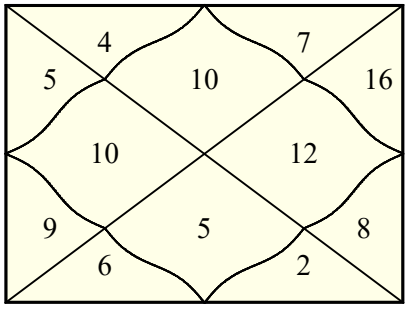

अष्टकवर्ग - एकाधिपती कम होना

चन्द्र अष्टकवर्ग 13

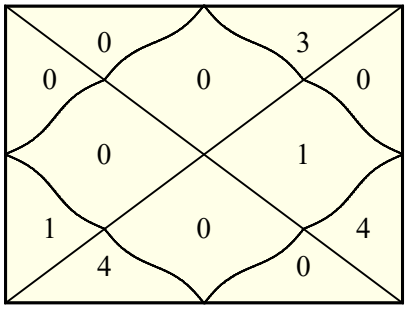

रवि अष्टकवर्ग 12

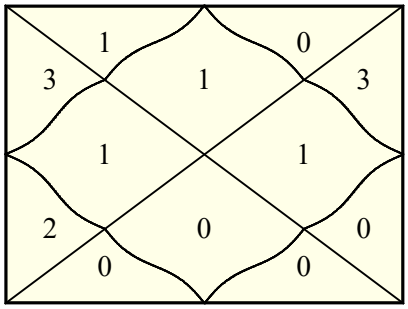

बुध अष्टकवर्ग 14

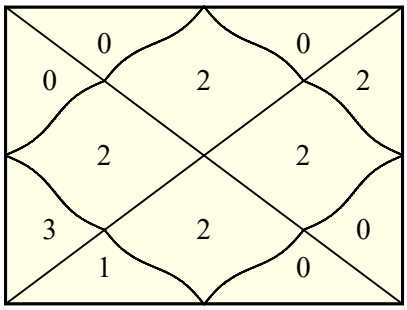

शुक्र अष्टकवर्ग 11

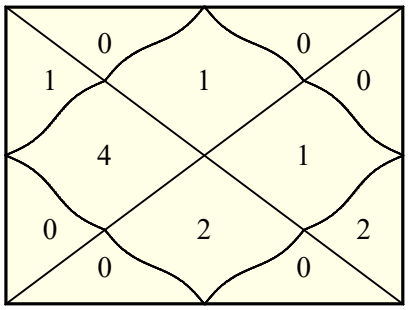

मंगल अष्टकवर्ग 8

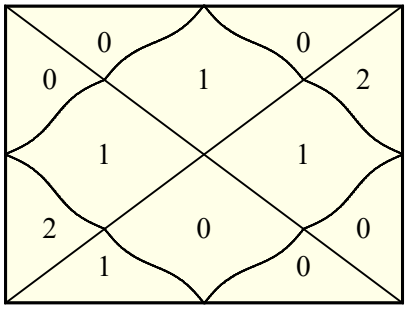

गुरु अष्टकवर्ग 8

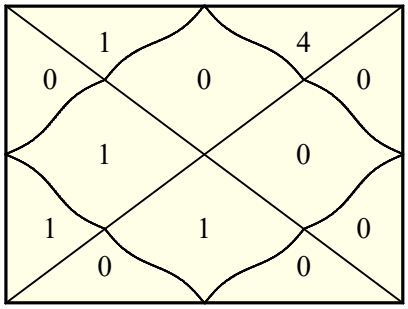

शनि अष्टकवर्ग 11

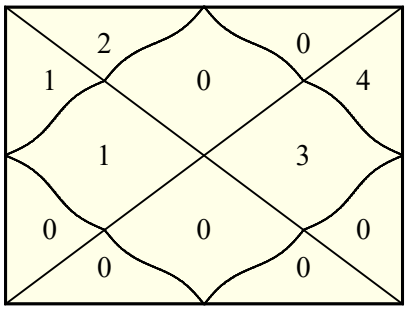

सर्व अष्टकवर्ग 77

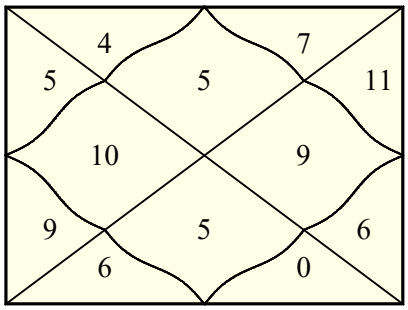

विंषोत्तरी दशा का सेक्षिप्त विवरण

प्ड्डुह्मण्फ दाश शुरुआत का उम्र (वर्ष : मास :दिवस) (YY:MM:DD)

शुक्र > 02:02:11 रवि > 22:02:11 चन्द्र > 28:02:11
मंगल > 38:02:11 राहु > 45:02:11 गुरु > 63:02:11
शनि > 79:02:11

दशा और भुक्ती का विवरण काल

(साल = 365.25 दिन)
जन्म के समय दशा की समतुलना = केतु 2 साल, 2 महीने, 11 दिन

दशा	भुक्ती	आरंभ	अन्तिम
के	गु	24-04-2010	30-05-2010
के	श	30-05-2010	08-07-2011
के	बु	08-07-2011	05-07-2012
शु	शु	05-07-2012	04-11-2015
शु	र	04-11-2015	03-11-2016
शु	चं	03-11-2016	05-07-2018
शु	मं	05-07-2018	04-09-2019
शु	रा	04-09-2019	04-09-2022
शु	गु	04-09-2022	05-05-2025
शु	श	05-05-2025	05-07-2028
शु	बु	05-07-2028	05-05-2031
शु	के	05-05-2031	05-07-2032
र	र	05-07-2032	22-10-2032
र	चं	22-10-2032	23-04-2033
र	मं	23-04-2033	29-08-2033
र	रा	29-08-2033	23-07-2034
र	गु	23-07-2034	11-05-2035
र	श	11-05-2035	22-04-2036
र	बु	22-04-2036	27-02-2037
र	के	27-02-2037	05-07-2037
र	शु	05-07-2037	05-07-2038
चं	चं	05-07-2038	05-05-2039
चं	मं	05-05-2039	04-12-2039
चं	रा	04-12-2039	04-06-2041
चं	गु	04-06-2041	04-10-2042
चं	श	04-10-2042	05-05-2044
चं	बु	05-05-2044	04-10-2045
चं	के	04-10-2045	05-05-2046
चं	शु	05-05-2046	04-01-2048
चं	र	04-01-2048	05-07-2048
मं	मं	05-07-2048	01-12-2048

मं	रा	01-12-2048	19-12-2049
मं	गु	19-12-2049	25-11-2050
मं	श	25-11-2050	04-01-2052
मं	बु	04-01-2052	31-12-2052
मं	के	31-12-2052	29-05-2053
मं	शु	29-05-2053	29-07-2054
मं	र	29-07-2054	04-12-2054
मं	चं	04-12-2054	05-07-2055
रा	रा	05-07-2055	17-03-2058
रा	गु	17-03-2058	10-08-2060
रा	श	10-08-2060	17-06-2063
रा	बु	17-06-2063	03-01-2066
रा	के	03-01-2066	22-01-2067
रा	शु	22-01-2067	22-01-2070
रा	र	22-01-2070	16-12-2070
रा	चं	16-12-2070	16-06-2072
रा	मं	16-06-2072	05-07-2073
गु	गु	05-07-2073	23-08-2075
गु	श	23-08-2075	05-03-2078
गु	बु	05-03-2078	10-06-2080
गु	के	10-06-2080	17-05-2081
गु	शु	17-05-2081	16-01-2084
गु	र	16-01-2084	03-11-2084
गु	चं	03-11-2084	05-03-2086
गु	मं	05-03-2086	09-02-2087
गु	रा	09-02-2087	05-07-2089
श	श	05-07-2089	08-07-2092
श	बु	08-07-2092	18-03-2095
श	के	18-03-2095	26-04-2096
श	शु	26-04-2096	26-06-2099
श	र	26-06-2099	08-06-2100
श	चं	08-06-2100	07-01-2102
श	मं	07-01-2102	16-02-2103
श	रा	16-02-2103	23-12-2105

नीचे खीची गई रेखा, आपके आयुष्य को बताने वाली रेखा नही है।

वर्तमान वर्ष से २५ साल तक पर्यन्तर दशा काल

दशा : शुक्र अपहार : राहु

1.रा	04-09-2019	>>	16-02-2020	**2.गु**	16-02-2020	>>	11-07-2020
3.श	11-07-2020	>>	31-12-2020	**4.बु**	31-12-2020	>>	04-06-2021
5.के	04-06-2021	>>	07-08-2021	**6.शु**	07-08-2021	>>	06-02-2022
7.र	06-02-2022	>>	02-04-2022	**8.चं**	02-04-2022	>>	02-07-2022
9.मं	02-07-2022	>>	04-09-2022				

दशा : शुक्र अपहार : गुरु

1.गु	04-09-2022	>>	12-01-2023	**2.श**	12-01-2023	>>	15-06-2023
3.बु	15-06-2023	>>	31-10-2023	**4.के**	31-10-2023	>>	27-12-2023
5.शु	27-12-2023	>>	06-06-2024	**6.र**	06-06-2024	>>	25-07-2024
7.चं	25-07-2024	>>	14-10-2024	**8.मं**	14-10-2024	>>	10-12-2024
9.रा	10-12-2024	>>	05-05-2025				

दशा : शुक्र अपहार : शनि

1.श	05-05-2025	>>	04-11-2025	**2.बु**	04-11-2025	>>	17-04-2026
3.के	17-04-2026	>>	23-06-2026	**4.शु**	23-06-2026	>>	02-01-2027
5.र	02-01-2027	>>	01-03-2027	**6.चं**	01-03-2027	>>	05-06-2027
7.मं	05-06-2027	>>	12-08-2027	**8.रा**	12-08-2027	>>	01-02-2028
9.गु	01-02-2028	>>	05-07-2028				

दशा : शुक्र अपहार : बुध

1.बु	05-07-2028	>>	28-11-2028	**2.के**	28-11-2028	>>	28-01-2029
3.शु	28-01-2029	>>	19-07-2029	**4.र**	19-07-2029	>>	09-09-2029
5.चं	09-09-2029	>>	04-12-2029	**6.मं**	04-12-2029	>>	02-02-2030
7.रा	02-02-2030	>>	08-07-2030	**8.गु**	08-07-2030	>>	23-11-2030
9.श	23-11-2030	>>	05-05-2031				

दशा : शुक्र अपहार : केतु

1.के	05-05-2031	>>	30-05-2031	**2.शु**	30-05-2031	>>	09-08-2031
3.र	09-08-2031	>>	31-08-2031	**4.चं**	31-08-2031	>>	05-10-2031
5.मं	05-10-2031	>>	30-10-2031	**6.रा**	30-10-2031	>>	02-01-2032
7.गु	02-01-2032	>>	28-02-2032	**8.श**	28-02-2032	>>	05-05-2032
9.बु	05-05-2032	>>	05-07-2032				

दशा : रवि अपहार : रवि

1.र	05-07-2032	>>	10-07-2032	**2.चं**	10-07-2032	>>	19-07-2032
3.मं	19-07-2032	>>	26-07-2032	**4.रा**	26-07-2032	>>	11-08-2032
5.गु	11-08-2032	>>	26-08-2032	**6.श**	26-08-2032	>>	12-09-2032
7.बु	12-09-2032	>>	27-09-2032	**8.के**	27-09-2032	>>	04-10-2032
9.शु	04-10-2032	>>	22-10-2032				

दशा : रवि अपहार : चन्द्र

1.चं	22-10-2032	>>	06-11-2032	**2.मं**	06-11-2032	>>	17-11-2032
3.रा	17-11-2032	>>	14-12-2032	**4.गु**	14-12-2032	>>	08-01-2033
5.श	08-01-2033	>>	06-02-2033	**6.बु**	06-02-2033	>>	04-03-2033
7.के	04-03-2033	>>	14-03-2033	**8.शु**	14-03-2033	>>	14-04-2033
9.र	14-04-2033	>>	23-04-2033				

दशा : रवि अपहार : मंगल

1.मं	23-04-2033	>>	30-04-2033	**2.रा**	30-04-2033	>>	19-05-2033
3.गु	19-05-2033	>>	05-06-2033	**4.श**	05-06-2033	>>	26-06-2033
5.बु	26-06-2033	>>	14-07-2033	**6.के**	14-07-2033	>>	21-07-2033
7.शु	21-07-2033	>>	12-08-2033	**8.र**	12-08-2033	>>	18-08-2033
9.चं	18-08-2033	>>	29-08-2033				

दशा : रवि अपहार : राहु

1.रा	29-08-2033	>>	17-10-2033	**2.गु**	17-10-2033	>>	30-11-2033
3.श	30-11-2033	>>	21-01-2034	**4.बु**	21-01-2034	>>	08-03-2034
5.के	08-03-2034	>>	27-03-2034	**6.शु**	27-03-2034	>>	21-05-2034
7.र	21-05-2034	>>	07-06-2034	**8.चं**	07-06-2034	>>	04-07-2034
9.मं	04-07-2034	>>	23-07-2034				

दशा : रवि अपहार : गुरु

1.गु	23-07-2034	>>	31-08-2034	**2.श**	31-08-2034	>>	17-10-2034
3.बु	17-10-2034	>>	27-11-2034	**4.के**	27-11-2034	>>	14-12-2034
5.शु	14-12-2034	>>	01-02-2035	**6.र**	01-02-2035	>>	15-02-2035
7.चं	15-02-2035	>>	12-03-2035	**8.मं**	12-03-2035	>>	29-03-2035
9.रा	29-03-2035	>>	11-05-2035				

दशा : रवि अपहार : शनि

1.श	11-05-2035	>>	05-07-2035	**2.बु**	05-07-2035	>>	24-08-2035
3.के	24-08-2035	>>	13-09-2035	**4.शु**	13-09-2035	>>	10-11-2035
5.र	10-11-2035	>>	27-11-2035	**6.चं**	27-11-2035	>>	26-12-2035
7.मं	26-12-2035	>>	15-01-2036	**8.रा**	15-01-2036	>>	07-03-2036
9.गु	07-03-2036	>>	22-04-2036				

दशा : रवि अपहार : बुध

1.बु	22-04-2036	>>	05-06-2036	**2.के**	05-06-2036	>>	24-06-2036
3.शु	24-06-2036	>>	14-08-2036	**4.र**	14-08-2036	>>	30-08-2036
5.चं	30-08-2036	>>	25-09-2036	**6.मं**	25-09-2036	>>	13-10-2036
7.रा	13-10-2036	>>	28-11-2036	**8.गु**	28-11-2036	>>	09-01-2037
9.श	09-01-2037	>>	27-02-2037				

दशा : रवि अपहार : केतु

1.के	27-02-2037	>>	06-03-2037	**2.शु**	06-03-2037	>>	28-03-2037
3.र	28-03-2037	>>	03-04-2037	**4.चं**	03-04-2037	>>	14-04-2037
5.मं	14-04-2037	>>	21-04-2037	**6.रा**	21-04-2037	>>	10-05-2037
7.गु	10-05-2037	>>	27-05-2037	**8.श**	27-05-2037	>>	17-06-2037
9.बु	17-06-2037	>>	05-07-2037				

दशा : रवि अपहार : शुक्र

1.शु	05-07-2037	>>	04-09-2037	**2.र**	04-09-2037	>>	22-09-2037
3.चं	22-09-2037	>>	22-10-2037	**4.मं**	22-10-2037	>>	13-11-2037
5.रा	13-11-2037	>>	06-01-2038	**6.गु**	06-01-2038	>>	24-02-2038
7.श	24-02-2038	>>	23-04-2038	**8.बु**	23-04-2038	>>	14-06-2038
9.के	14-06-2038	>>	05-07-2038				

दशा : चन्द्र अपहार : चन्द्र

1.चं	05-07-2038	>>	30-07-2038	**2.मं**	30-07-2038	>>	17-08-2038
3.रा	17-08-2038	>>	02-10-2038	**4.गु**	02-10-2038	>>	11-11-2038
5.श	11-11-2038	>>	30-12-2038	**6.बु**	30-12-2038	>>	11-02-2039
7.के	11-02-2039	>>	28-02-2039	**8.शु**	28-02-2039	>>	20-04-2039
9.र	20-04-2039	>>	05-05-2039				

दशा : चन्द्र अपहार : मंगल

1.मं	05-05-2039	>>	18-05-2039	**2.रा**	18-05-2039	>>	19-06-2039
3.गु	19-06-2039	>>	17-07-2039	**4.श**	17-07-2039	>>	20-08-2039
5.बु	20-08-2039	>>	19-09-2039	**6.के**	19-09-2039	>>	02-10-2039
7.शु	02-10-2039	>>	06-11-2039	**8.र**	06-11-2039	>>	17-11-2039
9.चं	17-11-2039	>>	04-12-2039				

दशा : चन्द्र अपहार : राहु

1.रा	04-12-2039	>>	25-02-2040	**2.गु**	25-02-2040	>>	08-05-2040
3.श	08-05-2040	>>	02-08-2040	**4.बु**	02-08-2040	>>	19-10-2040
5.के	19-10-2040	>>	20-11-2040	**6.शु**	20-11-2040	>>	19-02-2041
7.र	19-02-2041	>>	19-03-2041	**8.चं**	19-03-2041	>>	03-05-2041
9.मं	03-05-2041	>>	04-06-2041				

दशा : चन्द्र अपहार : गुरु

1.गु	04-06-2041	>>	08-08-2041	**2.श**	08-08-2041	>>	24-10-2041
3.बु	24-10-2041	>>	01-01-2042	**4.के**	01-01-2042	>>	30-01-2042
5.शु	30-01-2042	>>	21-04-2042	**6.र**	21-04-2042	>>	15-05-2042
7.चं	15-05-2042	>>	25-06-2042	**8.मं**	25-06-2042	>>	23-07-2042
9.रा	23-07-2042	>>	04-10-2042				

दशा : चन्द्र अपहार : शनि

1.श	04-10-2042	>>	04-01-2043	**2.बु**	04-01-2043	>>	27-03-2043
3.के	27-03-2043	>>	30-04-2043	**4.शु**	30-04-2043	>>	04-08-2043
5.र	04-08-2043	>>	02-09-2043	**6.चं**	02-09-2043	>>	20-10-2043
7.मं	20-10-2043	>>	23-11-2043	**8.रा**	23-11-2043	>>	18-02-2044
9.गु	18-02-2044	>>	05-05-2044				

दशा : चन्द्र अपहार : बुध

1.बु	05-05-2044	>>	17-07-2044	**2.के**	17-07-2044	>>	16-08-2044
3.शु	16-08-2044	>>	10-11-2044	**4.र**	10-11-2044	>>	06-12-2044
5.चं	06-12-2044	>>	18-01-2045	**6.मं**	18-01-2045	>>	18-02-2045
7.रा	18-02-2045	>>	06-05-2045	**8.गु**	06-05-2045	>>	14-07-2045
9.श	14-07-2045	>>	04-10-2045				

दशा : चन्द्र अपहार : केतु

1.के	04-10-2045	>>	17-10-2045	**2.शु**	17-10-2045	>>	21-11-2045
3.र	21-11-2045	>>	02-12-2045	**4.चं**	02-12-2045	>>	19-12-2045
5.मं	19-12-2045	>>	01-01-2046	**6.रा**	01-01-2046	>>	02-02-2046
7.गु	02-02-2046	>>	02-03-2046	**8.श**	02-03-2046	>>	05-04-2046
9.बु	05-04-2046	>>	05-05-2046				

दशा : चन्द्र अपहार : शुक्र

1.शु	05-05-2046	>>	15-08-2046	**2.र**	15-08-2046	>>	14-09-2046
3.चं	14-09-2046	>>	04-11-2046	**4.मं**	04-11-2046	>>	09-12-2046
5.रा	09-12-2046	>>	11-03-2047	**6.गु**	11-03-2047	>>	31-05-2047
7.श	31-05-2047	>>	04-09-2047	**8.बु**	04-09-2047	>>	29-11-2047
9.के	29-11-2047	>>	04-01-2048				

गृहस्थान के स्वामी

प्रथम	भाव के स्वामी	(केन्द्र)	: गुरु
दूसरा	,,	(पनप्र)	: मंगल
तिसरा	,,	(अपोक्लीमा)	: शुक्र
चौथा	,,	(केन्द्र)	: बुध
पंचम	,,	(त्रीकोण)	: चन्द्र
छठ्ठा	,,	(अपोक्लीमा)	: रवि
सातवँ	,,	(केन्द्र)	: बुध
आठवाँ	,,	(पनप्र)	: शुक्र
नवमा	,,	(त्रीकोण)	: मंगल
दशावाँ	,,	(केन्द्र)	: गुरु
अग्यारवाँ	,,	(पनप्र)	: शनि
बारहवाँ	,,	(अपोक्लीमा)	: शनि

गृहों का योग

रवि	प्रभावित होता है	बुध
बुध	प्रभावित होता है	रवि

एक गृह से दूसरे गृह की अपेक्षा से

चन्द्र	अपेक्षित गुरु
मंगल	अपेक्षित गुरु
गुरु	अपेक्षित चन्द्र,केतु
शनि	अपेक्षित केतु,लग्न

गृह और उसके स्थान की अपेक्षा से

चन्द्र	अपेक्षित बारहवाँ
रवि	अपेक्षित आठवाँ
बुध	अपेक्षित आठवाँ
शुक्र	अपेक्षित नवमा
मंगल	अपेक्षित आठवाँ,अग्यारवाँ,बारहवाँ
गुरु	अपेक्षित चौथा,छठ्ठा,आठवाँ
शनि	अपेक्षित प्रथम,चौथा,नवमा

लाभदाई और अपशकुनिय गृहों से

गुरु, शुक्र और चंन्द्र नैसर्गीक पक्षबल के लाभदाई होते हैं.शुक्लपक्ष के शष्ठी तिथि से लेकर कृष्णपक्ष के शष्ठी तिथि तक चन्द्र को पक्षबल उपलब्ध रहतै है

आपकी जन्मपत्रिका में चन्द्र पक्षबल से उपलब्ध है और वह अति लाभदाई भी है।

बुध जब अमंगल तत्वों के संयोग में आता है तो वह ओर भी अमंगल और उद्‌वेग उत्पन्न करने वाला गृह हो जाता है

संक्षिप्त में यह कहै जा सकता है कि आपकी कुंडली में बुध अशुभ गृह के प्रभाव के कारण अशुभ फल दिलाता है।

चन्द्र	-	शुभदाई
रवि	-	अशुभकर्ता
बुध	-	अशुभकर्ता
शुक्र	-	शुभदाई
मंगल	-	अशुभकर्ता
गुरु	-	शुभदाई
शनि	-	अशुभकर्ता
राहु	-	अशुभकर्ता
केतु	-	अशुभकर्ता

अशुभ और शुभ फल निरूपण

गृहों से उत्पन्न होने वाले शुभ-अशुभ फलों का निर्णय कुंडलि के स्थानिक स्वामी पर रहतै है। अलग अलग स्थान पर उसका अलग प्रभाव रहता है।
कुंडली में प्रथम स्थान, पांचवा स्थान और नवमाँ स्थान सदा लाभदाई और मंगलमय रहता है।

साधारण दृष्टी से अशुभ गृह चौथे, सातवें और दसवें स्थान के स्वामीत्व को प्राप्त करता है, तब वह लाभदाई और मंगलकारी बनता है।

तीसरे, छठ्ठे और अग्यारवें स्थान के स्वामी अशुभ और अमंगलकारी माने जाते हैं।

साधारण दृष्टी से शुभ गृह चौथे, सातवें और दसवें स्थान के सेवामीत्व को प्राप्त करते है, तब वह अशुभकारी और अमंगलमयी बनते हैं। यह केन्द्राधीपती के दोष के कारण उत्पन्न होनेवाली स्थिती हैं।

दूसरे, आठवें और बारहवें, कुंडली के स्थानीय स्वामी निष्पक्ष प्रकार के या शुभ-अशुभ दोनों से भिन्न प्रकार के फल देने वाले होते हैं।

सूर्य और चन्द्र के छोडकर अन्य सभी गृह, कुंडली में दो स्थानों के स्वामीत्व को स्वीकार करते हैं। उनके समूल प्रत्याधात और प्रभाव को सुश्मता से देखना पडता है।

शास्त्रोक्त ग्रंन्थों से पता चलता है कि आठवे स्थान का निरुपण कुंडली के अन्य संथानों पर रहे गृह स्वामी के विश्लेषण पर अधारित है।

गृह	स्वामीत्व	स्वभाव
चन्द्र	5	शुभदाई
रवि	6	अशुभकर्ता
बुध	4 7	अशुभकर्ता
शुक्र	3 8	अशुभकर्ता
मंगल	2 9	शुभदाई
गुरु	1 10	निश्पक्षीय
शनि	11 12	अशुभकर्ता

नैसर्गीक स्थाई मित्रों की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	बन्धु	बन्धु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष
र	बन्धु	...	निश्पक्ष	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु
बु	शत्रु	बन्धु	...	बन्धु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष
शु	शत्रु	शत्रु	बन्धु	...	निश्पक्ष	निश्पक्ष	बन्धु
मं	बन्धु	बन्धु	शत्रु	निश्पक्ष	...	बन्धु	निश्पक्ष
गु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	शत्रु	बन्धु	...	निश्पक्ष
श	शत्रु	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	निश्पक्ष	...

तात्कालिक मित्रों की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	शत्रु	शत्रु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	बन्धु
र	शत्रु	...	शत्रु	बन्धु	बन्धु	बन्धु	शत्रु
बु	शत्रु	शत्रु	...	बन्धु	बन्धु	बन्धु	शत्रु
शु	बन्धु	बन्धु	बन्धु	...	बन्धु	बन्धु	शत्रु
मं	बन्धु	बन्धु	बन्धु	बन्धु	...	शत्रु	बन्धु
गु	शत्रु	बन्धु	बन्धु	बन्धु	शत्रु	...	शत्रु
श	बन्धु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	बन्धु	शत्रु	...

पंचदा मित्रों की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
चं	...	निश्पक्ष	निश्पक्ष	बन्धु	बन्धु	शत्रु	बन्धु
र	निश्पक्ष	...	शत्रु	निश्पक्ष	अति बन्धु	अति बन्धु	अति शत्रु
बु	अति शत्रु	निश्पक्ष	...	अति बन्धु	बन्धु	बन्धु	शत्रु
शु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	अति बन्धु	...	बन्धु	बन्धु	निश्पक्ष
मं	अति बन्धु	अति बन्धु	निश्पक्ष	बन्धु	...	निश्पक्ष	बन्धु
गु	निश्पक्ष	अति बन्धु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष	...	शत्रु
श	निश्पक्ष	अति शत्रु	निश्पक्ष	निश्पक्ष	निश्पक्ष	शत्रु	...

शक्तीबल बतानेवाली नामावली शष्टी अंश के आधारपर (दृकबल)

गृह अपेक्षाकी दृष्टी से अपेक्षित दृष्य गृह

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
शुभ दृष्टी							
चन्द्र	.	29.72	26.03	17.32	.	50.41	.
शुक्र	42.68	.	.	.	26.27	3.08	29.57
गुरु	21.62	5.68	9.38	21.17	12.57 30.00	.	56.70
शुभ बल	64.30	35.40	35.41	38.49	68.84	53.49	86.27
अशुभ दृष्टी							
रवि	-30.28	.	.	.	-41.97	.	-4.77
बुध	-33.97	.	.	.	-43.68	.	-12.16
मंगल	.	-18.03	-14.34	-5.63	.	-38.72 -15.00	-9.58
शनि	.	-42.61	-38.92	-30.21	.	-46.81	.
अशुभ शक्ती	-64.25	-60.64	-53.26	-35.84	-85.65	-100.53	-26.51
दृष्टी पींड	0.05	-25.24	-17.85	2.65	-16.81	-47.04	59.76
द्रिक बल	0.01	-6.31	-4.46	0.66	-4.20	-11.76	14.94

षड्बल

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
उच्च बल						
27.95	59.90	10.70	47.50	4.08	17.78	44.98
सप्तवर्गज बल						
75.00	91.88	93.76	142.50	157.50	60.00	75.00
ओजयुग्मरस्यांश बल						
0	30.00	15.00	15.00	0	30.00	15.00
केन्द्र बल						
15.00	30.00	30.00	15.00	30.00	15.00	60.00
द्रिखान बल						
0	15.00	15.00	0	0	0	0
संयुक्तस्थान बल						
117.95	226.78	164.46	220.00	191.58	122.78	194.98
संयुक्त दिगबल						
41.94	21.75	50.45	46.52	10.27	53.29	55.49
नतोन्नत बल						
37.21	22.79	60.00	22.79	37.21	22.79	37.21
पक्षबल						
79.64	20.18	20.18	39.82	20.18	39.82	20.18
त्रिभाग बल						
60.00	0	0	0	0	60.00	0
अब्द बल						
0	0	0	15.00	0	0	0
मास बल						
0	0	0	30.00	0	0	0
वर बल						
0	0	0	45.00	0	0	0
होल बल						
0	0	60.00	0	0	0	0
आयान बल						
16.85	92.36	49.25	55.30	52.59	26.15	29.46
युध्ध बल						
0	0	0	0	0	0	0
संयुक्त काल बल						
193.70	135.33	189.43	207.91	109.98	148.76	86.85
संयुक्त चेष्टाबल						
0	0	51.63	17.35	39.19	13.49	48.47
संयुक्त नैसर्गीक बल						
51.43	60.00	25.70	42.85	17.14	34.28	8.57
संयुक्त द्रिकबल						
0.01	-6.31	-4.46	0.66	-4.20	-11.76	14.94
संपूर्ण षड्बल						
405.03	437.55	477.21	535.29	363.96	360.84	409.30

षाढबाला संक्षिप्त टेबुल

चं	र	बु	शु	मं	गु	श
संपूर्ण षड्बल						
405.03	437.55	477.21	535.29	363.96	360.84	409.30
संपूर्ण शडबल (रूप)						
6.75	7.29	7.95	8.92	6.07	6.01	6.82
मौलीक ज़रूरतें						
6.00	5.00	7.00	5.50	5.00	6.50	5.00
षडबल अनुपात						
1.13	1.46	1.14	1.62	1.21	0.92	1.36
संबन्धी स्थानक						
6	2	5	1	4	7	3

इष्टफल, कष्टफल की नामावली

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श
इष्टफल	33.36	49.70	23.50	28.71	12.64	15.49	46.69
कष्टफल	25.43	1.37	20.31	23.09	34.11	44.31	13.16

भावापेक्षीत बलवंत स्थिती की यादी (नामावली) शष्टीआंशमें

बुध गृह का प्रकृति संयोग से निश्चित किया जाता है ।

गृह अपेक्षाकी दृष्टी से भावमध्य की अपेक्षा से गृहों का द्रष्यभाव

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
शुभ दृष्टी											
चन्द्र											
10.09	6.48	2.88	.	.	.	1.16	5.79	10.38	6.05	3.49	13.98
शुक्र											
.	.	.	1.31	6.66	9.65	4.01	6.39	13.55	9.94	6.05	2.15
गुरु											
.	9.48	32.79	36.69	12.21 30.00	37.90	49.94	35.52	21.11 30.00	6.69	.	.

शुभ बल

10.09	15.96	35.67	38.00	48.87	47.55	55.11	47.70	75.04	22.68	9.54	16.13

अशुभ दृष्टी

रवि

.	.	-0.80	-5.07	-10.45	-5.60	-4.38	-14.05	-10.45	-6.84	-2.95	.

बुध

.	.	.	-13.93	-44.03	-29.81	-2.72	-59.90	-45.49	-31.07	-15.49	.

मंगल

-7.17	-3.56	.	.	.	-0.19	-4.42	-11.06 -3.75	-7.41	-0.20	-14.96	-11.06 -3.75

शनि

-13.31	-9.71	-6.10	-2.50 -11.25	.	.	.	-1.55	-6.55 -11.25	-10.00	-4.70	-6.18

अशुभ शक्ती

-20.48	-13.27	-6.90	-32.75	-54.48	-35.60	-11.52	-90.31	-81.15	-48.11	-38.10	-20.99

दृष्टी पींड / द्रिक बल

-10.39	2.69	28.77	5.25	-5.61	11.95	43.59	-42.61	-6.11	-25.43	-28.56	-4.86

भावबल की यादी

	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
भावाधीपती का बल	360.84	363.96	535.29	477.21	405.03	437.55	477.21	535.29	363.96	360.84	409.30	409.30
भावद्रिगबल	30.00	20.00	10.00	30.00	50.00	20.00	0	10.00	40.00	30.00	10.00	50.00
भावद्रिष्टीबल	-10.39	2.69	28.77	5.25	-5.61	11.95	43.59	-42.61	-6.11	-25.43	-28.56	-4.86
संपूर्ण भावबल	380.45	386.65	574.06	512.46	449.42	469.50	520.80	502.68	397.85	365.41	390.74	454.44
भावबल के रुप	6.34	6.44	9.57	8.54	7.49	7.83	8.68	8.38	6.63	6.09	6.51	7.57
संबन्धी स्थानक	11	10	1	3	7	5	2	4	8	12	9	6

मौढय स्थिती का विवरण।

जब कोई गृह सूर्य के निकट आता है तब वह मौढ्य स्थिती प्राप्त करता है। मौढ्य दशा में गृह अशुभकारी स्थिती उत्पन्न करता है।

बुध मौढ्य दशा में रहा है।

ग्रहयुध्ध

सूर्य और चन्द्र के सिवा अन्यग्रह जब भी एक रेखांश से ज्यादा समीप आते हैं तो ठग्रहयुध्ध' की स्थिती पैदा होती है। ग्रहयुध्ध में जय-पराजय के बारे में अलग-अलग विचार धार बनी रही है। उसकी एक झलक इस प्रकार है।
अन्य के बिच उत्तर दिशा की ओर रहे ग्रह विजई बनते हैं।

इस जन्मकुंडली में कोई भी ग्रहयुध्ध में झुटा नहि है।

उत्थान, क्षीण, मौढ्य, युध्ध और वक्र स्थिती का संक्षिप्त विवरण।

गृह	श्रेष्ठतम स्थिती।/ क्षीण या नाजुक स्थिती	संयोजन	ग्रहयुध्ध	विपरीत परिस्थिती	बालादि अवस्था
चं					कुमारावस्था
र	श्रेष्ट समय				कुमारावस्था
बु		सयहोग		विपरीत परिस्थिती	युवावस्था
शु					मित्रवस्था
मं	क्षीण परिस्थिती				युवावस्था
गु					मित्रवस्था
श				विपरीत परिस्थिती	मित्रवस्था

जन्म कुंडली में गृहों के मुख्य प्रकार के संयोजन से उत्पन्न होनेवाली स्थिति को योग कहते हैं। योग व्यक्ति के जीवन प्रवाह और भविष्य को असर करने वाला होता है। कुछ योग गृहों के साधारण मिलने या संयोजन से उत्पन्न होते हैं। लेकिन विशेष, दूसरे योग जो हैं वह गृहों के कुछ खास प्रकार के संयोजन अथवा जन्मकुंडली में स्थान गृहण करने से उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार के सैकडों मिलन, संयोजन योग इत्यादी के विवरण पुरातन ज्योतिष शास्त्र के ग्रन्थों में दिये गये हैं। कुछ संयोजन से उत्पन्न होने वाले योग लाभदायी रहते है तो कुछ से हानि अथवा अशुभकारी फलों की प्राप्ति होती है।

आपकी जन्म पत्रिका में कुछ मुख्य महत्वपूर्ण गृहों से उत्पन्न होनेवाले योगों का विवरण यहाँ दिया गया है।

नीचभंगराज योग

लक्षणः
मंगल क्षीण और बलहीन स्थिती उत्पन्न हुई है
दुर्बल राशी में जो गृह आनन्द पूर्ण है, चन्द्र केन्द्र में उपस्थित है ।
आनन्दातिरेक राशी के गृह का अधिपति लग्न केन्द्र में है ।

आप अतिभाग्यवान होंगे और श्रेष्ठ उच्च स्थान प्राप्त करेंगे। आप के व्यवहार में न्याय और नीति की झलक प्राप्त होगी।

राज योग

लक्षणः

इस जन्मकुण्डली में लाभदायक राजयोग दिखाई पडता है ।

आप शक्ति और अधिकार पद तक पहुँच जाएगों ।

सुनभयोग

लक्षणः
सूर्य को छोडकर कोई भी गृह चन्द्र से दूसरे स्थान पर रहा है।

जब सुनभा योग होता है तब चन्द्र की दूसरी राशि में कुज (मंगल), बुध, बृहस्पति, शुक्र या शनि रहता है। कभी-कभी उपरोक्त गृहों में से एक ही चन्द्र के सहयोग में रहता है। जो लोग सुनभा योग में जन्म लेते वे स्वभावतः धनी, बुद्धिमान और प्रसिद्ध हो जाते हैं। आप दृश्यश्रव्य कलाओं के साधक हैं। सामान्यतः आप स्वयं अपनी उन्नति का कारण बनेंगे। जीवन में सफलता और प्रगति हासिल होगा। परिस्थितियों से ऊपर उठकर, स्वयं अपने भाग्य का निर्माण करेंगे।

अनभयोग

लक्षणः

सूर्य के अतिरिक्त कोई भी गृह चन्द्र से बारहवे स्थान पर रहा है।

अनभा योग तब होता है जब चन्द्र के बारहवें भाव में कुज (मंगल), बुध, बृहस्पति, शुक्र और शनि अकेले या एक साथ होते हैं। अनभा योग व्यक्ति को धनी एंव सुखी बनाता है। उसे चरित्रवान भी बनाता हैं। उसका शरीर सुन्दर, बल और पौरुष प्रकट करने वाला होता है। यह योग आपको विनम्र व व्यवहार कुशल बनायेगा। आप भाग्यशाली हैं और सफलता सुनिश्चित है। अपने लिए और पत्नी के लिए विशेष वस्त्रों की आप अभिरुचि रखते हैं जो दूसरे लोगों में नहीं देखा जाता। आप में विनय और आदरभाव स्थायी रूप से बने रहेंगे। विनय और करुणा आप के हर कार्य में प्रकट होते हैं। आप प्रशंसा के पात्र बनेंगे।

दूरदूरयोग

लक्षणः
अनभ और सुनभ दोनो योग प्राप्य हैं।

जिस जन्म पत्रिका में सुनभा और अनभा योग होते हैं उसे दुरुधरा योग के नाम से जाना जाता है। आप हर प्रकार से संपन्न व्यक्ति होंगे। बड़ी मात्रा में संपत्ति प्राप्त होगी। फिर भी आप सहज और सरल रहेंगे। आप अहंकार से मुक्त रहेंगे। स्वभाव शुद्धि के प्रति खास ध्यान देनेवाले हैं। सवारियों की सुविधा प्राप्त होगी। सब प्रकार के सुख होते हुए भी आपमें त्याग भावना पर्याप्त मात्रा में होगी।

गज़केसरी योग

लक्षणः
चन्द्र से लेकर गुरु ने केन्द्रस्थान प्राप्त किया है।

बृहस्पति चन्द्र से केन्द्र स्थान पर होने से गजकेसरी योग होता है। ज्योतिशास्त्र के अनुसार केसरीयोग में जन्म पानेवाले व्यक्ति भाग्यवान माने जाते हैं। वे धनी, ऐश्वर्यवान, विजयी होते हैं। केसरियोग अन्य बुरे योगों का प्रभाव, जैसे केमद्रुम आदि को नष्ट करता है। आप सामान्यतः एक दीर्घ सफल जीवन प्राप्त कर सकते हैं। आप का मन दृढ़ होने पर भी
कभी-कभी चंचल भी होता हैं। एक से लिये गये निर्णय को बदलना आपके लिए कठिन है। संपत्ति, कार्यसिद्धि, सफलता और प्रगति सुलभ प्रमाण में प्राप्त होगी। ऐश्वर्यपूर्ण दीर्घ आयु का योग है। स्वयं बुद्धि से हर समस्या का समाधान निकालने में निपुण हैं।

अमलयोग

लक्षणः
लग्नस्थल या चन्द्रसथान से दशवें स्थान पर लाभदाई श्रेष्ठ गृहों का रहना।

आप अमला योग में जन्म हैं। आप दीर्घायु तथा धनी होंगे। अपनी पवित्रता के विचारों और कर्मों से समाज में आदर प्राप्त करेंगे। आप ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करेंगे। आप को लोग निष्कलंक और चरित्रवान समझेंगे। किसी भी परिस्थिति में आपका मन चंचल न रहेगा। ऐश्वर्य, कीर्ति और मान-सम्मान का संगम इस योग में होता हैं। अतुलित कीर्ति प्राप्त होगा।

द्विगृह योग

लक्षणः
दो गृह एक ही भाव में स्थापित है ।

रवि,बुध , दूसरा भाव में है ।

आप ज्यादा से ज्यादा ज्ञान प्राप्त कर सकते है । आपका बुद्धि वैभव और पाणिडत्य शक्ति दूसरों को आश्चर्य करेगा । लेकिन आप अपने राय पर स्थिर नहीं रहेगों । दूसरों को लाभ पहुँचाने वाले परियोजन से आप धन कमा सकते है । आपका अद्‌भुत वाक्य शक्ति अनेक अभिनन्द को अपनाएगा ।

आपके जीवन और व्यवहार पर गृहों के प्रभाव को यह विज्ञापन व्याखा करता है ।इस विज्ञापन में उपस्थित आवृत्ति और विरोध आपके जीवन पर गृहों के परस्पर प्रभाव को सूचित करता है ।

व्यक्तित्व, शारीकि बनावट, सामाजिक स्थिति

जन्मकुण्डली का पहला भाव एक व्यक्ति के व्यक्तित्व, शारीरिक बनावट, सामजिक स्थिति और प्रसिद्धि को सूचित करता है ।

लग्न स्थान में मीन राशि होने से शरीर नाज़ुक होगा और पित्त प्रवृत्ति का स्वास्थ्य होगा। आप विनयशील व्यक्ति हैं। आप शारीरिक शास्त्र या औषधि विज्ञान के ज्ञाता हो सकते हैं। पांडित्य भी प्राप्त हुआ होगा। सरकारी उच्च अधिकारियों से श्रेष्ठ संबन्ध स्थापित होंगे। दान, धर्म इत्यादि सद्कर्मों से आप अनुग्रहीत हैं और आपका जीवन प्रतापी रहेगा। समुद्र तट से मिलने वाली वस्तुओं से, औषधि व्यवसाय से, ज्योतिष या धर्म से संबन्धित कामों से, लेखन और प्रकाशन के व्यापार से उन्नति हो सकती है। वस्त्र व्यवसाय भी धन वृद्धि में सहायक हो सकता है। आपकी संतान यशस्वी और विद्वान होगी। जीवन साथी कर्मठ, सेवाभावी, व्यवहार कुशल, शान्तिप्रिय, खुले दिल का और समदृष्टि वाला होगा। माता-पिता का सहयोग और भाई-बहिनों का प्यार सदा आवश्यकतानुसार मिलता रहेगा। किसी एक निजी व्यक्ति से शत्रुता रह सकती है। २८से ३२ वर्ष के बीच कोई महत्वपूर्ण घटना घटेगी।

सिंहराशि छठे स्थान पर रहने के कारण निकट के परिवार के किसी सदस्य से (जिनके साथ खून का रिश्ता हो) शत्रुता उत्पन्न होगी। ज़मीन, स्त्री या संपत्ति उस शत्रुता का कारण बन सकती हैं। ईश्वर निष्ठा में कमी दिखाई देती है। कपटी झूठे व्यक्तियों से दूर रहनेवाले और मनुष्य प्रेम और भावनाओं के साथ रहने वाले लोगों के आप आराधक हैं। आपके कुछ कार्य अन्य लोगों को तकलीफ देनेवाले रहेंगे। अनेक कार्यों में धन का व्यय आपके हाथों से हो सकता है। आपकी स्तुति करनेवाले अनेक लोग हैं। संतान के पालन पोषण के कार्य के प्रति ज़्यादा ध्यान देना आवश्यक है। आपका जीवन क्लेशों से भरा हुआ रह सकता है। व्यावहारिक कार्यों में सदा बाधायें आती रहेगी। आपका जीवन यात्राओं से भरपूर रहना संभव है। गलत व भ्रष्ट नर-नारियों से हानि होगी। अधिक सतर्कता अनिवार्य है।

स्वास्थ्य की दृष्टि से आप निरोगी और स्वस्थ रहेंगे। स्वपरिश्रम से जीवन में प्रगति प्राप्त होगी। आप के दो कार्य क्षेत्र होंगे अर्थात दो अलग-अलग मार्ग से आमदनी होगी। आवश्यानुसार पर्याप्त धन संचय होगा। फिर भी आप अतृप्त रहेंगे। आप धन के अत्यागृहि हैं। इस कारण मन को कलुषित रखना योग्य न होगा। जीवन के उत्तरार्ध में अनिश्चित स्थिति से गुज़रना होगा। पूरे मनोबल के साथ उस परिस्थिति का सामना करना अपना कर्तव्य बन पड़ता है। जीवन के २०,२९,३२,४३,४७,५५ और ६१ वाँ वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

लग्नाधिपति बारहवें स्थान पर है। अनेक अनावश्यक कार्यों में समय का व्यय होगा। शारीरिक स्वास्थ्य में कमज़ोरी महसूस होगी। अकारण क्रोधित होना पड़ेगा। जुए इत्यादि से दूर रहना ही हितकर होगा। योग्य आमोद-प्रमोद की प्रक्रियाओं की ओर मन लुभायेगा। तन्त्र-मन्त्र पर अधिक श्रद्धा हो सकती है। काम और क्रोध पर उचित अंकुश रखा जाना चाहिए। अन्यथा बड़ी हानि का सामना करना पड़ जा सकता है।

आपके जन्मकुण्डली में शनि गृह का भाव पहली भाव में है और यह अच्छी सूचना नहीं है । दूषित वातवरण और संदेह युक्त दोस्तो से दूर रहना चाहिए ।

धन, भूमि और संम्पति

भूमि, सम्पति, धन, परिवार, बोली, भोजन आदि कुछ महत्वपूर्ण चीजे है जो दूसरी भाव द्वारा सूचित किया गया है ।

दूसरे भाव का अधिपति पाँचवे स्थान पर होने से संपत्ति उपार्जन कार्य में अति निपुणता प्राप्त होगी। परिवार में सुख की कमी महसूस होगी। दया और अनुकंपा कम दिखाई देती है। संतान वियोग से बचने के सभी उपाय जीवन के प्रारंभकाल से ही सोचना चाहिए। पारिवारिक कलह विकराल रूप न ले पाये, इसका ध्यान रखना ज़रूरी है। जीवन में आर्थिक प्रगति पर्याप्त होगी।

सूर्य दूसरे स्थान पर रहने से आप संतोषी और विनम्र रहेंगे। आप पक्षियों में चार पैरोंवाले जानवरों में तथा खेती काम में अभिरुचि रखनेवाले व्यक्ति हो सकते हैं। संपत्ति एकत्रित करने के कार्य में सफलता सदा आपका साथ देगी, यह भूलकर भी नहीं सोचना चाहिए।

बुध दूसरे स्थान पर रहने से साहित्य क्षेत्र में अनन्य प्रगति प्राप्त होगी। स्वपरिश्रम से धन कमाने में सफलता मिलेगी। आप श्रेष्ठ और स्वादिष्ट भोजन के इच्छुक हैं। कौटुँबिक सुख का आस्वादन प्राप्त होगा। वाणी में मधुरता होगी।

भाई/बहन

जन्मकुण्डली में उपस्थिति केन्द्र, त्रिकोंण था उच्च भाव में यह सूचित करता है कि अपने भाई - बहन, धैर्य और बुद्धि को सूचित करता है ।

तीसरा भावाधिपति तीसरे स्थान पर रहने से परिवार के अंगों के माध्यम से सुखानुभूति होगी। आप का प्रसन्नतापूर्ण व्यक्तित्व जीवन में ऐश्वर्य प्रदान करेगा। आपका पराक्रम सराहा जायेगा। प्रेक्टिकल कार्य में पूर्ण पारंगता प्राप्त होगी। हर परिस्थिति में प्रसन्न रहना आपका प्रमुख गुण होगा। संतान भाग्यशाली होगी। धन से सदा परिपूर्ण रहने का योग परिलक्षित हो रहा है। सब प्रकार के सुख सदा उपलब्ध होंगे।

तीसरे स्थान पर शुक्र होने के कारण जीवनसाथी से स्नेह मिश्रित व्यवहार संपन्न होगा। रीति-रिवाज़ और व्यवहार के कच्चे हैं। इस कारण अनेक आक्षेपों का सामना करना पड़ेगा। आपको कीर्ति, संपत्ति और दीर्घायु प्राप्त होगी।

तीसरे भाव के उपस्थित शुभ गृह आपके भाई - बहन को दीर्घयु प्रधान करता है ।

संपत्ति, विध्या क्षेत्र इत्यादि के विषय में।

चतुर्थ भाव, चतुर्थेश कारक और संबन्धित ग्रहों की योग, युतिदृष्टि के माध्यम से संपत्ति विद्या-बुद्धि, माता, भूमि , भवन और वाहन आदि का सूचित करता है। इस पत्रिका में इस विषय का विवरण निम्नांकित है।

आपके जन्मपत्रिका में चौथे भाव का स्वामी दूसरे भाव में स्थित है। इसलिए आप धैर्यवान, संतोषी, भाग्यवान और सुखी पुरुष होंगे। माँ से संपत्ति प्राप्त होने की संभावना है। कटुवचन से माँ और अन्य प्रियजनों को अंजाने में दुःखी करना आपका आदत है। इस आदत से जल्दी से जल्दी मुक्त होना आपके लिए अनिवार्य है। मधुरभाषी स्वभाव शत्रुनिर्माण से बचाता रहता है। अदम्य साहस सफलता में सहायक होगा।

चौथे भाव का मालिक बुध है। आप समाज मध्य तत्वचिंतक के रूप में, आदर्शवादी और बुद्धिजीवी के रूप में ख्याति और सम्मान प्राप्त करेंगे। यथायोग्य प्रोत्साहन के मिलने से हर कार्यक्षेत्र में आप प्रगति कर सकेंगे। बौद्धिक कार्यों में विशेष सफलता पाने का योग है। अतुलित कार्यशक्ति आप में छुपी हुई है। सफलता आप का साथ देती रहेगी।

केतु आपके चौथे भाव में स्थित होने से आपको माता तथा संपत्ति से अलग रहना पड़ेगा। दूर देश की यात्रा करनी पड़ेगी। जिससे आपको अच्छे अनुभव प्राप्त होंगे। जीवनकाल में अप्रत्याशित परिवर्तन का सामना करना होगा। आपको दूसरों के भाग्य के बारे में भविष्य बताने की विशेष शक्ति होगी। इससे किसी योग्यपद पर रहें तो जीवन में उन्नति प्राप्त होगी। 'सदा व्यग्रता च' चिन्ता से छुटकारा पाना कठिन जान पड़ता है। पिता से विशेष सुख की आशा न करना ही लाभप्रद होगा।

चौथे स्थान पर बृहस्पति के अनुकूल स्थिति में रहने से अन्य बुरे फलों के होने की संभावना न्यून हो गई है। भू, भवन, वाहन, संपत्ति और माता विषयक सुखों में वृद्धि होगा।

बच्चे, मन, बुद्धि

जन्मकुण्डली में उपस्थित पाँचवी भाव बच्चे, मन और बुद्धि को सूचित करता है ।

मंगल पांचवें स्थान पर रहा है। किसी महत्वपूर्ण कार्य के लिए एकाग्रचित्त से एकान्त में बैठने पर छोटे बच्चों की उपस्थिति आपको

विक्षिप्तता का अनुभव करायेगी। आपके प्रति गलतफहमी होने की संभावना है। आप संकुचित मन के हैं ऐसा माना जायेगा। छोटी-मोटी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। जीवन में एकाध बार स्वयं की या जीवन साथी की स्वेच्छा से सर्जरी होना संभव होगी।

पाँचवां भावाधिपति छठे स्थान पर रहने से संतान को शत्रुओं का सामना करने की संभावना है। वीरता, अनुशासन और ईमानदारी के कारण सम्मान प्राप्त करना सरल होगा। संतान निमित्त अनेक समस्याएं उठ खडी होंगी, जिसका आप को भी सामना करना होगा। संतान से मतभेद या केवल कन्या सुख होना संभव होगा। अथवा किसी अन्य बच्चे को गोद लेने की संभावना रखते हैं।

रोग, शत्रु , मुसीबतें

छठा भाव रोग, शत्रु और विधों को सूचित करता है ।

चन्द्र छठ्ठे स्थान पर रहा है। सामान्य आयु के मालिक हैं। उदर रोग बार-बार सतायेगा। आप जीवन में समझौता नहीं कर पायेंगे। आप सहनशीलता में कच्चे रहे हैं। सर्दी जुकाम संबन्धी बीमारी से बचकर रहना लाभप्रद होगा।

छठ्ठा भावाधिपति दूसरे स्थान पर रहने से आप पराक्रमशील हैं और कीर्ति के मालिक हैं। परदेश गमन की संभावना रखते हैं। आप मधुरभाषी हैं। आर्थिक स्थिति में परिवर्तन की संभावना है। आप सेहत से सशक्त और निरोगी रहेंगे।

वैवाहिक जीवन और सातवें स्थान की ग्रहदशा।

वैवाहिक जीवन से जुड़े हुए गुणदोष का निर्णय, सातवें स्थान, सप्तमेश, सप्तमकारक और अन्य ग्रहों की युति-दृष्टि के आधार पर किया जाता है।

सातवाँ भावाधिपति दूसरे स्थान पर है। विवाह के बाद आर्थिक परिस्थिति में उन्नति होगा । पत्नी ऐश्वर्यवान होगी। पत्नी के माध्यम से जीवन में प्रगति होगी। पत्नी का स्वास्थ्य निर्बल रहेगा। अथवा उनके स्वास्थ्य के कारण यदा-कदाचिंता होती रहेगी।

आत्मीयता पूर्ण मित्रों का अभाव रहेगा। रसपूर्ण यात्रा संभावित है। परिवार और स्वयं कलंकित होने की संभावना है। सूक्ष्म दृष्टि और योग्य सावधानी के अभाव के कारण अच्छे और बुरे व्यक्ति में भेद कर पाना मुश्किल होगा। इस कारण अनेक प्रकार के कष्टों को स्वयं निंमंत्रण देने के आदि हैं। अनेक अपवादों का कारण बनना होगा। निरपराधी होते हुए भी दण्डित होना पड़ेगा। उच्च अधिकारियों के अप्रिय व्यवहार से बचने के लिए स्वयं के कर्तव्य का ठीक से पालन कर हर विपरीत परिस्थिति में आप आत्मधैर्य से आगे बढ़नेवाले व्यक्ति हैं।

पूर्व दिशा से सुयोग्य जीवन संगिनी प्राप्त होने की अधिक संभावना है।

आपकी पत्नी गेहुंवर्णी, ऊँचे कद की सौन्दर्यवती युवती होगी।

शनि सातवें स्थान पर है। विवाह में विलंब और कुछ मुश्किलों का सामना करना पड़ेगा। विवाह के बाद पति पत्नी एक दूसरे के अधीन रहेंगे। जीवनसाथी के हाव-भाव, रूप-रंग, आकृति-प्रकृति इत्यादि की कल्पना मन में है जो आप किसी के सामने व्यक्त नहीं करते। आप का विवाह संजोगाधीन हुआ है। आप एक परिश्रमशील कार्यकुशल पुरुष है। आप का निवास स्थान दूर देश में होना संभव है। सुदृढ़ वैवाहिक जीवन प्राप्त होगा। राष्ट्रीय कार्यों में सफलता मिल सकता है। अनेक सम्मानपूर्ण पद की उपलब्धी दिखाई देते है। सिरदर्द से सावधान रहना आवश्यक है। सिर रोग के लक्षण प्रकट होते ही डाक्टरी सलाह-सूचना प्राप्त करना आपके लिए अनिवार्य है। विवाह की बात एक से अधिक स्थानों पर होना संभव होगा। जीवन साथी में गांभीर्य व प्रौढ़ता होगी।

चन्द्र गुरु के स्वाधीन है। इस कारण आपका वैवाहिक जीवन मंगलमय और सुखद् रहेगा। यह निश्चित है।

दीर्घायु , मसीबतें

आठँवा भाव दीर्घायु, बैध्य चिकित्स और मुसीबतों को सूचित करता है ।

आठवाँ भावाधिपति तीसरे स्थान पर रहने से स्वजन और मित्रों से यथा समय पर सहायता से वंचित रहना पड़ेगा। उदासीन रहना पड़ेगा। सहकर्मचारियों से या परिवार के सदस्यों से ज़्यादा अपेक्षा रखना दुःख का कारण बन सकता है। आलस्य के कारण सफलता दूरतम् होती जायेगी।

भाग्योदय, अनुभूतियाँ और पैत्रिक उपलब्धियों का विवरण।

नवमा भावाधिपति पाँचवे स्थान पर है। आपके पिता के लिए उत्तम लाभ का संकेत है। स्वसंतान के लिए सफलता सुनिश्चित है। पिता के स्थान पर रहकर आप गौरव का अनुभव कर सकते हैं। ग्रंथ कर्ता, विद्वान अथवा ईश्वरोपासक के रूप में यशस्वी होना संभव है।

नवमा भावाधिपति दुर्बल होने के कारण अनेक प्रतीक्षित सुखद अनुभवों से वंचित रहना पड़ेगा।

लाल रंग के कपडे पहनना या लाल रंग से मिश्रित छाया वाले कपडे पहनना आपके सद् भाग्य के लिए कारण बन सकता है। यह रंग आपको धैर्य से कठिनाइयों का सामना करने में बहुत मात्रा में मदद रूप होगा। लाल रंग का माणिक पत्थर पहनना आपके लिए उचित होगा। अनेक समस्याओं का निवारण अपने आप हो जायेगा। मुश्किलों का सामना करने में धैर्य और शौर्य प्राप्त होगा। यह आपको अधिक लाभ भी पहुँचायेगा। उष्णता युक्त और धारवाले उपकरण उपयोग करने वालों के लिए लाल रंग का माणिक्य पत्थर लाभदायी रहता है।

पेशा

फलदीपिका के श्लोको के अनुसार दसवी भाव व्यापार, श्रेणी था पद, कर्म, जय - विजय, कीर्ति, त्याग, जीविका, आकाश, स्वभाव, गुण, अभिलाषा, चाल था गति और अधिकार को सूचित करता है ।

सरर्वात्त चिन्तामणि के अनुसार ज्योतिषियों को दसवी भाव से काम (उधोग) अधिकार, शक्ति, कीर्ति, वर्षा, विदेश राज्यों में जीवन, त्याग का मनोभाव, सम्मान, आदर, जीविका मार्ग, व्यवसाय या पेशा, को निर्णय करना चाहिए । आपके लिए सूचित किए गए ज्योतिष सम्बधित व्यावसाय और पेशा के अन्तर्दृष्टि को दसवी भाव, उसमें उपस्थित अधिपति, गृह, सूर्य और चन्द्र का स्थान आदि तत्वों के विश्लेषण के द्वारा प्रस्तुत किया गया है ।

आपके जन्मकुण्डली में दसवी भाव के स्वामी को बारहवी भाव पर स्थान दिया गया है । ब्रिहत्त पारासरा होरा के श्लोक यह सूचित करता है कि आपको सरकारी काम काज के बावजूत धन-नष्ट होगा । आपको अपने शत्रुओं पर भय होना चाहिए । आप चतुर और बुद्विशाली है लेकिन अनावश्यक कार्य के लिए चिन्ताग्रस्त रहते है ।

दसवी भाव धनु राशी है । यह गुरु के नियंत्रण में है । बैंक, विध्यालय, वकालत, मंदिर, पुस्तक बिक्रेता, गिरजाघर, गवेषक, पुरोहित, न्यासी, वकील, विद्वान, परामर्शदाता और इसी प्रकार का अन्य उघोग आपके लिए सूचित किया गया है ।

आपके जन्मकुण्ली में राहु दसवी भाव में उपस्थित है।
मन्त्रेसवरा के अनुसार आप प्रसिद्व होगा । आप बच्चे के साथ मिले जोल ज्यादा पसन्द नहीं करते । आपको दूसरो की व्यापार में शमिल होने की झुकाव है । आप निर्भय है । आप महत्व पूर्ण शक्ति शाली पदों पर पहुँचने के लिए काम करेगा । आज जल्दी धन कमाता चाहते है ।

जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के स्थानों के आदार पर प्रस्तुत किए गए विश्लेषण के अलावा कुछ साधारण विधि नीतियाँ भी जन्म नक्षत्र से प्राप्त कर सकते है । आपके जन्म नक्षत्र से सम्बधित उधोग क्षेत्र निम्नलिखित है ।

कारखानों में प्रबन्धक का पद, रसायनिक इंजीनियरिंग, रसायनिक उत्पनों का व्यापार, वकील, प्रतिरक्षा विभाग, सर्जन, राजत्यन्तर स्वास्थ्य सेवाएँ, गहने, बिजली द्वारा चाँन्दी सोना आदि चढ़ाना ।

आपके जन्मकुण्डली में सूर्य उच्च स्थान पर खड़ा है । सफलता आपके लिए निश्चित है ।

आमदनी

ग्यारहवी भाव आमदनी और आमदनी के मार्गें को सूचित करता है ।

ग्यारहवें भावाधिपति के सातवें स्थान पर रहने से विवाह के बाद अनेक प्रकार की प्रगति की संभावना है। जीवनसाथी की अभिरुचि की ओर ज़्यादा झुकने के आदि हैं। स्वभाव से आप एक श्रेष्ठ और उदार व्यक्ति हैं। विवाह के बाद आर्थिक उन्नति विशेष रूप से होगी।

ग्यारहवी देव केन्द्र स्थान पर है । आप धन और संम्पति पा सकते है ।

खर्च , व्यय, नष्ट

बारहवी भाव खर्च और नष्ट के बारे में सूचना देते है

बारहवाँ भावाधिपति सातवें स्थान पर रहने से जीवनसाथी के लिए या उसके कारण धन खर्च होगा। स्वास्थ्य में अभाव महसूस होगा। सुख की मात्रा कम रहेगी। विद्या प्राप्ति में बाधायें मार्ग अवरुद्ध करेगी। अन्ततः सफलता प्राप्त होगी।

गुरु बारहवें स्थान पर रहा है। इस कारण आप ज्ञान संपन्न व्यक्ति बनेंगे। धन का खर्च होनेवाला है। उसके लिए पूर्व तैयारी योग्य होगी। व्यर्थ की झंझटों को मोल लेने की बुरी आदत है। छोटे बच्चों के मानसिक और शारीरिक विकास के प्रति ज़्यादा ध्यान देना आवश्यक है। आप भाग्यशाली व्यक्ति हैं।

दशा अपहार फल

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार मानव जीवन को भिन्न दशाओं में विभाजित किया गया है। ग्रहों के स्थान और स्थिति के अनुसार योग और योगों की शक्ति के अनुसार दशा-फल होता है। सत्ताईस नक्षत्रों को तीन तीन के समूह में बांट कर नौ दशाओं में विभाजित किया गया है। इनके अधिकार के समय को दशा कहते हैं। बच्चों के जो अप्रायोगिक फल होते हैं वे माँ-बाप को बाधक होते है। उसी तरह पति-पत्नी के बारे में भी फल का निर्णय करना है। तालिका देखकर दशाओं का आरंभ और अंत समझ लेना है। सप्तवर्गों के आधार पर ग्रहों का बलाबल निश्चित किया गया है।

शुक्र दशा

पहले किए हुए अच्छे कार्यों से इस दशा में सुख-सुविधा और समृद्धि प्राप्त होगी। पारिवारिक जीवन सुखमय रहेगा। कलाओं में विशेष रुचि होगी। अपने उद्देश्यों की प्राप्ति इस दशा में हो जायेगी। अच्छे कर्मों का अच्छा फल आपको मिलेगा। भिन्न भिन्न सवारियों से कई स्थानों की सैर का आनन्द आपको मिलेगा। कभी कभी दूसरे लोगों की ईर्ष्या भी आप के लिए बाधा बनेगी। संबन्धियों से अलग रहना पड़ेगा। कभी कभी मन की अशान्ति भी अनुभव होगी। विवाह के युक्त आयु होने पर ही जीवन साथी चुनने का योग्य समय माना जा सकता है। पत्नी समेत आनंदमय जीवन व्यतीत होगा। आयु अनुसार सुखद दांपत्य जीवन और संतान प्राप्ति का योग है। दुष्ट व चरित्रहीन व्यक्तियों से दूर रहना ही उचित होगा। सम्मान मिलेगा।

शुक्र बलवान स्थिति धारण किये हुए है। इस कारण अनेक शुभ फल प्राप्त होने की संभावना है। सुख व यश में वृद्धि होगी।

अपना जीवन आनन्दमय बनाने के लिए कलात्मक वस्तुओं को इकट्ठा करने में आपको विशेष रुचि होगी। इस दशा में दूसरों की सहायता से सफलता प्राप्त होने की अपेक्षा रखनेवाले हैं। मन बहलाने वाली प्रेममय घटनाएँ उत्पन्न होगा । परिवार में विवाह आदि त्योहार मनाया जायेगा। औरतों के सहयोग से आपकी उन्नति होगी। अनुराग, प्रीति, वात्सल्य और मृदुल भाव मानसपटल पर उभरेंगे।

∇ (04-09-2019 >> 04-09-2022)

शुक्र दशा में राहू की अन्तर्दशा के योग से नटखट बच्चों से मिलाप होगा। अपने सम्बन्धियों को खतरे से गुज़रना होगा। विद्यालय के आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेने का अवसर प्राप्त होगा। उस में सफलता भी प्राप्त होगी। अभ्यास क्षेत्र में सम्मानपूर्ण स्थान भी प्राप्त होगा।

∇ (04-09-2022 >> 05-05-2025)

शुक्र दशा में गुरु की अन्तर्दशा के योग से मन पसंद पकवान सुलभता से प्राप्त होंगे। समुदाय के बीच मान्यता प्राप्त होगी। प्रोत्साहन दिलानेवाले व्यवहार जारी रहेंगे। विद्यालय में अभ्यास के कार्य में सुधार होगा। इस समय अनेक प्रकार से सफलता या प्रगति उपलब्ध होगी।

∇ (05-05-2025 >> 05-07-2028)

शुक्र दशा में शनि की अन्तर्दशा के योग से अनेक प्रकार के व्यर्थ कार्यों के प्रति अनुराग जाग्रत होगा। बाद में पछताने का वक्त आयेगा। अपनी उम्र से ज़्यादा उम्र के व्यक्तियों के साथ अबांधित कार्यों के माध्यम से जुड़ना होगा। यह समय अनेक प्रकार की प्रतिकूलता से भरा पड़ा है, यह स्मृति में तो योग्य होगा। यह होते हुए भी आपके शत्रु आपको पराजित नहीं कर पायेंगे। कुछ सुखद घटनाऐं घट सकती है। आप विदेश में वसे होंगे तो प्रगति सुनिश्चित है।

∇ (05-07-2028 >> 05-05-2031)

शुक्र दशा में बुध के अपहार में धन प्राप्त होगा। स्थायी संपत्ति में वृद्धि होगी। आप अच्छा नाम और प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे। आपकी प्रतिष्ठा एवं योग्यता बढ़ेगी। विशेष स्थान प्राप्त होगा। सफलताओं की श्रृंखला आपके लिए उपस्थित होगी। विवाह और संपत्ति विषयक कामों में सफलता प्राप्त होगी।

∇ (05-05-2031 >> 05-07-2032)

शुक्र दशा में केतु के अपहार में आप को छोटे-मोटे झगड़ों का सामना करना होगा, वाद-विवाद होगा। किसी कारण के बिना शत्रुता बढ़ेगी। पर आप के विरोधी कष्ट भोगेंगे। आपके विचार और कर्म में भेद होगा। संभावनायें उत्पन्न होगी। प्रतियोगिता में असफलता प्राप्त होगी। यदि आप अविवाहित हैं तो परम्परा से भिन्न प्रकार का प्रणय संबन्ध स्थापित हो सकता है। इस संबन्ध में विशेष सतर्कता अनिवार्य है।

सूर्य दशा

इस दशा में अत्याग्रही बनकर धन कमाने की इच्छा होगी। दयाभावना की मनोदशा क्षीण होगी। विरोधियों का होना संभव है। उनपर विजय प्राप्त होने की संभावना है। आत्मप्रशंसा सुनना पसन्द होगा। परिवार की भलाई के लिए काम करना प्रिय होगा। परिवार में उन्नति और श्रेय प्राप्त होगा। इस दशा में जानवरों या ज्वर से पीड़ा होने की संभावना है। आंखों, दाँतों और पेट संबन्धी रोग हो सकते हैं और अभी से उनपर ध्यान देना अच्छा होगा। पारिवारिक जीवन पर ज़रा अधिक ध्यान देना होगा। पूज्य जनों तथा अन्य प्रधान व्यक्तियों से मतभेद होने की संभावना है। अपने अधीन में काम करनेवाले लोगों की वजह से आर्थिक संकट में पड़ सकते हैं। आप यदि शिक्षण कार्य में लगे हुए हैं तो श्रेष्ठ उपाधि और सम्मान प्राप्त होने की संभावना है। यात्रा होने का योग बनेगा।

सूर्य सप्तवर्गीय बल से युक्त है। वृद्धि, अधिकार, धन, लाभ, आत्मबल, वृद्धि के साथ-साथ घर परिवार में नये सदस्य का आगमन भी संभव है।

इस दशा में मानसिक और आत्मीय कार्यों में सिद्धि प्राप्त होगी। विरोधियों को जीतना आसान होगा। खूब सैर करने की संभावना है। अपने पिता की पदोन्नति होगा या पूज्य जनों से आपकी उन्नति होगी। आप को पदोन्नति और प्रसिद्धि मिलेगी। लकड़ी, कपड़े या औषधियों का व्यापार भी लाभदायक हो सकता है। शक करने की आदत से मुक्त होना लाभदायक होगा।

∇ (05-07-2032 >> 22-10-2032)

सूर्य दशा में सूर्य की अन्तर्दशा में आर्थिक उन्नति होगी। उच्च अधिकारियों से प्रोत्साहन प्राप्त होगा। पर संबन्धियों से तकलीफ़ होती रहेगी। वे मन को दुखानेवाली परिस्थिति उत्पन्न करेंगे। रोज़ के खर्च में बढावा होगा। खर्च पर नियंत्रण स्थापित करना आपके लिए कठिन होगा।

∇ (22-10-2032 >> 23-04-2033)

सूर्य दशा में चन्द्र की अन्तर्दशा में आप शान्ति प्रिय बनेंगे। आप अपने शत्रुओं से भी कुशलता पूर्वक व्यवहार करेंगे। आप सभी कार्यों में अग्रणी हो जायेंगे। आपको सब तरह के ऐश्वर्य प्राप्त होंगे। विचारणीय कार्यों में सफलता मिलेगी।

∇ (23-04-2033 >> 29-08-2033)

सूर्य दशा में मंगल की अन्तर्दशा में आपको उच्च अधिकारियों का सहयोग प्राप्त होगा। आपकी स्वाधीनता बढ़ेगी। आप को पुरस्कार, वेतन में वृद्धि तथा जन समूह बीच सम्मान प्राप्त होता रहेगा।

∇ (29-08-2033 >> 23-07-2034)

सूर्य दशा में राहू की अन्तर्दशा में आपके मन में शंकाएँ होती रहेगी। खर्च में वृद्धि का योग है। रक्त की कमी से होनेवाला पीलेपन या वात संबन्धी रोग होने की संभावना है। व्यय हमेशा बढ़ता रहेगा। अपने कार्यक्षेत्र से वंचित होने का भय सतायेगा। अपने पूज्य जनों की तन्दुरुस्ती के लिए मन चिंतित रहेगा।

∇ (23-07-2034 >> 11-05-2035)

सूर्य दशा में बृहस्पति के अपहार में आप की तन्दुरुस्ती अच्छी रहेगी। आप अपने सभी कार्यों में सफलता प्राप्त करेंगे। आपके शत्रु और आपकी बुराई करने वाले कुछ न कर पायेंगे। उन्नति और प्रगति आपका साथ देगी। प्रत्येक काम में आशातीत सफलता प्राप्त होगी।

∇ (11-05-2035 >> 22-04-2036)

सूर्य दशा में शनिचर के प्रहारों में कष्ट और परेशानी का सामना करना होगा। आपको भय रहेगा कि आपकी शक्ति और योग्यता नष्ट हो रही है। दूसरों की सहायता एवं आदर प्राप्त होने की आशा निराशा में परिणित होगी। आप स्वयं उदास रहेंगे। आंखों की जाँच करवाना लाभदायी होगा। अपने नियंत्रण में रही हुई वस्तु से वंचित होना पड़ेगा। आलस्य की अधिकता से बचपाना संभव नहीं जान पड़ता।

∇ (22-04-2036 >> 27-02-2037)

सूर्य दशा में बुध की अन्तर्दशा में चर्मरोग हो जाने की संभावना है। काम में ध्यान न रहना भी अनुभव होगा। यह स्थिति आगे बढ़ेगी तो आपको अनेक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा। अनेक खण्डनात्मक कार्यों की ओर मन लुभायेगा। इसलिए सावधान रहना उचित होगा। अध्ययन, लेखन और प्रकाशन संबन्धी कार्य में सफलता सरलता से प्राप्त होगी।

∇ (27-02-2037 >> 05-07-2037)

सूर्य दशा में केतु की अन्तर्दशा में आपको अपना वर्तमान स्थान छोड़कर किसी दूर देश में जाने का विचार होगा। अपना सब कुछ छोड़कर जाने की इच्छा होगी। कई कार्य आप के विरुद्ध एवं असंतोष पैदा करनेवाले होंगे। रुकावटें और निराशाएँ अधिकाधिक होती रहेगी। मन को दृढ़ रखने की कोशिश करना हर मनुष्य का कर्तव्य हैं। आत्मविश्वास बढाने की चेष्टा करें।

∇ (05-07-2037 >> 05-07-2038)

सूर्य दशा में शुक्र के अपहार में आपको शारीरिक स्वास्थ्य की थकावट और निर्बलता का अनुभव होगा। समय समय पर सिरदर्द भी होता रहेगा। आप अपने कार्य क्षेत्र में प्रगति प्राप्त कर पायेंगे। खेलकूद, मनोरंजक यात्रायें और प्रणय संबन्धों में गति तेज होना संभव है। सतर्क रहें।

चंद्र दशा

इस दशामें आध्यात्मिक और भक्ति कार्यों में आपका अधिक ध्यान बंट जाएगा। उससे सुख और शान्ति मिलेगी। अपनों से बड़ों का आदर किया जायेगा। सुख और समृद्धि बढ़ेगी। औरतों से मिलजुल कर रहने का स्वभाव रहेगा। खान-पान में कुछ नियमित परिवर्तन होगा। अपनी तन्दुरुस्ती की तरफ़ ज़्यादा ध्यान देना है। थकान का अनुभव होने की संभावना है। शरीर की सन्धियों में दर्द हो सकता है। नये मकान के निर्माण और ऐश्वर्य प्राप्ति का योग है। परिवार में विवाह कार्य होने की संभावना है। युवतियों की ओर आकर्षित होने की संभावना है। हड्डियों की बीमारी से बचते रहना अच्छा है। माता से संबन्धित फल प्राप्त होने की संभावना है। २० से ३० वर्ष की आयु के मध्य यदि यह दशा पड़े तो इस दशा में विवाह होने व संतान सुख प्राप्ति का सुयोग प्राप्त होता है।

चन्द्र केसरी योग के कारण अति बलवान रहेगा और अनेक प्रकार की अनुकुलता का निर्माण करेगा। धन, प्रमुखता और ज्ञान प्रदान करने में चन्द्र की महत्वपूर्ण भूमिका रहेगी।

सुखीजीवन, मन उमंग और उत्साह से भरा रहेगा। पहले से अधिक शान्ति और सुख का अनुभव होगा। फूलों से और सुगन्धित वस्तुओं से आनन्द मिलेगा। पदोन्नति और आमदनी में वृद्धि होगी। दूसरों से विशेषकर औरतों की सहायता प्राप्त होना संभव है। चाँदी, मोती, रत्न, ईख, जल आदि सफ़ेद वस्तुओं से लाभ मिलने की संभावना है। श्रेष्ठ फल पश्चिमोतर दिशा से प्राप्त होगा। मिठाई खाने का योग है। समुद्र तल से मिलनेवाली वस्तुओं से लाभ होगा।

∇ (05-07-2038 >> 05-05-2039)

चन्द्र दशा में चन्द्रमा की अन्तर्दशा में विवाह आसानी से हो सकता है। बच्चे के जन्म के लिए भी यह अच्छा समय होता है। पारिवारिक जीवन भी अच्छा रहेगा। अपने प्यारे मित्रों से पुरस्कार एवं सहकारिता प्राप्त होगी। मनोरंजन के लिए भी समय प्राप्त होता है। माँ के लिए भी अच्छा समय है। आमोद प्रमोद विषय में भी यह समय उत्तम फल कारक होगा।

∇ (05-05-2039 >> 04-12-2039)

चन्द्र की दशा में मंगल की अन्तर्दशा में आप को आग से कष्ट होने की संभावना है। इसलिए सावधानी से रहना अच्छा होगा। व्यापार में लगे हुए हैं तो सावधानी के रूप में बीमा निकालना लाभदायी हो सकता है। स्थान को बदलना या तबादले की संभावना है। अनेक अपवादों और ईर्ष्यालु व्यक्तियों का सामना करने की तैयारी कर लेना अच्छा होगा।

∇ (04-12-2039 >> 04-06-2041)

चन्द्र दशा में राहू की अन्तर्दशा में आपको मानसिक विषमताओं का सामना करना पड़ेगा। उनमें से अधिकतर अकारण ही होती रहेगी। परेशानी के लिए दूसरा कारण है बीमारी और शत्रुओं का आक्रमण। आँधी या वर्षा के समय में यात्रा करने में सावधानी रखनी पड़ेगी। आपके मित्रों एवं संबन्धी लोगों के कारण मन की शान्ति नष्ट होगी। उनके सुख दुःख की चिन्ता सतायेगी।

∇ (04-06-2041 >> 04-10-2042)

चन्द्र दशा में बृहस्पति की अन्तर्दशा में आप आदर्शों में पहले से ज़्यादा स्थिर बनेंगे। निवासस्थान की सुविधा बढ़ाने तथा नवीनीकरण के लिए आप धन और समय दोनों का उपयोग करेंगे। व्यक्तिगत रूप से सौन्दर्य का भी लालन पालन होगा। आप के प्यारे मित्रों का संपर्क एवं सम्मान आपको प्राप्त होगा। मन को आनंद और उत्साह प्राप्त करानेवाले मेहमानों का आगमन होगा। अनेक तरह के उपहार प्राप्त होने का योग है। सचमुच यह आपके लिए श्रेष्ठ समय है।

∇ (04-10-2042 >> 05-05-2044)

चन्द्र दशा में शनि की अन्तर्दशा में आपके निकट संबन्धियों का व्यवहार निराशा जनक होगा। शारीरिक अस्वास्थ्य, शायद दुर्घटनाएँ भी हो सकती हैं। आपको किसी न किसी कारण से माँ की दूरी सहनी पड़ेगी। इस काल में अनेक अप्रतिक्षित घटनाओं का सामना करना होगा। इच्छा के विरुद्ध अनेक कार्यों का सामना करना पड़ेगा।

∇ (05-05-2044 >> 04-10-2045)

चन्द्र दशा में बुध के अपहार में आपको चिरस्मरणीय अच्छे अच्छे कार्य बनते दिखाई देंगे। आपके उद्देश्य से अधिक विजय सभी कार्यों में प्राप्त होगी। आपके मन में कोई विशेष लक्ष्य हैं तो दृढ़ता तथा इच्छाशक्ति लगाकर सफलता प्राप्त करने का यह अच्छा समय है। घर में मांगलिक कार्य होने की संभावना भी जान पड़ती है।

∇ (04-10-2045 >> 05-05-2046)

चन्द्र दशा में केतु के अपहार में मन निर्भयता से भर जायेगा। यह होते हुए भी चपल वृत्ति जागृत होगी। कष्ट-परेशानियों से रक्षा पाने के लिए हर एक कदम बड़े ध्यान से रखना होगा। सफलता के लिए पर्याप्त परिश्रम करना होगा।

05-07-2048 से प्रारंभ होता है

मंगल दशा

इस दशा में बहुत सा धन कमाया जाएगा। कठिन परिश्रम भी करना पड़ेगा। पशु पक्षियों से बड़ा लाभ होगा। बच्चों या भाइयों से झगड़े हो सकते हैं। दुराचारी औरतों के संपर्क में रहने की संभावना है। फिज़ूल खर्च होनेवाला है। आग से नुकसान न होने के लिए ध्यान देना होगा। शरीर में थकावट और पीलापन होने की संभावना है। स्वास्थ्य का बराबर परीक्षण कराना अथवा आवश्यक दवाएँ लेना उचित रहेगा। सामान्यतः यह दशा सुखमय रहेगी और आपकी आशाओं की पूर्ति करेगी। धन संपादन कार्य में अभिरुचि रहेगी। पिता और गुरुजन के प्रति अभद्र व्यवहार करने की संभावना है। मलिन और हीन वृत्ति के लोगों से मिलना जुलना पड़ेगा। व्यर्थ के धन खर्च से बचना उचित होगा। अग्नि और दुर्घटना से बचते रहना होगा। कुज की दशा में पुरुष अति उन्नति प्राप्त कर सकता है। पत्नी और पुत्र के साथ झगड़ा हो सकता है। अकारण क्रोधित होने की संभावना है। सामान्य सर्जरी की आवश्यकता पड़ सकती है।

मंगल जन्म कुण्डली में बलवंत रहता है तब अनुकूल स्थिति पैदा होती है और जातक अनेक शुभ फल प्राप्त करता है। राज्य-भूमि, धन और वाहनादि की प्राप्ति सरलता से हो सकती है। मित्र व बन्धुओं का सहयोग मिलेगा।

भाई और उच्चधिकारियों से बहुत सहायता प्राप्त होगी। अन्य लोगों से भी सहयोग और सुविधाएँ प्राप्त होगी। यह दशा काल बहुत लाभदायक होगा। अधिकारियों का अनुमोदन प्राप्त होगा। सेना, पुलिस या इसी प्रकार के अनुशासित विभागों से संपर्क हो सकता है। इस दशा में आपकी पदोन्नति होगी। ज़मीन, सोना ताम्बा, आभूषण आदि मिलेंगे। दक्षिण की ओर यात्रा करने और लाभान्वित होने की संभावना है। स्वस्थ शरीर और स्वच्छता में विश्वास रहेगा। अपनी दृढ़ता से अपना जीवन धन्य होगा। नये मकान के निर्माण कार्य में अभिरुचि जागेगी। हर विपत्ति का सामना करने में आप समर्थ हैं।

05-07-2055 से प्रारंभ होता है

राहु दशा

राहु जुआ और कल्पनाओं का देवता है। इस दशा काल में व्यक्ति के व्यवहार में परिवर्तन और बुराइयाँ आ सकती है। परिवार के लोग और साथी लोग आपको शंका की दृष्टि से देखेंगे। इस काल में किसीसे झगड़ा न हो इसकी ओर ध्यान देना है। रोगों से पीड़ा होने की संभावना है। विषबाधा से बचने की कोशिश करनी है। विरोधियों से आपको सामना करना होगा। रिश्तेदार भी विरोधी बनने की संभावना रखते हैं। उच्च अधिकारियों का अनुग्रह कम होगा। गले में दर्द और आँखों के रोग होने की संभावना है। ई.एन.टी डाक्टर के उपदेश के अनुसार रोग होने से पहले ही उपचार करना अच्छा होगा। राहु सब के लिए एक सा नहीं होता। अच्छे स्थान पर हो तो सन्तान सुख, समृद्धि और सब प्रकार के ऐश्वर्य देनेवाला होता है। चर्म रोग से पीड़ा अनुभव होगी। विवाहित होने पर पत्नी और संतान का कुछ दुख सहना होगा। राहुदशा जब बालावस्था काल में आती हैं तो अभ्यास क्षेत्र में विक्षेप अनुभव होता है। दांत की पीड़ा हो सकती है। ज़हरीली वस्तुओं से बचना आवश्यक है। सचेत रहना होगा। शत्रुओं के आक्रमण से सजग रहना होगा। बड़ों से मिलते सहयोग में क्षति होगी। इस काल में भक्तिपूर्ण जीवन शाँति प्रदान करता है। धन की अल्पता मानसिक सुख की कमी, असंतोष की अधिकता, शत्रु से विवाद और अत्यधिक आपसी आदि फल प्राप्त होंगे।

05-07-2073 से प्रारंभ होता है

गुरु दशा

इस दशा में परिवार के सदस्यों, साथियों और अन्य लोगों की सहायता प्राप्त होती है। उनकी सहायता से आपकी बड़ी उन्नति होगी। परिवार के बड़े या ऊपर के अधिकारियों का अनुकूल भाव बना रहेगा। बच्चों तथा मित्रों का स्नेह और प्यार आपको मिलेगा। इष्ट जनों से अलग रहना पड़ेगा। ई.एन.टी से संबन्धित रोग के लक्षण प्रकट होते ही डाक्टर से संपर्क करना उचित होगा। कानों में कोई न कोई रोग होने की संभावना है। जीवन में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त होगा। सफलता की चोटी पर पहुँचेंगे। अविवाहित लोगों के लिए विवाह के लिए और संतान प्राप्ति के लिए यह उचित समय माना जाता है। कोई सरकारी कार्य आपके हाथों में सौंपा जायेगा। सफलता और कीर्ति आपके पाँव चूमेगी। उच्च अधिकारियों से और बड़ों से प्रशंसा प्राप्त होगी। वे आपके कार्य से संतुष्ट होंगे। मित्रजनों से आनंद मिलेगा। यह सुख होते हुए भी कुछ मित्रों से बिछड़ना पड़ सकता है। गुरुदशा का आरंभकाल कष्टमय और अंतिम काल सुखद हो सकता है।

ग्रह दोष और उपाय

कुजदोष

जन्मपत्रिका में मंगल के प्रभाव को महत्वपूर्ण दृष्टी से देखा जाता है। मंगल या कुज विवाह संबन्धी कार्यों पर अपना प्रभाव डालने वाला होता है। जब मंगल जन्मकुंडली के सातवें या आठवें स्थान पर रहता है तो अमंगलकारी या दोषयुक्त माना जाता है। शास्त्रोक्त ग्रन्थों के आधार से यह पता चलता है कि सातवें या आठवें स्थान पर रहते हुए मंगल, दोष ग्रस्त होकर भी उसका प्रभाव खास कारण से क्षीण हो जाता है या अप्रिय हो जाता है। कुज दोष या मंगलदोष को समझने के लिये यहाँ विस्त्रित रूप से विश्लेषण किया गया है। निम्न लिखित बातों से पता चलता है कि आपकी जन्मपत्रिका में मंगल किस प्रकार शुभ-अशुभ फल उत्पन्न करता है।

इस जन्मपत्रिका में मंगल, जन्म कुंडली में पंचम स्थानपर रहा है।

लग्न स्थान के हिसाब से यह जन्मकुंडली कुज दोष या मंगलदोष से मुक्त है।

जन्मकुंडली में लग्न स्थान की अपेक्षा मंगलदोष का विश्लेशण किया गया है।

यह जन्मकुंडली मंगल दोष से मुक्त है।

उपचार

जब तक आपके कुंडली में कुज दोष नहीं हैं आपको किसी तरह के कोई उपायों को करने कि जरुरत नहीं हैं।

राहु दोष और केतु दोष

राहु और केतु अस्पष्ट ग्रह है। उनकी ग़ति परस्पर संबंधित है और एकही अंग के भाग होने के कारन सभी समय वह एक दुसरों कें विरूद्ध है किन्तु दृष्टि सें विचार करते हुए, वह एक दुसरों सें संबंधित है।

सामान्य रूपसें, राहु सकारात्मक है और गुरूकें प्रती लाभदायी है और इसलिए वह विकास और स्व-मदद कें लिए कार्य करता है और केतु बंधन और शनीकें विघ्न दर्शाता है और इसलिए विकास में बाधा लाता है। इसप्रकार, राहु सकारात्मक उद्देश्य दर्शाता है और केतु विकास की सहज संधि दर्शाता है।

इसलिए, राहु भौतीकवाद और इच्छा सूचित करता है, तथा केतु आध्यात्मिक प्रवृत्ति और भौतीकवाद क़ी सुक्ष्मता प्रक्रिया दर्शाता है। राहु को कपट, धोखा और बेईमानी कें लिए माना जाता है।

राहु दोष

आपकी जन्मकुंडली में राहु दोष नही।

राहु दोष कें उपाय

आपकी जन्मकुंडली में राहुदोष न होने सें, आपने कुछ उपाय करनें की जरूरत नही।

केतु दोष

आपके परिवार की प्रतिष्ठा और आनन्द आपकी मेहनत और मन की स्थिती इनपर निर्भर है। आपकों पिता सें कम लाभ मिलेंगे। आपके समर्पी त प्रयास आपकों घर, जमिन और गाडी पाने में मदद करेंगे। आपका साथी माँ के बाद आधार देने वाली रहेंगी और जीवन के लिए शुभ रहेंगी। आपकों जादा जिम्मेदारी उठानी पड सकती है। अनावश्यक विचार टालनें सें आप भाग्य का आनन्द लेगें। प्यारे इन्सान के साथ हमेशा विनयशील रहे और किसी भी मित्र सें धोखा मिलने न दे। आपकों हार्मोन विकार के लिए दवा लेनी पड सकती है।

लाभदायी ग्रह गुरू का आपकी जन्मकुंडलीपर प्रभाव है,जो उपर दिये गयें लाभ बढाता है और अशुभ प्रभाव कम करता है।

केतु दोष हेतू उपाय

केतु दोष के बुरे परिणाम कम करने हेतू, आप निचे दिये उपाय कर सकते है।

सफेद कपडे की बॅग में कुछ ग्राम चना लें और सोने से पूर्व उसे तकिए के निचे रखे। आपने वह सुबह उठकर कौवे को डालने चाहिए। ऐसे लगातार ९ दिन करें, और अंतीम दिन भगवान गणेशजी के मंदीर में शाम में दर्शन लें । स्वेच्छा सें दान करकें परिक्रमा करें।

केतुकवचयंत्र लेकर समर्पी त भाव सें पहने।

केतु कें लिए आराधना देवता - भगवान गणेश और हनुमान. उनकें मंदीर में दर्शन लेके स्वेच्छा सें दान करें।

घरमें सुदर्शन चक्र रखे और केतु दोष के परिणाम कम करने हेतू निचे दिया श्लोक पढें।

अस्मिक मंडले अधिदेवता
प्रथ्याधिदेवता साहिथम
केकीग्रम धयायामि आवाहायामी

श्रीं ॐ नमो भगवती श्री शूलिनी
सर्व भुतेश्वरी ज्वाला ज्वाला मायी सुप्रदा
सर्व भूतादि दोषाया दोषाया
केतुरग्रह निपीडीताथ नक्षत्रे
राशोजाथाम सर्वनाम मम
मोक्ष मोक्ष स्वाः

परिहार

नक्षत्र परिहार

क्योंकि आपने मगह नक्षत्र में जन्म लिया है आपका नक्षत्र अधिपति केतु है । आप जीवन में हमेशा स्वाभिमानी होगों । यह आपके प्रयोगिक जीवन में उच्च स्थान तक पहुँचने के लिए रुकावट बन जाएगा ।
जन्म नक्षत्र के आधार पर कुछ गृहों का दाश आपके लिए प्रतिकूल है । मंगल नक्षत्र होने के बावजूद सूर्य, मंगल और गुरु दाश में आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस समय आपके विचार में अनेक प्रकार का प्रत्यक्ष परिवर्तन दिखाई पड़ेगा । ऐसा परिस्थिति भी होगा जब आप दूसरों से आज्ञाकारी बनने के लिए मज़बूर हो जाएगो । वैवाहिक जीवन में विश्वसनीय रहना होगा । अपने आर्थिक व्यवस्था को ध्यान में रखकर ही दूसरों को सहायता का वादा देना चाहिए । इस समय हर सुख विलास में अधिक दिलचस्पी होगा ।

सिंह जन्म राशी का अधिपति सूर्य है । जीवन में ऐसा परिस्थिति भी होगा, जब आपको अपने उत्सुकता और धैर्य प्रदार्शित करना पड़ेगा । हमारा विचार और कार्य दूसरो पर कैसे प्रभावित हो रहा इस पर विचार करना अच्छा होगा । उत्तर फालगुनी. चित्रा, विशाखा, पूर्व भद्रपाठा नक्षत्र सामान्य रुप से अनुकूल नहीं होगा ।

इस प्रतिकूल दाश में अपने वाक्य और व्यवहार पर नियंत्रण करना चाहिए, मुख्यतः विरुद्व नक्षत्रों पर । अनावश्यक झगड़ो से दूर रहने की कोशिश करें । इस समय दूसरों के मामलों में दखल देने से दूर रहे ।

लौकिक प्रतिविधिक मर्यादों की प्रवर्तन करने से प्रतिकूल प्रभाव को शान्त कर सकते है ।

प्रतिकूल दाश में गणेश भागवान -(जो रुकावटों को दुर करता है) से प्रार्थना करना लाभदायक है । मगह, अशविनी और मूल नक्षत्र के दिवस पर मंदिर में दर्शन करना शुभ माना जाता है। वह दिन जब मगह नक्षत्र और रविवार साथ आता है, विशिष्ट महत्व से उपवास रखना अच्छा होगा ।

फल सिद्वि के लिए रोज नक्षत्र का अधिपति केतु की पूजा करना चाहिए । लाल रंग के वस्त्रों को पहनने से आप केतु को प्रसन्न कर सकते है ।

इसके अलावा सूर्य को प्रसन्न करने के लिए अनुष्ठानों का पालन करना लाभदायक है ।

मगह नक्षत्र का देव पूर्वज है । पूर्वजों को प्रसन्न करने के लिए और अच्छे परिणाम के लिए इनमें से किसी मंत्र को विश्वास से अलापन करना चाहिए।

१ ऊ पित्रभ्याह स्वधायिभ्यः स्वदा नमः
पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वदा नमः
प्रपिता महेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वदा नमः
अक्क्षन्न पितरोमीमदान्ते पितरो तीतृपन्त
पितरः पितरः सुन्दध्वाम्

२ ऊ पितृभ्यो नमः

कर्क माँस में बलि और धार्मिक अनुष्ठानों को कारना चाहिए । इसके अलावा, जानवरों,पक्षियों और पेड़ो का संरक्षण करना शुभकारक है । मुख्यतः मगह नक्षत्र का जानवर चूहा का संरक्षण करना और उसके साथ हीन व्यवहार न करने से आपके जीवन में ऐश्वर्य और समृद्वि प्राप्त होगा ।मगह का औधोगिक पेड, बरगड पेड और उसके शाखओं को काटना नहीं चाहिए और औधोगिक पक्षी , चकोर पक्षी को पीड़ा नहीं देना चाहिए । मगह नक्षत्र का मूलतत्व जल है । जल देव की पूजा करना चाहिए और देवों की अनुग्रह प्राप्त करने के लिए जल को दूषित करने वाले कार्यों से दूर रहना चाहिए ।

दाश परिहार

दश के हानिकारक प्रभावो का परिहार

हर गृह के दाश में भाग्य और निर्माग के सामान्य झुकाव जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के स्थानों पर आधारित है । गुणकारक और हानिकारक गृहों का प्रभाव यह सूचित करता है कि कुछ दाश समय आपके लिए अनुकूल नही है । प्रतिकूल दाश समय के हानिकारक

प्रभावों को कम करने के लिए आपको कुछ धार्मिक विधियों का आचरण करना पडेगा ।

जन्मकुण्डली में उपस्थित प्रतिकूल दाश समय और उसके लिए किए जाने वाले धार्मिक विधियों के बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

दशा :रवि

आपका रवि दाश 5-7-2032 को शुरु होता है ।

आपका जन्म नक्षत्र मघा है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

इस जन्मकुण्डली में उपस्थित गृहों के अनुसार आपको सूर्य दाश में प्रतिकूल स्थितियों को भोग्ना पडेगा । इस समय आपको अनेक मुसीबतों का सामना करना पडेगा । ऐसे स्थिति पर आपको स्वंय नियंत्रण रखना चाहिए । दूसरो के साथ बातचीत में अनुचित वाक्यो का प्रयोगों या उपयोग नहीं करे, इसके लिए ध्यान रखना चाहिए ।

सुर्य दाश के हानिकारक प्रभावों की तीव्रता सूर्य के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब सुर्य प्रतिकूल स्थान पर है जो मुतीबतें आपको सामना करना पडेग उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

जब सूर्य कमज़ोर है आपको अपने करीब साथियों और रिश्तेदारो से अलग होने की प्रवृत्ति होगा । आपको सार्वजनिक मंच पर शमिल होने के लिए मुसीबत लगेगा । जब आपको सहायाता और संयोग की जरुरत हो तब कोई भी दोस्त या रिश्तेदार आपका साथ नहीं देगों ।

इस समय पर आपको काफी मान्यता नहीं मिलेगा । अपने प्रिय लोगों से अलग होगों । ऐसे प्रतिकूल स्थिति पर आप दूसरों से दूर रहना चाहते है ।

अनावश्यक प्रश्नों के उत्तर देने के लिए आप असंतुष्ट होगों । आपका अपेक्षपाती स्वभाव अनावश्यक संदेह की और ले जाएगा । अतः यह आपके दोस्ती को थोड़ देगा ।

इस समय दूसरों को मूल्याकन करने में आप सही और सफल नहीं होगों ।धृष्ट वाक्य और व्यवहार गलतफहमी को उत्पन्न करेगा । इसके फलस्वरुप आपको नष्ट कष्ट और अनावश्यक दुःख भोग्ना पडेगा ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीबतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि सूर्य प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें सूर्य को शान्त कराने के लिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए । सूर्य को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते है और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली में के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर सुर्य दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

केशर रंग रे वस्त्रों को पहनने पर सूर्य को शांन्त कर सकते है । आप लाल रंग के वस्त्र को भी पहन सकते है । सोमवार को और सूर्य की पूजा करता समय इस प्रकार का वस्त्र पहनना शुभ है । उपवास के समय केशर रंग के वस्त्र पहनने से आपको अच्छा परिणाम मिलेगा ।

जीवन रीति

सुर्य दाश में आपका जीवन रीति सुर्य के आवश्यकताओं को परिपूर्ण करना चाहिए । इस समय आपको सूर्योदिय से पहले उठना चाहिए । हर दिन सूर्य स्नान लेना चाहिए । अपने आवश्यकता के लिए दूसरों पर निर्भर नहीं करना चाहिए । बिना किसी संकोच के कोई भी कार्य करने के लिए तैयार रहना चाहीए । दिन के समय सोना छोड दे और बाहर समय बिताने पर सूर्य के शक्ति को प्राप्त कर सकते है । अकेले होते हुए भी सामाजिक कार्यों में जुडे रहना आपके लिए उचित है ।, प्रर्थना के द्वारा अपने कर्म क्षेत्र को आगे बढ़ा सकते है ।

देवता भजन

सूर्य के हानिकारक प्रभावों को दूर करने के लिए आपको भग्वान शिव का पूजा करना चाहिए । शिवरात्री, तेरहवी चन्द्र सम्बधी शाम (प्रदाषमे), धनु राशि का आर्द्रा नक्षत्र के दिवस पर शिव भग्वान के मंदिरों में दर्शन, अपने जन्म नक्षत्र में शिव भग्वान के मंदिर में दर्शन, अपने योग्यता के अनुसार भग्वान को दान आदि सूर्य के हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिए उचित मार्ग है ।

दान

अच्छे मन से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार का ललित मार्ग है ।
सुर्य को शान्त करने के लिए ताबाँ या सोने से बना सुर्य की मुर्ति, भूरा रंग का गाय और उसका बच्चा, लाल माणि (माणिक), ताबाँ, सोना, गेहूँ, रक्त चन्दन, केशर वस्त्र आदि को दोन कर सकते है ।

ऊपर दिए गए परिहारा को 5-7-2038 तक आचारण करना चाहिए ।

दशा :चन्द्र

आपका चन्द्र दाश 5-7-2038 को शुरु होता है ।

ष्ड्डुह्मण चन्द्र भाव में है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

आपके जन्मकण्डली में उपस्थित गृहों के स्थान के आधार पर चन्द्र दाश में आपको प्रतिकूल प्रभावों का अनुभव करना पडेगों । इस समय आपको कई अप्रत्यशित मुसीबतों को सामना करना पड़ेगा । परिश्रम युक्त मानसिक और शरीरिक प्रयासों से आपको दूर रहना चाहिए । श्रेष्ठ व्यक्तिगतों से लेन देन पर ध्यान रखना चाहिए ।

चन्द्र दाश के हानिकारक प्रभाव की तीव्रता चन्द्र के स्थानपरिवर्तन पर बदलता रहता है । जब चन्द्र प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबते आपको सामना करना पड़ेगा उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

जब चन्द्र कमजोर है आपको अप्रत्यशित नष्टों और धन सम्बधित मुसीबतों का सामना करना पडेगा । आपको विनिद्रता को भेगना पडेगा । आपका अनावश्यक परेशानी हर साहचर्यों पर मुसबितों को उत्पन्न करेगा ।

आपके चिन्ता और चेतना में प्रत्थक्ष परिवर्तन होगा । प्रतिकूल स्थितियों में आप अपने अभिप्रायों से विचलित होगों । गरम वातवरण में जीना आपके लिए मुशीकल पडेगा ।

इस समय पारिवारिक सम्बधों को बनाए रखना आपके लिए मुशीकल पड़ जाएगा । बालिश बाते भी आपको व्याकुल करेगा । अपने वाक्यों को निंयत्रित करना आपके लिए मुशीकल पड़ेगा ।

जब चन्द्र प्रतिकूल स्थान पर है आपको बीमारी का सामना करना पडेगा । अपच (अजीर्ण), साँस लेने में मुशकिल, थकावट, और

अत्यधिक व्यास आदि लक्षण देखे तो सावधान रहना चाहिए ।

चन्द्र दाश में अगर इस प्रकार के प्रश्नो की वृति हो तो यह जानना चाहिए कि चन्द्र प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है ।

जो लोग इस प्रकार के व्यकुलता को अधिक मेहसूस कर रहा है तो चन्द्र को शान्त कराने के लिए कुछ मार्ग अपनाना पडेगा । चन्द्र को शान्त रखने पर आपके हानिकारक प्रभावों को दुर्बल कर सकते है ।

इस जन्मकुण्डली के विस्तुत निरीक्षण के आधार पर जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना है उसके बारे में नीचे प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

चादनी के जैसे उज्वल रंग चन्द के लिए प्रिय है । इसलिए सफेद और चन्दन रंग के वस्त्र पहनने पर चन्द्र को शान्त कर सकते है । इस प्रकार का वस्त्र सोमवार को पूर्ण चन्द्र दिवस पर और नक्षत्र देव और चन्द्र की पूजा करते समय पहनना शुभ है ।

जीवन रीति

चन्द्र दाश में आपका जीवन रीति चन्द्र की आवश्यकता को परिपुर्ण करना चाहिए । ध्यान और प्रार्थना जैसे शान्त कार्यों में शमिल होने से चन्द्र दाश के हानिकारक प्रभावों को कम कर सकते है । दूसरो की सहायता करने केलिए और शक्ति होने लोगें की रक्षा करने के लिए आपको कुछ समय बिताना चाहिए । अपने विश्वास और कर्म क्षेत्र में सिथर होना चाहिए । अपने प्रिय देव से प्रर्थना करना लाभदायक है । अपने प्यारे सम्बंधों को उचित महत्व देने के लिए भूलना नहीं चाहिए । चन्द्र दाश में मदोन्मत करने वाले वस्तु और इसका उपयोग करने वालें लोगे से दूर रहना चाहिए । जलयात्रा, तैरना और शराब पीने पर आपको संयम रखना चाहिए । आपको यह जानना चाहिए कि आप जो पानी पी रहे है वह शुद्व हो । पानी और अन्य जल सम्बधी चीजों के लेन देन पर सावधान रहना चाहिए ।

प्रातकालीन प्रार्थना

प्रातकालीन प्रार्थना हानिकारक प्रभावों को दूर करने के साथ - साथ आपके मन और शरीर को नयी शक्ति प्रधान करता है । चन्द्र दाश में हमेशा सूर्योदय से पहले उठना चाहिए । अपने शरीर को शुद्व करने के बाद चन्द्र की अनुग्रह की याचना करें । मन से सभी चिन्तओं और विचारों को दूर करने का विशिष्ट ध्यान रखना चाहिए ।

सूर्याय शीतरुचये धरणीसुताय
सौम्याय देवगुरवे बृगुनन्दनाय
सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च
नित्यमं नमो भगवते गुरवे वराय
पापनाशन लोकेश देवदेव नमोस्तुते
शशंकनिष्टसंभुतं दोषजातम् विनाश्य

इस प्रार्थना को हर दिन नीदं से उठते ही शय्या में पुरब की दिशा में बैठकर आलापन करना चाहिए ।

उपवास

उपवास खाध्य पदार्थ के उपयोग के किफायत करने की आचरण को सूचित करता है । इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का

पालन करने का मुख्य लक्ष्य है अपने मन और शरीर को शुद्व करना । अपने लिए विशिष्ट दिनों में और गृहों के अनुरुप दिनों में उपवास रखना चाहिए । चाँद को शान्त कराने के लिए आपको सोमवार के दिन में उपवास लेना चाहिए । चन्द्र के हानिकारक प्रभावों को कम करने लिए आपको अपने जन्म नक्षत्र के दिन में अवास रखना चाहिए । उपवास के समय मदिरा, माँस पदार्थ और मदोन्मत करने वाले चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए । इन दिनों में प्राकृतिक खाध्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जो पचाने के लिए सहायक है उपयोग करना चाहिए । अजान सम्बधी चीजें, तेलहा गरम और खट्ट खाध्य पदार्थ को रोकना चाहिए । आप अंशातः या पूरी तरह हानिकारक प्रभावों के तीव्रता के अनुसार उपवास रख सकते है । धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं है । आपका उपवास तभी सफल होगा जब आप अपने आवेग और वाक्यशैली पर समय रखे ।

ऊपर दिए गए परिहारा को 5-7-2048 तक आचारण करना चाहिए ।

दशा :मंगल

आपका मंगल दाश 5-7-2048 को शुरु होता है ।

आपका जन्म नक्षत्र मघा है । प्ड्डुद्धम्ण मंगल फराशी में है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

जन्मकुण्डली में इस गृह स्थान के आधार पर मंगल दाश में आपको प्रतिकूल स्थितियों से गुजरना पडेगा । इस समय सफलता पाने के लिए आपको अप्रत्याशित मुसीबतों का सामना करना पड़ेगा । छोटे काम के लिए भी आपको दूसरों पर निर्भर होना पडेगा । अपने उत्साह और ओज को बनाए रखने के लिए प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए ।

मंगल दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब बुध प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है ।

जब मंगल कमोज है आपके काम के कुछ बदलाव होगा । इसलिए आपके विशिष्ट योग्यताओं को बनाए रखने केलिए प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए ।

इस समय जानबुझकर या आनजाने में अपवाद में शामिल हो जाएगो । आपको अपने जीवन रीति पर संयम रखना चाहिए । दूसरे लिंग के लोगें से मिलते जुलते समय प्रत्येक ध्यान रखना चाहिए ।

इस समय दोस्तों को सभालते वक्त आपको उसके खिलाफ नहीं होना चाहिए । प्रतिकूल परिस्थिति में अपने क्रोध को नियंत्रित करना आपके लिए मुशकिल पड जाएगा । दूसरों के मामले में दखल देना के अभिरुचि आपको होगा । इसी कारण आप अनावश्यक मुसीबतों में पड़ जाएगा ।.

मंगल को कलह का उत्तरदायित्व माना जाता है । इसलिए जब मंगल प्रतिकूल स्थान पर है तो छोटे - छोटे वाद विवाद और बहस बडा तर्कविषय बन सकता है । इसलिए प्रतिकूल परिस्थियों से दूर रहे ओर अपने वाक्य और व्यवहार पर निंयत्रण रखे । किसी बातचीत में शमिल होते समय अपने विरोधियों से आदर का भाव रखना चाहिए ।

इस समय अनेक रोगों का सामना करना पडेगा । वातावरण में होने वाले परिवर्तन आपके स्वास्थय पर प्रभावित होगा ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीबतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि मंगल दाश प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें मंगल को शान्त कराने के लिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए । सूर्य को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते है और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर मंगल दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ

प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

मंगल एक लाल गृह है । लाल रंग मंगल गृह का प्रिय रंग है । मंगल गृह को शान्त करोन के लिए आपको मंगलवार में लाल रंग का वस्त्र पहनना चाहिए । इसी प्रकार का रंग,रेशमी कपड़ा पहनना लाभदायक है ।

देवता भजन

जिन लोगे के जन्मकुण्डली में मंगल गृह ओज राशी में है उनको सुभ्रमण्य देव की पूजा करना चाहिए और जिनका युगम्म राशी में है उनको भद्रकालि देवी की पूजा करना चाहिए ।

प्रातकालीन प्रार्थना

प्रातकालीन प्रार्थना हानिकारक प्रभावों को दूर करने के साथ - साथ आपके मन औप शरीर को नयी शक्ति प्रधान करता है । चन्द्र दाश में हमेशा सूर्यंदय से पहले उठना चाहिए । अपने शरीर को शुद्व करने के बाद मंगल की अनुग्रह की याचना करें । मन से सभी चिन्तओं और विचारों को दूर करने का विशिष्ट ध्यान रखना चाहिए ।

सूर्याय शीतरुचये धरणीसुताय
सौम्याय देवगुरवे बृगुनन्दनाय
सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च
नित्यमं नमो भगवते गुरवे वराय
सौख्यदायिन् महादेव लोकनाथ महामते
आदित्यानिष्टजान् सर्वान् दोषानेत्यान्यपाकुरु(इस प्रार्थना का आलपन करे) इसके बाद
देव देव जगन्नाथ देवता नामपीश्वर
भूपुत्रानिष्टसंभुतम् दोषजातम् विनाशये

इस प्रार्थना को हर दिन नीदं से उठते ही शाथ्या में पुरब की दिशा में बैठकर आलापन करना चाहिए ।

दान

अच्छे मन से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार का ललित मार्ग है ।
मंगल गृह को शान्त करने के लिए लाल रंग का पुरुप जानवर, लाल वस्त्र, सोना, ताँबा या ताबाँ से बनी मुर्ति दान देना लाभदायक है ।

पूजा

मंगल को शान्त करने के लिए कुछ पूजा विधियों को विर्देश किया है ।-आपको शिववन्ती, जपाकुसुम आदि फूलों से मंगल गृह का पूजा करना चाहिए । मंगल पूजा एक विशिष्टपूजा है जो अच्छे परिणामें को उत्पन्न करता है । नव गृहों के मंदिर में दर्शन करना,चम्पा फूल से मंगल गृह की पूजा करना और चम्पा फूल की माला से मंगल गृह को आभूषित करना लाभदायक है ।निपुण ज्योजिषियों के उपदेश के अनुसार ही यह पूजा विधि का पालन करना चाहिए । इस पूजा को तब करना अत्यधिक उचित है जब मंगल मकर राशी में हो ।

मन्त्रों का आलापन

जिन लोगों को धार्मिक अनुष्ठानों और परिहारों का पालन करने में पारिभाषिक मुसीबत है, वे प्रार्थना के द्वारा मंगल का अनुग्रह और कृपा जीत सकते है ।

ऊँ भुमिपुत्राय विद्महे
लोहितांगाय धीमहि
तन : भौम : प्रचोदयात्

अत्यन्त विश्वास और भक्ति से इन मंत्रों का आलापन करने पर ही आपको फल सिद्वि प्राप्त होगा ।

अंगुलिक यंन्त्र

अगुंलिक यंत्र गृहों को प्रसन्न करने का दुसरा उपाय है । मंगल को प्रसन्न करने के लिए स्तुतिपूर्वक अगुंलिक यत्र नीचे प्रस्तुत किया गया है-

८	३	१०
९	७	५
४	११	६

इस आविष्कार को विशुद्व मन से पहनने पर हानिकारक प्रभावों का दूर कर सकते है और आपके मन को एक नई शक्ति प्रधान करता है । यदि आप अपने क्षेत्र में सफल होना चाहचे है तो इस यंत्र एक कागज के टुकडे में अंकित करके अपने कार्य क्षेत्र, वाहन या टेबुल पर रखना चाहिए ।

ऊपर दिए गए परिहारा को 5-7-2055 तक आचारण करना चाहिए ।

दशा :गुरु

आपका गुरु दाश 5-7-2073 को शुरु होता है ।

आपका जन्म नक्षत्र मघा है । प्ड्डुद्मण गुरु भाव में है । इसलिए इस दाश में अक्सर आपको प्रतिकूल अनुभवों का सामना करना पड़ेगा ।

जन्मकुण्डली के इस गृह स्थान के आधार पर गुरु दाश में प्रतिकूल स्थितियो से गुजरना पडेगा । गुरु समृद्वि को प्रधान करनेवाला गृह है फिर भी जब यह प्रतिकूल स्थिति में है तो आपको अप्रत्याशित मुसीबतों का सामना करना पडेगा । स्वास्थय विषय में आपके हमेशा आत्म संतुष्ट नहीं रहना चाहिए । अप्रधान व्याधि पर भी चिकित्स लेना चाहिए ।

गुरु दाश के हानिकारक प्रभावो की तीव्रता बुध के स्थान परिवर्तन पर बदलता रहता है । जब बुध प्रतिकूल स्थान पर है जो मुसीबतों का सामना करना पडेगो उसके बारे में यहाँ कहा गया है ।

जब गुरु कमज़ोर है आपका ईश्वर विश्वास भी कम हो जाएग । दूसरों का काम जानबुझकर या अनजाने में आपको दुख पहुँचाएगा । इस समय आपको अपने क्रोध और संतोष पर नियंत्रण रखना चाहिए ।

इस समय आप आशावादी बनना मुशीकल समझेगो । निराशा, चिन्ता और आत्मविश्वास की कमी सफलता के मार्ग में रुकावट बन

जाएगा । दोस्तों और रिशतेदारों से बातचीत करते समय आपको स्वंय नियंत्रण करना चाहिए ।

इस समय आपको जीवन शक्ति की कमी मेहसूस होगा । आपका अतिव्यय वित्तसम्धी मूसिबतों को उत्पन्न करेगा । आपको कोमल व्यवहार को बनाए रखना चाहिए ।

जब गुरु प्रतिकूल स्थान पर है तो आपको अपने बोझ मे कमी होगा ।

अगर आप इस प्रकार के मुसीबतों का सामना कर रहे है तो यह समझना चाहिए कि गुरु प्रतिकूल स्थान पर उपस्थित है । जो लोग इस प्रकार के मुसिबतों को मेहसूस कर रहा है तो उन्हें गुरु को शान्त कराने केलिए कुछ मार्ग अपनाना चाहिए । सूर्य को शान्त रखने पर आपके ऊपर जो हानिकारक प्रभाव है, उसको कम कर सकते है । और जीवन सुख से बरा होगा ।

इस जन्मकुण्डली के विस्तृत निरीक्षण के आधार पर गुरु दाश में जो विशिष्ट आज्ञाओं का पालन करना चाहिए उसके बारे में यहाँ प्रस्तुत किया गया है ।

वस्त्र

गुरु गृह को शान्त कराने के लिए आपको पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए । हानिकारक प्रभावों को कम करने के लिए आपको गुरुवार में पीले रंग का वस्त्र पहनना चाहिए ।

देवता भजन

गुरु गृह को शान्त करने के लिए आपको महाविष्णु भगवान का पूजा करना चाहिए । गुरुवार को वृत लेकर विष्णु भगवान के मंदिर में दर्शन,जन्म नक्षत्र में विष्णु पूजा, गुरु दाश में शत्रओं के वृति पर महासुदर्शन होम का पालन करना, और चक्रब्जी पूजा करना आदि गुरु को शांत कराने का मार्ग है ।

प्रातकालीन प्रार्थना

प्रातकालीन प्रार्थना हानिकारक प्रभावों को दूर करने के साथ - साथ आपके मन औप शरीर को नयी शक्ति प्रधान करता है । चन्द्र दाश में हमेशा सूर्येदय से पहले उठना चाहिए । अपने शरीर को शुद्व करने के बाद गुरु की अनुग्रह की याचना करें । मन से सभी चिन्तओं और विचारों को दूर करने का विशिष्ट ध्यान रखना चाहिए ।

सूर्याय शीतरुचये धरणीसुताय
सौम्याय देवगुरवे बृगुनन्दनाय
सूर्यात्मजाय भुजगाय च केतवे च
नित्यमं नमो भगवते गुरवे वराय
सौख्यदायिन् महादेव लोकनाथ महामते
आदित्यानिष्टजान् सर्वान् दोषानेत्यान्यपाकुरु
देवानामादिदेवस्च लोकेशः प्रभुरव्ययः
गुरोरनिष्टसंभुतम् दोषजताम् विनाश्येत

इस प्रार्थना को हर दिन नीदं से उठते ही शाथ्या में पुरब की दिशा में बैठकर आलापन करना चाहिए ।

उपवास

उपवास खाध्य पदार्थ के उपयोग के किफायत करने की आचरण को सूचित करता है । इसके अलावा उपवास रखना और अनुष्ठानों का पालन करने का मुख्य लक्ष्य है अपने मन और शरीर को शुद्व करना । अपने लिए विशिष्ट दिनों में और गृहों के अनुरुप दिनों में उपवास रखना चाहिए । गुरु को शान्त करने के लिए आपको गुरुवार में उपवास रखना चाहिए । इस समय विष्णु भगवान के मंदिर में दर्शन करना चाहिए और अपने योगयता के अनुसार दान करना चाहिए ।

उपवास केसमय मदिरा, माँस पदार्थ और मदोन्मत करने वाले चीजों का उपयोग नहीं करना चाहिए । इन दिनों में प्राकृतिक खाध्य पदार्थ जैसे फल, सब्जी और हरे पत्ते जो पचाने के लिए सहायक है उपयोग करना चाहिए । अजान सम्बधी चीजें, तेलहा गरम और खट्ट खाध्य पदार्थ को रोकना चाहिए । आप अंशातः यापूरी तरह हानिकारक प्रभावों के तीव्रता के अनुसार उपवास रख सकते है । धूमधाम और विलास में आसक्त होना उचित नहीं है । आपका उपवास तभी सफल होगा जब आप अपने आवेग और वाक्यशैली पर समय रखे ।

दान

अच्छे मन से भिक्षा या दान देना अपने पाप परिहार का ललित मार्ग है ।
गुरु को शान्त करने के लिए दाल, पीला माणिक्य, हलदी, जूट, नींबू, सोंना, नमक, शक्कर आदि को दान देना लाभदायक है ।

पूजा

गुरु को शान्त करने के लिए कुछ पूजा विधियों को विर्देश किया है ।आपको चमेली फूल और पीले फूलों से गुरु का पूजा करना चाहिए । नव गृहों के क्षेत्र में दर्शन करना, गुरुवार को चमेली से गुरु का पूजा करना और चमेली की माला से अभूषित करना लाभदायक है । यब पूजा जन्म नक्षत्र के दिन में भी कर सकते है ।निपुण ज्योजिषियों के उपदेश के अनुसार ही यह पूजा विधि का पालन करना चाहिए ।

मन्त्रों का आलापन

जिन लोगों को धार्मिक अनुष्ठानों और परिहारों का पालन करने में पारिभाषिक मुसीबत है, वे प्रार्थना के द्वारा गुरु का अनुग्रह और कृपा जीत सकते है ।

ऊँ अंगिरोजाताय विद्महे
वाचस्पतये धीमहि
तनो गुरुः प्रचोदयात्

ऊँ बार्हस्पताय विदमेह
देवाचार्याय धीमहि
तनो बृहस्पतिः प्रचोदयात्

अत्यन्त विश्वास और भक्ति से इन मंत्रों का आलापन करने पर ही आपको फल सिद्वि प्राप्त होगा ।

गुरु को प्रसन्न करने के लिए गुरु के विविध नाम से सम्मिलित किए गए मन्त्र का आलापन करना चाहिए । मन्त्र इस प्रकार है

ऊँ श्रीगुरवे नम :

ॐ गुणकराय नम :
ॐ गोप्त्रे नम :
ॐ गोचराय नम :
ॐ गोपतीप्रियाय नम :
ॐ गुणिने नम :
ॐ गुणवतांश्रेष्टाय नम :
ॐ गुरुणाम् गुरुवे नम :
ॐ अंगीरसाय नम :
ॐ जेत्रे नम :
ॐ जयन्ताय नम :
ॐ जयदाय नम :

अंगुलिक यंन्त्र

अगुंलिक यंत्र गृहों को प्रसन्न करने का दुसरा उपाय है । गुरु को प्रसन्न करने के लिए स्तुतिपूर्वक अगुंलिक यत्र नीचे प्रस्तुत किया गया है-

१०	५	१२
११	९	७
६	१३	८

इस आविष्कार को विशुद्व मन से पहनने पर हानिकारक प्रभावों का दूर कर सकते है और आपके मन को एक नई शक्ति प्रधान करता है । यदि आप अपने क्षेत्र में सफल होना चाहचे है तो इस यंत्र एक कागज के टुकडे में अंकित करके अपने कार्य क्षेत्र, वाहन या टेबुल पर रखना चाहिए ।

ऊपर दिए गए परिहारा को 5-7-2089 तक आचारण करना चाहिए ।

नाम : **Hindi Sample** (पुरुष)
जन्म राशी : **सिंह**
जन्म नक्षत्र : **मघा**

गृहस्थिती : 27-डिसंभ्बर- 2021
अयनांश : चित्रपक्ष

जन्म कुण्डली में स्थित ग्रहों और वर्तमान गोचर ग्रहों के आधार पर निकट भविष्य के विषय में जाना जा सकता है। इस विषय में सूर्य, गुरु और शनि की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। अन्यान्य ग्रह और उनकी दशान्तर्दशा जब इन गोचर ग्रहों के साथ अनुकूलता उत्पन्न करें तो फल सर्वोत्तम और अगर प्रतिकूलता करें तो फल निष्कृष्ट और समता उत्पन्न करें तो सामान्य फल की आशा कर सकते हैं।

सूर्य का गोचर फल।

सूर्य प्राय: एक मास तक एक राशि में रहता है। जन्मस्थ चन्द्र की स्थिति से आगामी तीन मास का सूर्य की राशि का प्रतिफल नीचे दिया जा रहा है।

∇ (15-डिसंभ्बर-2021 >> 14-जानुवरी-2022)

इस समय सूर्य पंचम भाव का सक्रमण करेगा

यह मंगलमय आनन्दपूर्ण समय है। माता-पिता के लिए अनेक समस्यायें उत्पन्न करनेवाले नट-खट बालक हैं। नज़र हटते ही कोई न कोई नट-खट काम कर लेने के आदि हैं। आपको नियंत्रण के आधीन रखना अति कठिन कार्य होगा। इस कारण माता पिता आपके प्रति मित्रवत व्यवहार करेंगे। माता या पिता से दण्डित होने की संभावना है। यदि आपने स्कूल जाना शुरु कर दिया है तो क्लास टीचर से दंडित या अपमानित हो सकते हैं। होमवर्क अधूरा रहेगा।

∇ (14-जानुवरी-2022 >> 13-फेब्रुवरी-2022)

इस समय सूर्य छठ्ठा भाव का सक्रमण करेगा

खेल-कूद के लिए उपयुक्त समय है। समान उम्र के मित्रों के साथ मौज मनाने का समय है। साथ साथ झगड़ा, ईर्ष्या आदि का भी अनुभव होगा। परिवार के बीच सुख और आनन्द का अनुभव भी होगा। आपके जन्माक्षर के माध्यम से उदित होनेवाले सभी श्रेष्ठ फलों का अनुभव पूरे परिवार को प्राप्त होगा। पढ़ाई में वरीयता प्राप्त होगा। उपहार या ईनाम प्राप्त होंगे।

∇ (13-फेब्रुवरी-2022 >> 15-मार्च-2022)

इस समय सूर्य सातवँ भाव का सक्रमण करेगा

हर प्रकार से यात्रा का योग सुनिश्चित है। अनेक जगह की यात्रा के कारण आपके स्वास्थ्य में बेचैनी होगी। आर्थिक दबाव के बीच रहते हुए भी माता-पिता अपने पुत्र के (आपकी) सभी सुविधाओं के प्रति सजग रहेंगे। लंबी यात्रा का योग है। आप में उत्पन्न होनेवाले हर परिवर्तन के प्रति माता-पिता बड़ी उत्सुकता के साथ अवलोकन करते रहेंगे। अब मेरे पुत्र का क्या होगा? इस प्रश्न सूचक दृष्टि से वे चिंतित भी रहेंगे। इस कारण माता-पिता का स्वास्थ्य भी कमज़ोर रहेगा।

गुरु का गोचर फल।

गुरु हर राशि में एक वर्ष तक स्थान गृहण करता है। ज्योतिष शास्त्रों में गुरु का प्रभाव अति महत्वपूर्ण माना जाता है।

∇ (22-नवेम्बर-2021 >> 13-अप्रेल-2022)

इस समय गुरु सातवँ भाव का सक्रमण करेगा

गुरु की स्थिति में सुधार हो रहा है। आपके निवास स्थान में रहनेवाले अन्य सदस्यों को आश्चर्य चकित करनेवाली घटनायें घटित होंगा। आपका मस्तिष्क क्रियाशील बनेगा। आपके शब्दों का आदर किया जायेगा। आपके वचनों का मूल्यांकन किया जायेगा। समाज के बीच आप सभी के आकर्षण के केन्द्र बनेंगे। आपको मिलनेवाले महत्व के प्रति आप सजग रहेंगे। उत्तम विद्यालय में प्रवेश सरलता से मिल सकेगा। पढ़ाई निर्विघ्न चलती रहेगा।

∇ (14-अप्रेल-2022 >> 22-अप्रेल-2023)

इस समय गुरु आठवाँ भाव का सक्रमण करेगा

इस समय गुरु संतोषपूर्ण स्थिति में नहीं है। अन्य लोगों से दूर रहने की इच्छा होगा। भागने की इच्छा उत्पन्न होगा। इस प्रक्रिया में कुछ प्रयास भी किए जायेंगे। लेकिन सफलता प्राप्त नहीं होगा। आपकी इच्छाओं को कोई छिन्न-भिन्न कर रहा है, ऐसी भ्रान्ति होगा। इस समय आग से बचकर सावधान रहें। किसी अन्य प्रकार की बीमारी उत्पन्न हो सकती है। परिवार के सदस्यों को तनाव के अधीन होना पड़ेगा। नए दांत के निकलने से पीड़ित होना पड़ेगा। व्यर्थ का शोरगुल मचाकर बड़ों के मन में चिंता उत्पन्न करने वाले नटखट बालक हैं। स्वास्थ्य की ओर ध्यान रखना हितकर होगा।

शनि का गोचर फल।

साधारण स्थिति में शनि को दुःख देनेवाला ग्रह ही माना जाता है। यह बात सदा ही सत्य हो, यह संभव नहीं। शनि की गोचर स्थिति कभी-कभी बहुत अच्छा फल भी देती है। अविचारित मार्ग से लाभ भी दिलाता है। हर भाव के बीच शनि अढ़ाई वर्ष तक रहता है।

∇ (25-जानुवरी-2020 >> 29-अप्रेल-2022)

इस समय शनि छठ्ठा भाव का सक्रमण करेगा

बीते हुए समय की अपेक्षा, वर्तमान काल संतोषपूर्ण रहेगा। नई मित्रता का सृजन होगा। विद्या संपन्नता के लिए यह
श्रेष्ठ समय माना जाता है। बालयुवकों की प्रतिस्पर्धा और इम्तिहान अनुकूलता से भरे रहेंगे। अनेक अमूल्य तोहफे या इनाम प्राप्त होंगे। आगंतुकों के कारण संतोष प्रदान होगा। सभी से श्रेष्ठ सम्बन्ध स्थापित करने का स्वर्ण अवसर है। इसके कारण आप विख्यात होंगे। पढ़ाई में प्रवीणता प्राप्त करना सरल होगा।

∇ (30-अप्रेल-2022 >> 12-जूलाई-2022)

इस समय शनि सातवँ भाव का सक्रमण करेगा

कमज़ोरी, दुःख और ग्लानिपूर्ण अनुभवों के मिश्रण की सूचना है। शनि के विपरीत फलों के भोगने के सिवा कोई चारा नहीं है। आपके दुःख की तीव्रता को लघुता में बदलने की शक्ति ईश्वर में ही है। सदा हंस मुख रहनेवाली आपकी मुखमुद्रा गंभीर दिखाई देगी। मानसिक

तनाव से बचिये। अनेक कार्य स्वयं के बुद्धिबल के आधार पर निपटाने की इच्छा जागृत होगा। अब कण्टक शनि का प्रभाव चल रहा हैं और किसी कारण से यात्रा कार्य स्थगित रखा जाये तो अपने
आपको भाग्यवान समझे। फिर भी किसी न किसी प्रकार क्लेशयुक्त यात्राओं का योग अनुभव करना होगा। परीक्षा फल विपरीत जा सकता है। हिम्मत और परिश्रम से पराजय को विजय में बदल सकते हैं।

उधोग या पेश के लिए अनुकूल समय

लग्न अधिपति, दसवी अधिपति, दसवी भाव और लग्न में उपस्थित शुभ गृह, लग्न और दसवी भाव में बृहस्पति का दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय उधोग के लिए अनुकूल है ।

१५ उम्रे से लेकर ६० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
शुक्र	गुरु	04-09-2022	05-05-2025	अनुकूल
रवि	गुरु	23-07-2034	11-05-2035	अनुकूल
चन्द्र	गुरु	04-06-2041	04-10-2042	अनुकूल
मंगल	गुरु	19-12-2049	25-11-2050	अनुकूल
राहु	गुरु	17-03-2058	10-08-2060	अनुकूल

गुरू कें विविध घरों सें ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल करीयर योग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
23-04-2023	01-05-2024	अनुकूल
16-05-2025	18-10-2025	अनुकूल
06-12-2025	02-06-2026	अनुकूल
27-11-2027	28-02-2028	अनुकूल
25-07-2028	26-12-2028	अनुकूल
30-03-2029	25-08-2029	अनुकूल
18-02-2031	14-06-2031	उचित
16-10-2031	05-03-2032	उचित
13-08-2032	23-10-2032	उचित
19-03-2033	28-03-2034	अनुकूल
07-04-2035	15-04-2036	अनुकूल
11-09-2036	17-11-2036	अनुकूल
27-04-2037	16-09-2037	अनुकूल
18-01-2038	11-05-2038	अनुकूल
05-11-2039	06-04-2040	अनुकूल
30-06-2040	03-12-2040	अनुकूल
07-05-2041	31-07-2041	अनुकूल
28-01-2043	30-07-2043	उचित
12-09-2043	16-02-2044	उचित
03-03-2045	13-03-2046	अनुकूल
23-03-2047	18-08-2047	अनुकूल
12-10-2047	28-03-2048	अनुकूल
14-08-2048	28-12-2048	अनुकूल
04-04-2049	27-08-2049	अनुकूल
09-03-2050	02-04-2050	अनुकूल

17-10-2051	15-11-2052	अनुकूल
11-01-2055	30-01-2056	उचित
14-02-2057	24-02-2058	अनुकूल

विवाह के लिए अनुकूल समय

सातवी अधिपति, सातवी भाव में उपस्थित गृह जैसे शुक्र, राहु, चन्द्र , बृहस्पति का दृष्टि और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय विवाह के लिए अनुकूल दिखाई पढ़ता है ।

१८ उम्रे से लेकर ३० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
शुक्र	शनि	05-05-2025	05-07-2028	उचित
शुक्र	बुध	05-07-2028	05-05-2031	उचित
शुक्र	केतु	05-05-2031	05-07-2032	अनुकूल
रवि	चन्द्र	22-10-2032	23-04-2033	अनुकूल
रवि	राहु	29-08-2033	23-07-2034	अनुकूल
रवि	शनि	11-05-2035	22-04-2036	अनुकूल
रवि	बुध	22-04-2036	27-02-2037	अनुकूल
रवि	शुक्र	05-07-2037	05-07-2038	अनुकूल
चन्द्र	मंगल	05-05-2039	04-12-2039	अनुकूल
चन्द्र	राहु	04-12-2039	04-06-2041	उचित

गुरू कें विविध घरों सें ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल विवाहायोग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
16-05-2025	18-10-2025	अनुकूल
06-12-2025	02-06-2026	अनुकूल
27-11-2027	28-02-2028	अनुकूल
25-07-2028	26-12-2028	अनुकूल
30-03-2029	25-08-2029	अनुकूल
18-02-2031	14-06-2031	उचित
16-10-2031	05-03-2032	उचित
13-08-2032	23-10-2032	उचित
19-03-2033	28-03-2034	अनुकूल
07-04-2035	15-04-2036	अनुकूल
11-09-2036	17-11-2036	अनुकूल
27-04-2037	16-09-2037	अनुकूल
18-01-2038	11-05-2038	अनुकूल

व्यापार के लिए अनुकूल समय

दूसरा, नौवाँ, दसवी और ग्यारहवी अधिपति, लग्न और ग्यारहवी भाव में बृहस्पति, लग्न और ग्यारहवी भाव में बृहस्पति का दृष्टि , और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय व्यापार के लिए अनुकूल दिखाई पड़ता है ।

१५ उम्रे से लेकर ६० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
शुक्र	गुरु	04-09-2022	05-05-2025	अनुकूल
शुक्र	शनि	05-05-2025	05-07-2028	अनुकूल
रवि	मंगल	23-04-2033	29-08-2033	अनुकूल
रवि	गुरु	23-07-2034	11-05-2035	अनुकूल
रवि	शनि	11-05-2035	22-04-2036	अनुकूल
चन्द्र	मंगल	05-05-2039	04-12-2039	अनुकूल
चन्द्र	गुरु	04-06-2041	04-10-2042	अनुकूल
चन्द्र	शनि	04-10-2042	05-05-2044	अनुकूल
मंगल	राहु	01-12-2048	19-12-2049	अनुकूल
मंगल	गुरु	19-12-2049	25-11-2050	उचित
मंगल	शनि	25-11-2050	04-01-2052	उचित
मंगल	बुध	04-01-2052	31-12-2052	अनुकूल
मंगल	केतु	31-12-2052	29-05-2053	अनुकूल
मंगल	शुक्र	29-05-2053	29-07-2054	अनुकूल
मंगल	रवि	29-07-2054	04-12-2054	अनुकूल
मंगल	चन्द्र	04-12-2054	05-07-2055	अनुकूल
राहु	गुरु	17-03-2058	10-08-2060	अनुकूल
राहु	शनि	10-08-2060	17-06-2063	अनुकूल

गुरू कें विविध घरों सें ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल व्यवसाय योग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
23-04-2023	01-05-2024	अनुकूल
16-05-2025	18-10-2025	अनुकूल
06-12-2025	02-06-2026	अनुकूल
27-11-2027	28-02-2028	अनुकूल
25-07-2028	26-12-2028	अनुकूल
30-03-2029	25-08-2029	अनुकूल
18-02-2031	14-06-2031	उचित
16-10-2031	05-03-2032	उचित
13-08-2032	23-10-2032	उचित
19-03-2033	28-03-2034	अनुकूल
07-04-2035	15-04-2036	अनुकूल
11-09-2036	17-11-2036	अनुकूल
27-04-2037	16-09-2037	अनुकूल
18-01-2038	11-05-2038	अनुकूल
05-11-2039	06-04-2040	अनुकूल
30-06-2040	03-12-2040	अनुकूल

07-05-2041	31-07-2041	अनुकूल
28-01-2043	30-07-2043	उचित
12-09-2043	16-02-2044	उचित
03-03-2045	13-03-2046	अनुकूल
23-03-2047	18-08-2047	अनुकूल
12-10-2047	28-03-2048	अनुकूल
14-08-2048	28-12-2048	अनुकूल
04-04-2049	27-08-2049	अनुकूल
09-03-2050	02-04-2050	अनुकूल
17-10-2051	15-11-2052	अनुकूल
11-01-2055	30-01-2056	उचित
14-02-2057	24-02-2058	अनुकूल
04-03-2059	16-07-2059	अनुकूल
26-11-2059	04-03-2060	अनुकूल

गृह निर्माण के लिए अनुकूल समय

चौथा अधिपति, शुभ गृह जिसका दृष्टि चौथा भाव और चौथा अधिपति पर है, और अन्य विषयों को ध्यान में रखकर प्रस्तुत दाश । अपहारा समय गृह निर्माण के लिए अनुकूल दिखाई पञता है ।

१५ उम्रे से लेकर ८० उम्र तक का विश्लेषण.

दशा	अपहार	काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
शुक्र	गुरु	04-09-2022	05-05-2025	अनुकूल
शुक्र	बुध	05-07-2028	05-05-2031	अनुकूल
रवि	गुरु	23-07-2034	11-05-2035	अनुकूल
रवि	बुध	22-04-2036	27-02-2037	अनुकूल
चन्द्र	गुरु	04-06-2041	04-10-2042	अनुकूल
चन्द्र	बुध	05-05-2044	04-10-2045	अनुकूल
मंगल	गुरु	19-12-2049	25-11-2050	अनुकूल
मंगल	बुध	04-01-2052	31-12-2052	अनुकूल
राहु	गुरु	17-03-2058	10-08-2060	अनुकूल
राहु	बुध	17-06-2063	03-01-2066	अनुकूल
गुरु	शनि	23-08-2075	05-03-2078	अनुकूल
गुरु	बुध	05-03-2078	10-06-2080	उचित
गुरु	केतु	10-06-2080	17-05-2081	अनुकूल
गुरु	शुक्र	17-05-2081	16-01-2084	अनुकूल
गुरु	रवि	16-01-2084	03-11-2084	अनुकूल
गुरु	चन्द्र	03-11-2084	05-03-2086	अनुकूल
गुरु	मंगल	05-03-2086	09-02-2087	अनुकूल
गुरु	राहु	09-02-2087	05-07-2089	अनुकूल

गुरू कें विविध घरों सें ट्रान्झीट या पहलू का विचार करतें हुए, निचें दियें काल घर निर्माण योग्य पायें गये है।

काल प्रारंभ	काल के अन्त समय	छान-बीन
23-04-2023	01-05-2024	अनुकूल
16-05-2025	18-10-2025	अनुकूल
06-12-2025	02-06-2026	अनुकूल
27-11-2027	28-02-2028	अनुकूल
25-07-2028	26-12-2028	अनुकूल
30-03-2029	25-08-2029	अनुकूल
18-02-2031	14-06-2031	उचित
16-10-2031	05-03-2032	उचित
13-08-2032	23-10-2032	उचित
19-03-2033	28-03-2034	अनुकूल
07-04-2035	15-04-2036	अनुकूल
11-09-2036	17-11-2036	अनुकूल
27-04-2037	16-09-2037	अनुकूल
18-01-2038	11-05-2038	अनुकूल
05-11-2039	06-04-2040	अनुकूल
30-06-2040	03-12-2040	अनुकूल
07-05-2041	31-07-2041	अनुकूल
28-01-2043	30-07-2043	उचित
12-09-2043	16-02-2044	उचित
03-03-2045	13-03-2046	अनुकूल
23-03-2047	18-08-2047	अनुकूल
12-10-2047	28-03-2048	अनुकूल
14-08-2048	28-12-2048	अनुकूल
04-04-2049	27-08-2049	अनुकूल
09-03-2050	02-04-2050	अनुकूल
17-10-2051	15-11-2052	अनुकूल
11-01-2055	30-01-2056	उचित
14-02-2057	24-02-2058	अनुकूल
04-03-2059	16-07-2059	अनुकूल
26-11-2059	04-03-2060	अनुकूल
23-07-2060	09-08-2061	अनुकूल
02-10-2063	31-10-2064	अनुकूल
26-12-2066	15-01-2068	उचित
29-01-2069	07-02-2070	अनुकूल
23-06-2070	15-10-2070	अनुकूल
10-02-2071	24-06-2071	अनुकूल
06-07-2072	24-07-2073	अनुकूल
17-09-2075	16-10-2076	अनुकूल
11-12-2078	30-12-2079	उचित
13-01-2081	02-06-2081	अनुकूल
31-08-2081	10-01-2082	अनुकूल
31-05-2082	13-12-2082	अनुकूल
26-12-2082	07-06-2083	अनुकूल

20-06-2084	09-07-2085	अनुकूल

अष्टकवर्ग

अष्टकवर्गा पध्दति भारतीय ज्योतिष का भविष्यवाणि रीति है जो गृहों की अवस्थिति से सम्बधित अंको के प्रयोग का उपयोग करता है । अष्टकवर्गा का अर्थ है अष्टगुण श्रेणीकरण । यह राहु और केतु का अवरोद करके, लग्न को मिलाकर गृहों को अष्टगुण के बारे में वर्णित करता है । गृहों की शक्ति को मापने के लिए कुछ स्थिर नियमों का पालन किया गय है । एक गृह की शक्ति और उसके प्रभाव की तीव्रता, उससे सम्बधित अन्य गृहों और लग्न की स्थिति पर आधारित है । हर गृह के लिए आठ पूर्ण अंग दिया जाता है । गृहों का ०-८ अंग के आधार पर बदलता हुआ शक्ति होगा ।

	चं	र	बु	शु	मं	गु	श	सभी मिलाकार
मेष	2	4*	4*	3	3	6	3	25
वृषभ	4	5	4	4*	3	4	3	27
मिथुन	3	5	5	7	4	4	4	32
कर्क	3	4	4	4	3*	4	3	25
सिंह	6*	3	5	3	4	5	1	27
कन्या	4	2	6	5	3	5	2*	27
तुला	3	6	3	3	3	3	3	24
वृशचिक	6	2	1	6	1	4	4	24
धनु	3	5	6	6	4	5	4	33
मकर	7	5	6	3	5	6	6	38
कुंम्भ	6	4	3	3	3	7*	3	29
मीन	2	3	7	5	3	3	3	26
	49	48	54	52	39	56	39	337

* - गृहों का स्थान.
लग्न मीन में है ।

चन्द्र का अष्टकवर्गा

चन्द्र के अष्टकवर्गा में छः बिन्धु है जो आपको व्यक्त और संतुलित मन के अमूल्य वरदान से अनुग्रहित होगा । आपके मन की स्थिरता और शुद्व विचार उच्च आदर्श से शिक्षित करेगा । लोग आपके उपदेश और बुद्वि प्राप्त करने के लिए समीप आएगो और आपके निर्देशों से लाभ पाएगों ।

सूर्य का अष्टकवर्गा

क्योंकि आपने अपने लाभो को मज़बूत करने के लिए निशिचय किया है ऐसा भी परिस्थिति होगा जब यह सब नष्ट हो जाएगा । सूर्य के अष्टकवर्ग में चार बिन्धु है जो कुटिल सम्पन्ति को सूचित करता है । लेकिन आप अन्य क्षेत्रों में संतोष से अनुग्रहित होगा ।

बुध गृह का अष्टकवर्गा

बुध के अष्टकवर्ग में उपस्थित चार बिन्धु उधोग और रोजगारी के लिए उचित नहीं है । यह एक सूचना होता हुए भी आप हर अवसर पर अच्छी तरह काम करेगें अपने स्थायी पद का मज़बूत करके प्रतिकूल गृह उपस्थिति को शान्त करेगें । उधोग से सम्बधित नष्टों को भोखने के लिए मानासिक शक्ति को उत्पन्न करना चाहिए ।

शुक्र का अष्टकवर्गा

आपका एक सन्तुलित जीवन होगा । अत्यधिक दुख के साथ सुख भी प्राप्त होगा । यह शुक्र अष्टकवर्ग में उपस्थित चार बिन्धुओं के कारण है । आपको सुख और दुख तुल्य रुप से अनुभव करने का भाग्य है ।

मंगल गृह का अष्टकवर्गा

मंगल के अष्टकवर्ग में उपस्थित तीन बिन्धु यह सूचित करता है कि आपको अपने प्रिय लोगें से दूर रहना पडेगा । यह आपके विदेशी उधोग के कारण होगा । आप इस वियोग को पूर्ण रुप से आनन्द नहीं कर साकेगो फिर भी आपको यह सहना पड़ेगा ।

गुरु का अष्टकवर्गा

आपके जन्मकुण्डली के गुरु अष्टकवर्ग में असाधरण से उपस्थित सात बिन्धु आपको सोना और भाग्य से अनुग्रहित करेगा । खुशी और धन ज्यादातर समय साथ नहीं मिलेगा लेकिन आपके लिए यह आपके लिए गैरमामूली होगा । यह एक आशचर्य की बात है ।

शनि गृह का अष्टकवर्गा

जीवन में कुछ समय ऐसा होगा जब आपको कारावास का अवसर अधिक होगा । शनि आष्ठगवर्ग में उपस्थित दो बिन्धुओं के कारण अधिकारियों से मिलते जुलते समय विशिष्ट ध्यान रखना चाहिए । आपको अक्सर बीमारों का सामना करना पड़ेगा और स्वास्थ्य सम्बधित संरक्षण पर ध्यान रखना चाहिए और औधोगिक दस्तावेजो को नवीनतम रखना चाहिए ।

सर्वअष्टकवर्गा भविष्यवाणी

आपके जन्मकुण्डली में सबसे अधिक बिन्धु वृशचिक राशी से कुंभ राशी तक है । प्रांरभिक जीवन में जो कुछ हुआ हो उसको ध्यान में रखे बिना बुढ़ापे में आपको अनेक पुरस्कार हासिल होगा गृहों का षडयन्त्र आपको आर्थिक और स्वास्थ्य खिचाव से मोचित करता है और सेवा निवृत्ति के बाद शन्तिपूर्ण जीवन प्रदान करेगा ।

गुरु शुक्र,बुध द्वारा धारण किए राशीो में उपस्थित आकार से सदृश के अनुसार आपका भाग्य बहुत अच्छा होगा । आपका शैक्षिक अभिलाषा आनन्दमय होगा और आपको ऊँचेपढ़ाई के लिए स्थान प्राप्त होगा । आपको उधोग के क्षेत्र में धन, सम्पत्ति से प्रसिद्वि की ओर ले जाएगा । व्यक्तिगत जीवन में आपको आदर्श युक्त जीवन साथी प्राप्त होगा और वैवाहिक जीवन आनन्दमय होगा । आपके सन्तानों के साथ जीवन अनुग्रहित होगा । यह आपके जीवन का सबसे अनुग्रहित समय होगा ।

आपके लिए यह विशिष्ट समय २९ , २७ और २५ उम्र में होगा ।

With best wishes : Dr. Ramesh Thangavel, PhD
Website: aimlastrology.in , Ph: +919632688400 Telegram: @aimlastrology

[Ref:14.0 S Hin-05D-8471-D86D-3690]

Note: This report is based on the data provided by you and the best possible research support we have received so far. We do not assume any responsibility for the accuracy or the effect of any decision that may be taken on the basis of this report.